दैनिक जयन्त
स्थापित : 1979
संस्थापक
स्व0 श्री नरेन्द्र उनियाल
वर्ष-45, अंक 20
कोटद्वार मंगलवार
9 मई 2023, पृष्ठ-8

गढ़वाल जनपद का प्रथम दैनिक

जयन्त

निर्भीक-निष्पक्ष-जनसरोकार

खबर बड़ी होती है, अखबार नहीं
दैनिक जयन्त
www.dainikjayantnews.com

कोटद्वार एवं गैरसैंण से प्रकाशित डाक पंजीयन यू.ए./पी.ए.ओ.07-2021-23 फोन नं0 01382-222383, मो0 नं0 8384897348, 9412081969 e-mail : dainikjayant@rediffmail.com, nagendra.uniyal@gmail.com मूल्य-2 रुपये

10 फीट बर्फ से ढका हेमकुंड साहिब, इस बार बर्फीली गलियों से गुजरेंगे यात्री

जोशीमठ(चमोली)। मौसम ने साथ नहीं दिया तो इस बार हेमकुंड साहिब की यात्रा चुनौतीपूर्ण रहेगी। आगामी 20 मई को हेमकुंड साहिब के कपाट खुलने हैं लेकिन अभी तक यहां करीब 10 फीट तक बर्फ जमी है। साथ ही आस्था पथ भी बर्फ से ढक गया है।

हालांकि सेना के जवान और हेमकुंड साहिब ट्रस्ट के सेवादार आस्था पथ से बर्फ हटाकर रास्ता बनाने में जुटे हुए हैं लेकिन लगातार हो रही बर्फबारी से रास्ता बनाने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

15225 फीट की ऊंचाई पर स्थित हेमकुंड साहिब अभी बर्फ से लकदक है। हेमकुंड साहिब यात्रा मार्ग पर सेना के जवान 20 अप्रैल से बर्फ हटाकर रास्ता बनाने में जुटे हुए हैं लेकिन लगातार हो रही बारिश और बर्फबारी से जवानों को भारी दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं।

जिन जगहों से बर्फ हटाकर रास्ता बनाया गया है वहां फिर से बर्फ पड़ने से रास्ता बंद हो रहा है। ऐसे में जवानों और सेवादारों को दोबारा काम करना पड़ रहा है।

पतरामपुर में गुलदार की धमक से दहशत

काशीपुर। फजलपुर के जंगल में गुलदार ने भेड़ को अपना निवाला बना लिया। वहीं, पतरामपुर क्षेत्र में गुलदार की धमक से लोगों में दहशत है। इधर, रेंजर ने मौके पर पहुंचकर ट्रैप कैमरे और पिंजरा लगाकर गुलदार को पकड़ने का भरोसा दिलाया है।

सोमवार को ग्राम पतरामपुर निवासी बलुआ फजलपुर के जंगल में अपनी भेड़ों को चरा रहा था। इसी बीच गुलदार उसकी भेड़ उठा ले गया। बलुआ के शोर मचाने पर ग्रामीणों ने लाठी–डंडों के साथ गुलदार का पीछा किया। लोगों को अपनी ओर आता देख गुलदार भेड़ को छोड़कर जंगल में भाग गया।

आईएएफ का एमआईजी–21 विमान क्रैश होकर मकान पर गिरा

हनुमानगढ़ (एजेंसी)। राजस्थान के हनुमानगढ़ में वायु सेना का मिग–21 क्रैश हो गया है। जानकारी के अनुसार, उड़ान भरने के 15 मिनट बाद ही तकनीकि खराबी के बाद पायलट ने विमान पर नियंत्रण खो दिया था। हादसे से पहले दोनों पायलट ने खुद को विमान से अलग कर लिया था। हालांकि विमान के एक रिहायशी इलाके में गिरने से इसकी चपेट में आने से 4 ग्रामीण की मौत की खबर सामने आई है। वायुसेना ने पूरे मामले की जांच के आदेश दिए हैं। इससे पहले जनवरी में राजस्थान के भरतपुर में प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान भारतीय वायु सेना के दो लड़ाकू जेट एक सुखोई एसयू –30 और एक मिराज 2000 के दुर्घटनाग्रस्त होने सेस पायलट की जान चली गई थी।

गृह मंत्री ने दिग्विजय–कमलनाथ के लिए खरीदे द केरल स्टोरी के टिकट

भोपाल (एजेंसी)। देश भर में 'द केरल स्टोरीङ फिल्म पर हो रही राजनीति के बीच मध्यप्रदेश के गृह मंत्री डॉ नरोत्तम मिश्रा ने कांग्रेस के दो वरिष्ठ नेताओं पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और दिग्विजय सिंह के लिए इस फिल्म के दो टिकट खरीदे हैं। डॉ मिश्रा ने संवाददाताओं से चर्चा के दौरान कहा कि उन्होंने कमलनाथ और सिंह के लिए इस फिल्म के दो टिकट खरीदे हैं।

जिन्हें वे इन दोनों नेताओं को भेजने वाले हैं।

कक्षा11 व 12 के छात्र–छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु आवश्यक प्रमाण–पत्र विद्यालय में होंगे उपलब्ध, आदेश जारी

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर शासन द्वारा दिशा निर्देश जारी किए गए हैं कि राज्य के समस्त विद्यालयों में कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभाग किये जाने की आवश्यकता के दृष्टिगत स्थायी निवास जाति एवं आय तथा अन्य आवश्यक प्रमाण–पत्र विद्यालय में ही उपलब्ध कराये जाएं।

इस संबंध में सचिव शैलेश बगोली ने प्रदेश के सभी जिलाधिकारियों को दिशा निर्देश जारी करते हुए कहा हैं कि छात्रों को आवश्यक प्रमाण–पत्र की आवश्यकता एवं इन प्रमाण–पत्रों को प्राप्त करने में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के दृष्टिगत राज्य के समस्त विद्यालयों में अपणों स्कूल, अपणू प्रमाण नामक पहल के तहत कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं को स्थायी निवास, जाति एवं आय तथा अन्य आवश्यक प्रमाण–पत्र विद्यालय स्तर पर ही उपलब्ध कराये जाने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने आदेश जारी किये हैं कि जनपद स्तर पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में मुख्य शिक्षा अधिकारी को सम्मिलित करते हुए समिति का गठन किया जाय। समिति द्वारा जनपद स्तर पर कक्षा 11 एवं 12 में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की संख्या का आकलन किया जायेगा। तहसील स्तर पर उपजिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति से विद्यालय में भ्रमण करने वाली टीमों (पटवारी / लेखपाल / कानूनगो एवं सीएससी के डाटा एण्ट्री ऑपरेटर) का तिथिवार रोस्टर तैयार करवाया जायेगा। निवास स्थान, चरित्र, आय एवं पर्वतीय प्रमाण–पत्र एवं अन्य प्रमाण पत्र निर्गत किये जाने की प्रक्रिया हेतु टाइम फ्रेम का निर्धारण करते हुए कार्ययोजना तैयार की जायेगी। जनपद स्तर पर उक्त कार्यक्रम का साप्ताहिक अनुश्रवण एवं निगरानी की जायेगी।

तहसील स्तर पर उप जिलाधिकारी की अध्यक्षता में खण्ड शिक्षा अधिकारियों को सम्मिलित करते हुए समिति का गठन किया जाय। समिति द्वारा तैयार रोस्टर की सूचना से सम्बन्धित विद्यालयों को अवगत कराने हेतु व्यापक प्रचार–प्रसार किया जायेगा। प्रमाण–पत्रों हेतु आवश्यक दस्तावेजों की सूचना प्रधानाचार्यो, छात्र–छात्राओं, अभिभावकों तथा स्थानीय जनप्रतिनिधियों को उपलब्ध करायी जायेगी। तहसील स्तर पर इस कार्यक्रम का दैनिक अनुश्रवण एवं निगरानी की जायेगी। कार्यवाही के पश्चात तहसीलदार स्तर से दैनिक निगरानी के अंतर्गत तिथिवार रोस्टर के अनुसार पटवारी / लेखपाल / कानूनगो एवं सीएससी के डाटा एण्ट्री ऑपरेटर की टीम द्वारा सम्बन्धित विद्यालय का भ्रमण किया जायेगा तथा प्रधानाचार्य से प्रभावी समन्वय स्थापित करते हुए प्रमाण–पत्र हेतु आवश्यक शुल्क / दस्तावेज, ऑनलाईन / ऑफलाईन माध्यम से तहसीलदार / उपजिलाधिकारी कार्यालयों को प्रेषित किये जायेंगे।

आवश्यक शुल्क / दस्तावेज प्राप्त होने के उपरान्त तहसीलदार/ उपजिलाधिकारी कार्यालय द्वारा प्रमाण–पत्र निर्गत करते हुए उक्त प्रमाण–पत्र, छात्र–छात्राओं को वितरित किये जाने हेतु एक सप्ताह के भीतर अनिवार्य रूप से सम्बन्धित विद्यालय के प्रधानाचार्य को उपलब्ध करा दिया जायेगा। जिला स्तरीय समिति द्वारा समस्त उप जिलाधिकारी, तहसीलदार तथा खण्ड शिक्षा अधिकारियों से समन्वय स्थापित करते हुए सम्पूर्ण कार्यवाही की प्रभावी मॉनिटरिंग की जायेगी एवं किसी प्रकार की समस्या / कठिनाई उत्पन्न होने पर समिति के स्तर से सम्बन्धित को तात्कालिकता के आधार पर यथावश्यक दिशा–निर्देश निर्गत किये जायेंगे।यह समस्त कार्यवाही अधिकतम दो माह के भीतर सम्पादित कराते हुए, प्रत्येक जनपद की साप्ताहिक सूचना, जिलाधिकारी द्वारा शासन को सलग्न प्रारूपानुसार अनिवार्य रूप से संप्रेषित कराया जाना सुनिश्चित करें।

अतीक की पत्नी शाइस्ता माफिया घोषित

प्रयागराज । मारे जा चुके माफिया अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन को भी माफिया अपराधी घोषित कर दिया गया है। उसके लिए लिखा–पढ़ी में भी ऐसे शब्द इस्तेमाल किए जा रहे हैं।बीती दो मई को धूमनगंज थाने में अतिन जफर के खिलाफ लिखी गई एफआईआर में शाइस्ता परवीन के लिए माफिया अपराधी शब्द लिखा गया है। इस पर डीसीपी नगर दीपक ने कहा कि अभी माफिया नहीं घोषित किया गया है। उमेश पाल और दो सरकारी गनर की हत्या में शाइस्ता 50 हजार की इनामी अभियुक्त है। उसकी तलाश चल रही है।शाइस्ता पर उमेश पाल हत्याकांड में साजिश रचने और शूटरों को पनाह देने के आरोप लगे और वह फरार हो गईं। पुलिस ने शाइस्ता को गिरफ्तार करने के लिए 50 हजार का इनाम घोषित किया है।उमेश पाल हत्याकांड में माफिया के बेटे असद समेत उसके तमाम गुर्गों का नाम सामने आया। अतीक की बेगम शाइस्ता परवीन पर हत्याकांड की साजिश रचने का आरोप लगा। 13 अप्रैल को यूपी एसटीएफ ने असद और शूटर गुलाम को झांसी में मार गिराया। अगले दो दिन बाद 15 अप्रैल को प्रयागराज में कॉल्विन अस्पताल के पास तीन शूटरों ने पुलिस की कस्टडी में रहे माफिया अतीक अहमद और उसके भाई अशरफ की गोली मारकर हत्या कर दी थी।

लोकायुक्त से जुड़ी याचिका पर 24 घंटे में जवाब प्रस्तुत करें: हाईकोर्ट

नैनीताल। हाईकोर्ट ने प्रदेश में लोकायुक्त की नियुक्ति और लोकायुक्त संस्थान को सुचारू रूप से संचालित किए जाने से जुड़ी याचिका पर सोमवार को सुनवाई की। मुख्य न्यायाधीश विपिन सांघी और न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की खंडपीठ ने राज्य सरकार से कल मंगलवार तक जवाब पेश करने को कहा है। मामले की अगली सुनवाई के लिए 27 जून की तिथि नियत की है। पिछली तिथि को अदालत ने सरकार से शपथपत्र के माध्यम से यह बताने को कहा था कि लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए अभी तक क्या किया और जब से संस्थान बना है तब से 31 मार्च 2023 तक इस पर कितना खर्च हुआ, लेकिन सरकार ने अभी तक इस पर जवाब पेश नहीं किया। जनहित याचिका में कहा गया है कि राज्य सरकार ने अभी तक लोकायुक्त की नियुक्ति नहीं की। संस्थान के नाम पर वार्षिक 2 से 3 करोड़ रुपये खर्च हो रहे हैं। उत्तराखंड में लगातार घोटाले सामने आ रहे हैं। लोकायुक्त न होने के कारण सुनवाई नहीं हो रही। हर मामला हाईकोर्ट लाना पड़ रहा है। विधानसभा चुनावों में भी

राजनीतिक दलों ने प्रदेश में लोकायुक्त नियुक्ति की वादा किया था, पर चुनाव संपन्न होने के बाद इस दिशा में कोई पहल नहीं हो पाई।

याचिका में यह भी कहा गया है कि राज्य की सभी जांच एजेंसी सरकार के अधीन हैं। जिसका पूरा नियंत्रण राज्य के राजनीतिक नेतृत्व के हाथों में है। वर्तमान में उत्तराखंड राज्य में कोई भी ऐसी जांच एजेंसी नहीं है, जिसके पास यह अधिकार हो कि वह बिना शासन की पूर्वानुमति के किसी भी राजपत्रित अधिकारियों के विरुद्ध भ्रष्टाचार का मुकदमा पंजीकृत करवा सके। विजिलेंस भी राज्य पुलिस का ही हिस्सा है, जिसका सम्पूर्ण नियंत्रण पुलिस मुख्यालय, सतर्कता विभाग या मुख्यमंत्री कार्यालय के पास ही रहता है। इसलिए प्रदेश में लोकायुक्त की तैनाती होना जरूरी है।

कर्नाटक में चुनाव प्रचार से नदारद रहे अरविंद केजरीवाल

बेंगलुरू (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, जिनकी आम आदमी पार्टी (आप) कर्नाटक विधानसभा चुनाव में जीत के सपने देख रही है, प्रचार से नदारद रहे। आप कैडर को उम्मीद है कि आखिरी दिन वह कर्नाटक पहुंचेंगे। सोमवार को शाम 5 बजे जन प्रचार खत्म हो जाएगा।

पार्टी ने राज्य में एक अच्छा माहौल बनाया हुआ है और कर्नाटक में बेंगलुरु और शहरी केंद्रों में कुछ सीटें जीतने का लक्ष्य भी रखा है। आप के समर्थकों ने यहां तक भविष्यवाणी कर दी कि आप बीजेपी के लिए एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी साबित होगी।

केजरीवाल पंजाब में पार्टी को स्थापित करने में कामयाब रहे। ऐसे में पार्टी को कर्नाटक में एक आक्रामक चुनाव अभियान चलाने की उम्मीद थी।

अरविंद केजरीवाल की अनुपस्थिति ने कार्यकर्ताओं को निराश किया है। आप नेताओं ने आरोप लगाया कि भाजपा की प्रतिशोध की राजनीति ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को कर्नाटक में व्यापक प्रचार करने से रोका और मजबूर किया।

आप बेंगलुरु शहर के कार्यकारी अध्यक्ष और बेंगलुरु में सीवी रमननगर सीट से उम्मीदवार मोहन दासारी ने कहा कि आप के खिलाफ बीजेपी की प्रतिशोध की राजनीति ने अरविंद केजरीवाल को कर्नाटक चुनाव प्रचार में प्रवेश करने से रोक दिया है।

'खुद को जागीरदार समझती है बीआरएस: प्रियंका

सरकार पर लगाया किसानों–युवाओं की उपेक्षा करने का आरोप

हैदराबाद , एजेंसी। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी ने सोमवार को भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) पर किसानों और युवाओं की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया की बीआरएस सरकार ने राज्य को अपनी जागीर और खुद को जागीरदार समझ लिया है। वह यहां पार्टी की 'युवा संघर्ष रैली' को संबोधित कर रही थीं। इस दौरान उन्होंने कहा कि जिन उम्मीदों और सपनों के साथ तेलंगाना की स्थापना हुई थी वो पूरे नहीं हो सके।

छह महीने बाद तेलंगाना में विधानसभा चुनाव होने जा रहे हैं। प्रियंका गांधी ने प्रदेश की जनता से आह्वान किया कि वो एक ऐसी सरकार को चुने जो उनके हित में काम करे। उन्होंने इस मौके पर एक 'युवा संकल्प' भी जारी किया जिसमें बेरोजगारी भत्ते समेत युवाओं के लिए कई वादे किए गए हैं। प्रियंका ने आगे कहा , जब सैकड़ों युवाओं ने तेलंगाना के लिए कुर्बानी दी तो मेरी मां सोनिया गांधी ने गहराई से समझा कि यहां के लोग क्या चाहते हैं। अगर सोनिया गांधी उस वक्त सत्ता और अपनी पार्टी एवं राजनीति के बारे में सोचतीं तो शायद यह निर्णय नहीं ले पातीं। लेकिन सोनिया जी ने आपके बारे में सोचा, तभी यह निर्णय लिया गया।

कांग्रेस महासचिव का कहना था, "सबको उम्मीद थी कि यह एक मजबूत प्रदेश बनेगा। लेकिन अफसोस की बात है कि जो आपका सपना था और जो आपकी इच्छा थी वो अभी तक पूरी नहीं हुई...आपको एक ऐसी सरकार मिली जिसने तेलंगाना के सपने को तोड़ा है।" उन्होंने आरोप लगाया, "आज परिस्थितियां ये हैं कि सत्ताधारी लोगों को ही सारा पैसा मिल रहा है। यहां युवाओं को नौकरी नहीं मिल रही है, बल्कि सत्ताधारी लोगों के करीबियों को मिल रही हैं। बीआरएस सरकार एक ऐसा शासन चला रही है जिसमें आपके सपने साकार नहीं हो पा रहे हैं।"प्रियंका गांधी ने बीआरएस और उसके नेतृत्व पर निशाना साधते हुए कहा, "शायद उनको (बीआरएस) लगता है कि यह प्रदेश उनकी नयी जागीर है और वो इसके जागीरदार हैं।" कांग्रेस महासचिव ने बीआरएस सरकार पर युवाओं की अनदेखी करने का आरोप लगाया और कहा, "सरकार में दो लाख नौकरियां खाली हैं, लेकिन वो भरी नहीं गयीं।" उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी के तेलंगाना के प्रति योगदान को याद किया और लोगों का आह्वान किया कि वो कांग्रेस का समर्थन करें ताकि उनके सपनों को पूरा करने के लिए काम हो सके।

मंत्री सतपाल महाराज ने नैनीताल जनपद को दिया 24 करोड़ 78 लाख 62 हजार की 20 विकास योजनाओं की सौगात

हल्द्वानी। प्रदेश के लोक निर्माण, पर्यटन,सिंचाई, लघु सिंचाई, पंचायती राज, ग्रामीण निर्माण, धर्मस्व, संस्कृति, जलागम एवं भारत–नेपाल उत्तराखण्ड नदी परियोजनाएं मंत्री सतपाल महाराज ने एक कार्यक्रम के दौरान 24 करोड़ 78 लाख 62 हजार की 20 योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया।

प्रदेश के लोक निर्माण, पर्यटन,सिंचाई, लघु सिंचाई, पंचायती राज, ग्रामीण निर्माण, धर्मस्व, संस्कृति, जलागम एवं भारत–नेपाल उत्तराखण्ड नदी परियोजनाएं मंत्री सतपाल महाराज ने सोमवार को एक कार्यक्रम के दौरान 24 करोड़ 78 लाख 62 हजार की 20 विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास करते हुये कहा कि इन योजनाओं के पूर्ण होने पर क्षेत्र का सर्वागींण विकास होगा।

महाराज ने 16 करोड 69 लाख 17 हजार की धनराशि की 10 योजनाओं का लोकार्पण एवं 7 करोड, 90 लाख, 12 हजार की धनराशि की 6 योजनाओं का किया शिलान्यास किया। इसके अन्तर्गत 2 करोड 37 लाख 81 हजार की लागत से रामगढ के अन्तर्गत खुटानी–भवाली–धानाचुली–ओखलकांडा–खनस्यू–पतलोट मोटर मार्ग से मल्ला सूपी रूसानी दीगड कपूवा लोधिया तक मोटर मार्ग का लोकार्पण, 2 करोड 83 लाख 93 हजार की लागत से छीडाखान से हाईस्कूल तल्ली पोखरी तक मार्ग निर्माण, 7 करोड 50 लाख की लागत से पर्यटन आवास गृह सूखाताल, तल्लीताल, नौकुचियाताल एवं मुक्तेश्वर का उच्चीकरण, 81 लाख 88 हजार की लागत से पर्यटन आवास गृह काठगोदाम का नवीनीकरण, 1 करोड 65 लाख 75 हजार की लागत से विकास खण्ड बेतालघाट के ग्राम तोराड में लिफ्ट सिचाई योजना, 12 लाख की लागत से ब्लाक रामनगर में हिम्मतपुर पंचायत भवन का निर्माण,12 लाख की लागत से रामनगर में गांधीनगर पंचायत भवन का निर्माण, 20 लाख की लागत से हल्द्वानी के पंचायत भवन का निर्माण, लघु सिचाई विभाग की 50 लाख 75 हजार की लागत से 6 सोलर लिफ्ट तथा 74 लाख 38 हजार की लागत से 23 रिचार्ज साफ्टों के निर्माण की योजनाओं का लोकार्पण के अलावा 7 करोड, 90 लाख, 12 हजार की धनराशि से 6 योजनाओं का शिलान्यास भी किया। जिसमें 68 लाख 2 हजार की धनराशि से हॉलीडे कैम्प ढिकुली का उच्चीकरण, 62 लाख 42 हजार की लागत से भटेलिया में पेट्रोल पम्प का निर्माण, 55 लाख 12 हजार की लागत से गरमपानी में पेट्रोल पम्प निर्माण, 1 करोड 77 लाख 99 हजार की लागत से रीखाकोट के तोक स्याली गौलानदी में 45 मी स्पान पैदल झूला पुल निर्माण, थपलिया मेहरागांव क्षतिग्रस्त मोटर मार्ग के सुधारीकरण तथा 2 करोड 63 लाख 7 हजार की लागत से रामनगर कोसी बैराज के अपस्ट्रीम में दांए पार्श्व की कोसी नदी के बाढ सुरक्षात्मक कार्य का शिलान्यास करने के अलावा 1 करोड़ 63 लाख 50 हजार की लागत की 4 सड़क योजनाओं के सुधारी करण के कार्यो का भी शिलान्यास किया किया।

लोकार्पण एवं शिलान्यास के अवसर पर कैबिनेट मंत्री महाराज ने कहा कि पंचायती राज विभाग को सशक्त करने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा राज्य को 242 करोड की धनराशि स्वीकृत हो चुकी है। उन्होंने कहा इससे हमारे उत्तराखण्ड की पंचायतें मजूबत होंगी वही हमारा राज्य भी मजबूत होगा। उन्होंने कहा उत्तराखण्ड में चार धाम यात्रा सुगमता के साथ चल रही है, अभी वर्तमान में चारधाम में बर्फवारी हो रही है जैसे ही बर्फवारी कम होगी श्रद्वालुओं को सूचित कर दिया जायेगा। उन्होंने यात्रियों से कहा कि वह मौसम विभाग की जानकारी के तहत ही अपनी यात्रा प्रारम्भ करें। उन्होंने कहा कि विकास योजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण होने से जनपद के विकास को एक गति प्रदान होगी।कार्यक्रम में विधायक एवं पूर्व मंत्री बंशीधर भगत, विधायक सरिता आर्या, रामसिंह कैडा, भाजपा जिलाध्यक्ष प्रताप बिष्ट, रंजन बर्गली, प्रताप बोरा, नीतिन राणा, हरीश आर्य, भावना साह, कार्तिक हबीला, मोहन पाठक के साथ ही जिलाधिकारी धीराज सिंह गर्ब्याल, एसएसपी पंकज भटट, मुख्य विकास अधिकारी डा0 संदीप तिवारी, प्रबन्ध निदेशक केएमवीएम विनीत तोमर, महाप्रबन्धक एपी बाजपेयी, अपर जिलाधिकारी अशोक जोशी, उपजिलाधिकारी मनीष कुमार, अधिशासी अभियंता लोनिवि अशोक चौधरी, सिंचाई केएस बिष्ट, अपर मुख्य चिकित्साधिकारी रश्मि पंत, प्रोबेशन अधिकारी व्योमा जैन के साथ ही विभागीय अधिकारी एवं

लंबित राजस्व वादों और जन शिकायतों का तेजी से निस्तारण करें : डीएम

डीएम ने ली राजस्व विभाग की मासिक समीक्षा बैठक

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : जिलाधिकारी हिमांशु खुराना ने सोमवार को राजस्व स्टाफ की मासिक समीक्षा बैठक ली। उन्होंने निर्देशित किया कि लंबित राजस्व वादों, मुख्य एवं विविध देयकों की वसूली, आपराधिक मामलों, सेवानिवृत्त कार्मिकों के पेंशन प्रकरणों एवं जन शिकायतों के निस्तारण में तेजी लाई जाए। इस दौरान वाणिज्य कर, स्टांप तथा निबंधन, आबकारी, परिवहन कर, वन, खनन, भू–राजस्व, रेवन्यू पुलिस, फौजदारी, शमन आदि मामलों के साथ-साथ एसडीआरएफ के अन्तर्गत संचालित कार्यों की समीक्षा भी की गई। जिलाधिकारी ने तहसील स्तरों पर दायर एवं निस्तारित वाद की समीक्षा करते हुए 6 माह से अधिक लम्बित वादों का प्राथमिकता पर निस्तारित करने और तहसील स्तर पर नियमित स्टॉफ बैठक आयोजित करने के निर्देश दिए। तहसील थराली के अन्तर्गत अधिकांश आपराधिक मामलों को देखते हुए एसडीएम को इसके कारणों की जांच करने को कहा। जिलाधिकारी ने कहा कि सेवानिवृत्त हुए किसी भी कर्मचारी के पेंशन प्रकरण लंबित न रहे। पेंशन प्रकरण भेजने से पूर्व कोषागार से परीक्षण कराया जाए। ताकि अनावश्यक आपत्ति में पेंशन प्रकरण लंबित न रहे। इस दौरान तहसील स्तर पर आवासीय भवनों के निर्माण, नगर पालिका के अन्तर्गत सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट की अद्यतन स्थिति एवं तहसील स्तरीय प्राप्त शिकायत एवं अन्य समस्याओं के निस्तारण के निर्देश भी दिए गए। इस दौरान बताया गया कि जिले में कुल 1263 राजस्व ग्राम में से नियमित पुलिस के अन्तर्गत 771 तथा राजस्व पुलिस के अन्तर्गत 492 ग्राम है। जिसमें 331 ग्राम प्रहरी कार्यरत है। राजस्व क्षेत्रों में इस वर्ष घटित 8 एवं पूर्व में लंबित 6 अपराधों सहित कुल 14 मामले दर्ज है। जिसमें से 7 नियमित पुलिस को हस्तांतरित, दो में अरोप पत्र तथा 5 में प्रक्रिया चल रही है। नागरिक पुलिस क्षेत्रान्तर्गत हत्या, डकैती, बलात्कार आदि मामलों में 52 अपराध दर्ज हुए है। फौजदार के 104 मामलों में से 22 निस्तारित हो चुके है।

छात्र प्रकृति एवं पर्यावरण के मुद्दों पर गंभीरता से विचार करें

जयन्त प्रतिनिधि। ऋषिकेश : श्री देव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय, ऋषिकेश परिसर में जी-20 के अंतर्गत वन्य जीव संरक्षण विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन जंतु विज्ञान विभाग एवं राजाजी टाइगर रिजर्व के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। इस दौरान आयोजित भाषण प्रतियोगिता में राधिका नवानी ने प्रथम, मानसी शुक्ला ने द्वितीय एवं श्वेता पेटवाल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में आंचल गुप्ता प्रथम, प्रतिभा वर्मा द्वितीय एवं सुहासिनी अवस्थी तृतीय स्थान पर रही। कार्यशाला का शुभारंभ परिसर के प्राचार्य प्रो. एमएस रावत, मुख्य वक्ता डॉ. कोको रोसो आईएफएस, डिप्टी डायरेक्टर जीका प्रोजेक्ट उत्तराखंड सरकार ने दीप प्रज्वलन कर किया। कार्यशाला की विषय वस्तु के बारे में कार्यक्रम समन्वयक प्रो. स्मिता बडोला ने विस्तार से जानकारी दी। प्रो. डीएम त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य वक्ता डॉ. कोको रोसो ने पीपीटी प्रेजेंटेशन के मध्यम से छात्र-छात्राओं को महत्वपूर्ण जानकारी दी। साथ ही छात्र-छात्राओं की समस्याओं का समाधान किया। वन क्षेत्राधिकारी, राजाजी टाइगर रिजर्व मदन सिंह रावत ने वन्य जीव संरक्षण की दिशा में विभाग द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। इस मौके पर प्राचार्य प्रो. एमएस रावत ने जी-20 के अंतर्गत होने वाले इस तरह के कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने छात्र-छात्राओं से अपील करते हुए कहा कि वह प्रकृति एवं पर्यावरण के मुद्दों पर गंभीरता से विचार करें। कार्यशाला में प्रो. बीडी पांडे, प्रो. हेमलता मिश्रा, प्रो. संगीता मिश्रा, प्रो. अनीता तोमर, प्रो. मुक्तिनाथ यादव, प्रो. सिराज मोहम्मद, प्रो. इंदु तिवारी, प्रो. एपी दुबे, प्रो. दीपकशर्मा, डॉ. पारुल मिश्रा, डॉ. एसके कुड़ियाल, डॉ. आरके जोशी, डॉ. कृष्णा नौटियाल सहित राजाजी टाइगर रिजर्व के वन दरोगा अनुपम रावत, दीपक कुमार, निकिता के अलावा एनसीसी कैडेट्स, छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

शिक्षा के साथ–साथ पछवादून बना नशे का हब

विकासनगर। राजधानी देहरादून के पछवादून क्षेत्र में लगातार शैक्षिक स्तर बढ़ता जा रहा है अकेले पछवा दून में सैकड़ों स्कूल कॉलेज महाविद्यालय यूनिवर्सिटी आदि स्थापित है जिसके चलते यहां नशे का कारोबार भी दिन दुगनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है ऐसा नहीं है कि पुलिस इस और कोई कार्रवाई नहीं करती आए दिन कोई ना कोई मुजरिम नशे के कारोबार में गिरफ्तार किया जा रहा है बावजूद इसके नशे के कारोबार पर अंकुश लगाना नाकाम साबित हो रहा है। पहले नशे के लिए एकमात्र साधन शराब ही था लेकिन अब केमिकल नशे का इतना प्रचलन बढ़ गया है कि रोक पाना नामुमकिन ही नहीं असंभव भी है।

अगर बात करेंगे इस केमिकल नशे की तो पछवा दून में कोड इन कफ सिरप ट्रामाडोल कैप्सूल व टेबलेट एलप्रोलाजोलाम टेबलेट की मांग लगातार बढ़ती जा रही है अकेले पछवादून में मेडिकल स्टोर कुकुरमुत्ता की तरह खुले हुए हैं जहां जीवन रक्षक दवाइयां कम और नशे का कारोबार खुलेआम किया जा रहा है। कोडिंग कब सिरप की मांग तो दिन रात बढ़ती जा रही है क्योंकि इसके पीने से दुर्गंध नहीं आती बच्चा हो या बड़ा सब का रुझान इस कप सिर्फ की ओर बढ़ता जा रहा है। मेडिकल संचालक भी इस कारोबार में भीतर तक घुस चुके हैं रोजाना छापे पड़ने के बावजूद भी इन मेडिकल स्टोर संचिका संचालकों पर कोई असर होता दिखाई नहीं पड़ रहा है क्योंकि वह इस नशे के कारोबार में दिन रात तरक्की किए जा रहे हैं। यदि बात करें इन मेडिकल संचालकों की संपत्ति की तो सरकार यदि उनकी जांच करें तो सरकार का सर्विस चकराने लगेगा लेकिन हमारा तंत्र इसे रोकने में पूरी तरह नाकामयाब है या यूं कहें कि मेडिकल संचालक उच्च अधिकारियों की जेबों का वजन बढ़ाने में लगे हुए हैं। अगर 2 दिन पुरानी बात करें तो प्रेम नगर पुलिस ने सुद्दोवाला में छापा मार कर दो मेडिकल संचालकों को 5000000 के नशीले कैप्सूल व गोलियों के साथ गिरफ्तार किया है पहले यह मेडिकल संचालक किराए की दुकान में मेडिकल चलाते थे लेकिन इस कारोबार से इन्होंने इतनी तरक्की कर ली कि खुद की ही दुकान है खरीद डाली।

हिल फाउंडेशन ग्रुप के कलाकारों की प्रस्तुतियों पर दर्शक हुए मंत्रमुग्ध

विकासनगर। हिल फाउंडेशन ग्रुप के कलाकारों ने भरतनाट्यम की शानदार प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कलाकारों ने भगवान श्रीकृष्ण और गणेश से लेकर विभिन्न देवी–देवताओं की भरत नाट्यम नृत्य के जरिये अपनी अदभुद प्रस्तुतियों देकर दर्शकों की खूब तालियां बंटोरी। द सेपियंस स्कूल हरबर्टपुर में हिल फाउंडेशन ऑफ ग्रुप की प्रस्तुतियों का शुभारंभ स्कूल की चेयरपर्सन इंदिरा रानी सपरा हिला फाउंडेशन की अध्यक्ष सोनल वर्मा व प्रधानाचार्य रश्मि गोयल मां सरस्वती के चित्र पर संयुक्त रूप से दीप जलाकर किया।

सरकारी भूमि पर अतिक्रमण के खिलाफ कार्रवाई शुरू

जयन्त प्रतिनिधि।चमोली : सरकारी भूमि पर अतिक्रमण के खिलाफ जिला प्रशासन ने कार्रवाई शुरू कर दी है। जिलाधिकारी हिमांशु खुराना ने सोमवार को सभी एसडीएम, पुलिस एवं विभागीय अधिकारियों की बैठक ली। उन्होंने निर्देशित किया कि सरकारी भूमि पर अतिक्रमण को चिन्हित करते हुए तत्काल अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। इसमें किसी भी समस्या के लिए संबधित क्षेत्र के एसडीएम एवं पुलिस से सहयोग लिया जा सकता है।जिलाधिकारी ने सभी एसडीएम को अपने क्षेत्रान्तर्गत अतिक्रमण वाले मामलों की समीक्षा करते हुए त्वरित कार्रवाई शुरू कराने के निर्देश दिए है। वन विभाग को अपने सभी डिविजनों के अन्तर्ग वन एवं वन पंचायतों क्षेत्रों, नगर निकायों को नगर क्षेत्रों और सड़क निर्माणदायी संस्थाओं को सड़कों पर सरकारी भूमि से तत्काल अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए है। साथ अन्य विभागों को भी निर्देशित किया विभागीय भूमि पर से अतिक्रमण हटाने के लिए तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करते हुए इसकी रिपोर्ट उपलब्ध करें। उन्होंने कहा कि इसकी प्रतिदिन समीक्षा भी की जाएगी। बैठक में पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र डोबाल, डीएफओ रमाकान्त तिवाडी, अपर जिलाधिकारी डा. अभिषेक त्रिपाठी, सीओ पुलिस नताशा सिंह सभी तहसीलों से उप जिलाधिकारी, पुलिस क्षेत्राधिकारी एवं विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

बुजुर्ग महिला की हत्या में फरार आरोपी को भेजा जेल

चमोली : बुजुर्ग महिला की हत्या के मामले में चमोली पुलिस ने हत्या में फरार चल रहे आरोपी(32) को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया। कोर्ट ने आरोपी को 14 दिन के न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया है। आरोपी जेठी देवी (76 वर्ष) पत्नी स्व. चन्द्र सिंह निवासी ग्राम टंगड़ी कोतवाली जोशीमठ की हत्या करके फरार हो गया था। मामले में पुलिस ने आरोपी कैलाश चंद्र डंगवाल (32)के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया था।

पुलिस अधीक्षक प्रमेंद्र डोबाल ने बताया कि कोतवाली जोशीमठ क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम टंगड़ी मल्ली में बीती 23 मार्च को आरोपी कैलाश चंद्र डंगवाल ने जेठी देवी के सिर व चेहरे पर पत्थर से हमला कर उसे गंभीर रूप से घायल कर दिया था। गंभीर रूप से घायल जेठी देवी के परिजन उनको उपचार के लिए गोपेश्वर सरकारी अस्पताल गए। यहां प्राथमिक उपचार के बाद जेठी देवी को श्रीनगर और बाद में जॉलीग्रांट अस्पताल ले जाया गया।

जॉलीग्रांट अस्पताल से डॉक्टर द्वारा उपचार के बाद उनकी वृद्धावस्था एवं गंभीर चोटों को देखते हुए 31 मार्च को डिस्चार्ज कर घर भेजा गया। परिजनों द्वारा घर वापस लाते हुए कर्णप्रयाग के पास जेठी देवी की मौत हो गई। पुलिस ने 1 अप्रैल को कोतवाली जोशीमठ में आरोपी कैलाश चन्द्र डंगवाल के खिलाफ विभिन्न धाराओं में पंजीकृत किया। (एजेंसी)

विकासनगर में अतिक्रमण हटाने पर पुलिस और व्यापारियों में नोकझोंक

विकासनगर। चारधाम यात्रा के दौरान विकासनगर बाजार में जाम की समस्या से निजात दिलाने के मद्देनजर कोतवाली पुलिस ने विकासनगर बाजार में ई–रिक्शा प्रतिबंधित करने के बाद सोमवार को नो पार्किंग जोन में वाहनों की पार्किंग और अवैध अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाया। अभियान के दौरान पुलिस ने नो पार्किंग जोन में खड़े करीब पचास वाहनों का चालान किया।

रेलवे परियोजना के खिलाफ ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

रुद्रप्रयाग : रेलवे परियोजना खांकरा में नियम विरुद्ध कार्य करने एवं रेलवे प्रोजक्ट में बाहरी लोगों को प्राथमिकता देने सहित कई मांगों लेकर खांकरा के ग्रामीणों ने धरना–प्रदर्शन शुरू कर दिया है। उन्होंने प्रशासन एवं कार्यदायी संस्था से इस संबंध में जरूरी कार्यवाही करने की मांग की है। महिला मंगल दल खांकरा के नेतृत्व में स्थानीय ग्रामीणों ऋषिकेश-कर्णप्रयाग रेलवे लाइन के पैकेज 7 खांकरा पहुंचे, जहां ग्रामीणों ने निर्माणदायी संस्था मैक्स की ओर से नियम विरुद्ध कार्य करने, बाहरी प्रदेशों के लोगों को प्राथमिकता एवं स्थानीय भूमिधर प्रभावितों को दरकिनार करने की मांगों लेकर प्रदर्शन कर धरना दिया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि कंपनी की ओर से स्थानीय लोगों के बजाय बाहरी लोगों को नौकरी में प्राथमिकता दी जा रही है। जिससे स्थानीय भूमिधर प्रभावितों में रोष बना हुआ है। कहा कि राइका खांकरा को कपंनी ने रेलवे का डंपिंग जोन बना दिया है। जिससे स्कूली नौनिहालों को पठन पाठन करने में खासी दिक्कतें उठानी पड़ रही है। कहा कि क्षेत्र में बड़े–बडे विस्फोटों से स्थानीय लोगों के भवन क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। इस संबंध में कई बार शासन प्रशासन को अवगत कराने के बावजदू भी अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हो सकी है। स्थानीय ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है।

जिलाधिकारी ने रजिस्ट्री निरस्त करने के दिए आदेश

विकासनगर। एक माह पूर्व की गई शिकायत पर जिलाधिकारी के कड़े निर्देशों के बावजूद तहसील प्रशासन की ओर कार्रवाई न किए जाने पर पीड़ति ने जिलाधिकारी के दरबार मे गुहार लगाते हुए आरोपियों के विरुद्ध कार्रवाई करने की मांग की है। साथ ही जिलाधिकारी से फर्जी तरीके से की गई उसकी जमीन की रजिस्ट्री को निरस्त करने की मांग की है। भागीराम पुत्र अमर सिंह निवासी लाखामंडल ने जिलाधिकारी को शिकायती पत्र सौंपते हुए बताया कि विगत तीन अप्रैल को भी इस आशय की शिकायत की गई है। लेकिन आज तक उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

भागीराम ने आरोप लगाया है कि उनके सहखातेदार उनकी भाभी और भतीजे ने उनके हिस्से की जमीन बिना उनकी सहमति के विकासनगर के एक व्यक्ति को बेच दी है। जिस पर उन्होंने एतराज जताया, लेकिन उनकी भाभी और भतीजा नहीं माने व उल्टा उन्हें धमकाने लगे।

पछुवादून में स्वावलंबन केंद्र का उद्घाटन

विकासनगर। भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) की ओर से महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए रेड़ापुर में स्वावलंबन कनेक्ट केंद्र (एससीके) की शुरुआत की गई।

सोमवार को विधायक मुन्ना चौहान ने केंद्र का उद्घाटन करते हुए बताया कि इस केंद्र के माध्यम से महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। विधायक ने कहा कि केंद्र खोलने का मुख्य उद्देश्य जरूरतमंद उद्यमियों को नया व्यवसाय खड़ा करने अथवा पहले से संचालित पुराने उद्यम को नए और मजबूत स्थिति में लाना है। इसके लिए उद्यमियों को 25 हजार से लेकर 10 लाख तक ऋण दिलाना भी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की आधी आबादी को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। आधी आबादी के आत्मनिर्भर होने से ही देश आत्मनिर्भर बनेगा। उन्होंने बताया कि इस केंद्र के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, उद्यम जागरूकता, कौशल विकास योजना, उद्यमी को सलाहकार सेवाएं और निरंतर परामर्श दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पछुवादून क्षेत्र में कई महिला स्वयं सहायता समूह काम कर रहे हैं, लेकिन उन्हें व्यवसाय की उचित जानकारी नहीं होती है, जिससे उनका व्यवसाय सीमित ही रहता है। इस केंद्र के माध्यम से महिलाओं को ऐसी समस्याओं से निपटने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा।

कांग्रेस कमेटी ने कर्नाटक के भाजपा प्रत्याशी के खिलाफ सहसपुर थाने में दी तहरीर

विकासनगर। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में भाजपा के एक प्रत्याशी के खिलाफ पछुवादून कांग्रेस कमेटी की ओर से सहसपुर थाने में तहरीर दी गई है। तहरीर में आरोप लगाया गया कि भाजपा प्रत्याशी कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे समेत उनके परिवार को जान से मारने की साजिश रच रहा है। तहरीर देने सहसपुर थाने में पहुंची कांग्रेस की पछुवादून अध्यक्ष लक्ष्मी कपरुवाण अग्रवाल ने कहा कि कर्नाटक के चित्तपुर से भाजपा प्रत्याशी मणिकांत राठौर ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष को परिवार सहित जान से मारने की साजिश रची है। भाजपा नेतृत्व का भी इस साजिश में शामिल है। कहा कि इस विधायक प्रत्याशी पर 40 आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। जिनमें हत्या का प्रयास, ड्रग्स और हथियार को अवैध तौर पर रखने, अन्ना भाग्य राइस का अवैध व्यापार जैसे मामले शामिल हैं। अभी तक इस प्रत्याशी को तीन मामलों में सजा हो चुकी है। एक साल जेल में भी काट चुके हैं, जबकि इन दिनों जमानत पर रिहा हैं। बताया कि प्रियांक खड़गे को धमकी देने के कारण पिछले साल नवंबर में भाजपा विधायक प्रत्याशी को गिरफ्तार भी किया गया था। कांग्रेस की पछुवादून अध्यक्ष ने आरोप लगाते हुए कहा कि भाजपा को कर्नाटक में अपनी हार दिख रही है जिसे भाजपा नेता पचा नहीं पा रहे हैं। प्रधानमंत्री से लेकर भाजपा के पदाधिकारी तक अनर्गल बयानबाजी कर कर्नाटक कि जनता का ध्यान भटकाने मे लगे हैं। लेकिन कर्नाटक कि जनता इस बार भाजपा को सबक सिखाएगी और वहां से बाहर का रास्ता दिखाएगी। इस दौरान आशीष पुंडीर, नीलम थापा, सहसपुर ब्लॉक अध्यक्ष अमित पंवार, राजेश पीटर, पूर्व जिलाध्यक्ष अध्यक्ष यामीन अंसारी, गोवेर्धन प्रसाद डोभाल, पम्मी देवी, एलम चंद मुल्तानी, रितेश जोशी, तनवीर शेख़, नितीश मौर्य, ओपी शर्मा, सुरेंद्र कुमार, जेएस धीमान आदि मौजूद रहे।

संचार सेवा बहाल करने की मांग की

विकासनगर। चकराता और रामताल गार्डन के बीच ओएफसी लाइन कटने से क्षेत्र की संचार सेवा ठप पड़ी है। कनेक्टिविटी नहीं होने के कारण बैंकों का सर्वर भी बंद रहा। इसके साथ ही एटीएम भी ठप पड़े रहे। जिससे लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। स्थानीय लोगों ने जल्द संचार सेवा बहाल करने की मांग की है।

बीते रविवार से चकराता–मसूरी मोटर मार्ग पर ओएफसी लाइन में ब्रेक आ जाने से चकराता दूरभाष केंद्र से जुड़े सैकड़ों लैंडलाइन, ब्रॉडबैंड और मोबाइल ठप पड़े हैं। स्थानीय बाशिंदे देवेंद्र सिंह चौहान, अशोक गोयल, रवीश अरोड़ा, हरीश कुमार आदि का कहना है कि लाइन में फाल्ट आ जाने से सबसे ज्यादा समस्या बैंक और एटीएम ठप होने से हो रही है। दो दिन बैंक में अवकाश होने कारण सोमवार सुबह से ही बैंकों में लोगों की भीड़ लगनी शुरु हो गई थी।

अतिक्रमण चिह्नित करने पर भड़के व्यापारी, किया प्रदर्शन

नई टिहरी : तहसील प्रशासन की ओर से लंबगांव बाजार क्षेत्र में अतिक्रमण चिह्नित किए जाने का स्थानीय व्यापारियों और लोगों ने विरोध किया है। व्यापारियों ने अतिक्रमण की जद में आए उनके भवनों व दुकानों के नियमितिकरण की मांग करते हुए इस बावत एसडीएम को ज्ञापन भी सौंपा। व्यापारियों का कहना है कि पूर्व में मुख्यमंत्री की ओर से उन्हें आश्वासन दिया गया है। लेकिन अब उनके भवनों और प्रतिष्ठानों को चिह्नित कर तोड़ने की कार्रवाई की जा रही है। नगर पंचायत लंबगांव में अतिक्रमण हटाने को लेकर तहसील प्रशासन की ओर से लोगों को नोटिस जारी किया गया है। जिसमें लोगों से आगामी 15 मई तक अतिक्रमण हटाने की बात कही गई है। तहसील प्रशासन की ओर से अतिक्रमण लेकर नोटिस जारी होने के बाद से ही स्थानीय लोगों व व्यापारियों में शासन-प्रशासन के खिलाफ रोष बना है। स्थानीय लोगों व व्यापारियों ने व्यापार मंडल अध्यक्ष युद्धवीर सिंह राणा की अध्यक्षता में बैठक की लंबगांव बचाव संघर्ष समिति का गठन किया। बैठक में पूर्व जिपंस देवी सिंह पंवार ने कहा कि 40 के दशक में स्थापित लंबगांव बाजार प्रतापनगर के मुख्य बाजारों में से है। आवश्यकता के अनुसार समय–समय पर इसका विकास भी बढ़ता गया। जिसके बाद भवन स्वामियों की मांग पर वर्ष 2016 में तत्काल मुख्यमंत्री ने नियमितिकरण करने के निर्देश दिए थे, लेकिन मामले में अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा कि सरकार से मामले में निर्णय जनता के पक्ष में लेना चाहिए। बैठक में लोगों ने जबरन उनके भवनों को तोड़ने की कार्रवाई किए जाने पर आगामी 12 मई से लंबगांव मुख्य बाजार में अनिश्चितकालीन धरना–प्रदर्शन करने की चेतावनी दी है। (एजेंसी)

देवी सिंह बनें समिति अध्यक्ष

लंबगांव बचाव संघर्ष समिति में देवी सिंह पंवार अध्यक्ष, रमेश रावत उपाध्यक्ष, त्रिलोक सिंह बिष्ट महासचिव, सौरभ रावत सह सचिव, चंद्रभान कोषाध्यक्ष, केशव रावत मीडिया प्रभारी व रोशनलाल सेमवाल, मुरारीलाल खंडवाल व सुमेर चंद को संरक्षक बनाया गया।

डीएम सोनिका की अध्यक्षता में हुई जनसुनवाई में 83 शिकायतें प्राप्त

देहरादून। ऋषिपर्णा सभागार कलैक्ट्रेट जिलाधिकारी सोनिका की अध्यक्षता में जनसुनवाई का आयोजन किया गया आज जनसुनवाई में 83 शिकायत प्राप्त हुई। शिकायतों में नगर निगम की भूमि पर कब्जा,भूमि विक्रय की अनुमति, बीपीएल कार्ड बनवाने की मांग, स्कूली किताब दिलाने की मांग, सम्पति बटवारा विवाद, आर्थिक सहायता दिलाने, अवैध अतिक्रमण, आर्थिक सहायता दिलाने, अवैध खनन, आदि शिकायतें प्राप्त हुई।जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि भूमि कब्जे, अतिक्रमण, भूमि खुर्दबुर्द करने की शिकायत पर सम्बन्धित उप जिलाधिकारियों को कार्यवाही के निर्देश दिए। साथ ही विभागों को निर्देशित किया जनसुनवाई में प्राप्त हो रही शिकायतों का गंभीरता से निस्तारण करें साथ ही निर्देशित किया कि भूमि सम्बन्धी प्रकरणों एवं फर्जीवाड़े पर जांच करें। उन्होंने निर्देशित किया कि लोगों के साथ भूमि क्रय विक्रय में धोखाधड़ी न हो इसके लिए प्रभावी कदम उठाये जाएं तथा लोगों को जिला प्रशासन की गाईडलाईन के बारे में जागरूक किया जाए।

दो साल से सड़क पर पड़ा बोल्डर दुर्घटना को दे रहा न्योता

विकासनगर। त्यूणी–चकराता राष्ट्रीय राजमार्ग पर जाड़ी के डांग के पास दो साल से पड़ा बोल्डर दुर्घटनाओं को न्योता दे रहा है। अति व्यस्त मार्ग होने के बावजूद लोक निर्माण विभाग बोल्डर हो हटाने की जहमत नहीं उठा रहा है। चकराता के कनिष्ठ ब्लॉक प्रमुख शमशेर सिंह, क्षेत्र पंचायत सदस्य रमेश चौहान, जगवीर, ग्राम प्रधान राहुल पुन, भगत सिंह, फतेह सिंह ने बताया कि जाड़ी डांग के पास पहाड़ी दरकने से बड़े–बड़े बोल्डर एनएच पर गिर गए थे, जिससे यातायात बाधित हो गया था, लेकिन एनएच डिवीजन डोईवाला ने यातायत बहाल करने के लिए छोटे–छोटे बोल्डर हटा दिए थे, लेकिन बड़े बोल्डर अभी भी सड़क पर ही पड़े हुए हैं,

तीसरे दिन भी वन विभाग का पिंजरा खाली

विकासनगर। शनिवार की शाम को महमूदनगर शंकरपुर में चार वर्षीय बच्चे को निवाला बनाने के बाद गुलदार अब तक नजर नहीं आया है। वन विभाग ने गुलदार को पकड़ने के लिए दो पिंजरे लगाए हैं, लेकिन घटना के तीसरे दिन भी वन विभाग के पिंजरे खाली रहे। वहीं गुलदार की दहशत से शंकरपुर के लोग खौफजदा हैं। शाम होते ही लोग घरों के दरवाजे और खिड़कियां बंद कर घरों में कैद हो रहे हैं। सुबह तक गांव के मुख्य मार्ग से लेकर गली मोहल्लों की सड़कें पूरी तरह से सूनी पड़ी हैं। हालांकि वन विभाग की टीम लगातार गुलदार की तलाश में गश्त करने के साथ ही लोगों को अलर्ट रहने के लिए लगातार सचेत कर रही है। शनिवार की शाम साढ़े सात बजे गुलदार ने चार वर्षीय एहसान को घर के आंगन से उठाकर जंगल की ओर ले जाकर उसको निवाला बनाया था। बारह घंटे बाद रविवार सुबह साढ़े सात बजे आम के एक बाग में एहसान का शव पुलिस और वनकर्मियों को मिला था। इस घटना के बाद से पूरे शंकरपुर गांव के लोग गुलदार की दहशत से बेहद घबराए हुए हैं। गांव के लोग शाम होते ही घरों की खिड़कियां और दरवाजे बंद कर अपने परिवार और बच्चों के साथ सुबह सूर्योदय होने तक कैद हो जा रहे हैं।

वन क्षेत्र में बनी मजार पर गरजा बुलडोजर, की गई ध्वस्त

लैंसडौन वन प्रभाग के अंतर्गत गिवईस्त्रोत में बनी थी मजार

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : लैंसडौन वन प्रभाग की कोटद्वार रेंज के अंतर्गत गिवई बीट में मौजूद एक मजार को ध्वस्त कर दिया है। सोमवार सुबह पुलिस, प्रशासन व वन विभाग के अधिकारियों की मौजूदगी में मजार पर बुलडोजर चलवाया गया।

वर्तमान में प्रदेश सरकार की ओर से वन विभाग को वन क्षेत्र से अतिक्रमण हटाने के आदेश दिए गए हैं। जिसके तहत वन विभाग व प्रशासन पिछले कुछ दिनों से गिवईस्त्रोत के समीप बनी मजार के दस्तावेज खंगाल रहे थे। इसके लिए बकायदा आसपास के लोगों से भी मजार के दास्तावेज उपलब्ध होने पर उन्हें प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत करने की भी बात कही गई थी। लेकिन, प्रशासन को मजार के सबंध में कोई भी दस्तावेज उपलब्ध नहीं हुए। मजार को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं होने पर प्रशासन ने सोमवार को इसे ध्वस्त करने की योजना बनाई। प्रभागीय वनाधिकारी दिनकर तिवाड़ी ने बताया कि शासन के आदेश पर वन क्षेत्र के अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई की जा रही है। मजार के संबंध में कोई भी ऐसा दस्तावेज नहीं मिला, जिससे यह प्रतीत होता हो की मजार दशकों पुरानी है। उपजिलाधिकारी प्रमोद कुमार व पुलिस क्षेत्राधिकारी विभव सैनी के नेतृत्व में टीमें मौके पर पहुंची और जेसीबी की मदद से मजार को ध्वस्त कर दिया गया। कार्रवाई के दौरान मौके पर भारी पुलिस फोर्स भी तैनात किया गया था। हालांकि किसी भी व्यक्ति ने मजार तोड़े जाने का विरोध नहीं किया।

वन क्षेत्र में बनी मजार पर बुलडोजर चलवाती प्रशासन व वन विभाग की टीम

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को आगे बढ़ाने का लिया संकल्प

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : सर्वोदय मंडल व कण्वाश्रम ग्राम स्वराज्य समिति ने राष्ट्रपति महात्मा गांधी के विचारों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस दौरान स्वतंत्रता सेनानी मुरली सिंह के निधन पर भी शोक व्यक्त किया गया।

हल्दूखाता में बैठक का आयोजन किया गया। वयोवृद्धा शशि प्रभा रावत ने कहा कि समाज में सर्वधर्म समभाव व शांति की अति आवश्यकता है। हमें अपने बच्चों को बेहतर समाज निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करना चाहिए। एक बेहतर सोच ही बेहतर समाज का निर्माण कर सकती है। सामाजिक संस्थाओं को गांधी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करना होगा। बैठक में कण्वाश्रम ग्राम स्वराज्य समिति ने क्षेत्र के बोक्सा जनजाति के बच्चों के लिए ट्यूशन की व्यवस्था करने का भी निर्णय लिया। कहा कि जुलाई माह से कक्षाएं प्रारंभ कर दी जाएंगी। इस दौरान सदस्यों ने भाबर क्षेत्र के घमंडपुर में रहने वाले 104 वर्षीय मुरली सिंह के निधन पर भी शोक व्यक्त किया। वक्ताओं ने कहा कि देश व समाज के लिए दिए गए मुरली सिंह के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। बैठक में विनय किशोर रावत, नेत्र सिंह रावत, सुरेन्द्र लाल आर्य, मंजू रावत, राकेश अग्रवाल, शूरबीर खेतवाल, गौरव रावत, मनमोहन सिंह, गौरव रावत, किशन सिंह रावत, गोविंद सिंह रावत, बिजेंद्र सिंह नेगी आदि मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस से पूर्व चलाई जाएंगी योग कक्षाएं

भारत स्वाभिमान न्यास की ओर से आयोजित की गई बैठक

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : अंतराष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाने के लिए भारत स्वाभिमान न्यास की ओर से बैठक आयोजित की गई। इस दौरान सदस्यों ने योग दिवस से पूर्व क्षेत्र में योग कक्षाएं चलाने का निर्णय लिया। कहा कि न्यास का मुख्य उद्देश्य योग को घर-घर तक पहुंचाना है।

सोमवार को मंडल प्रभारी अमित सजवाण व जिला प्रभारी दिनेश जुयाल की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। आमजन योग के प्रति जागरूक हो इसके लिए न्यास के सदस्य गंभीरता से कार्य कर रहे हैं। क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर निःशुल्क योग कक्षाएं संचालित की जाएगी। विद्यालय व कालेज में कार्यशाला लगाकर विद्यार्थियों को योग का महत्व बताया जाएगा। इस मौके पर विजय भाटिया, जितेंद्र काला, एसएन नौटियाल, कमल थापा, चंद्र प्रकाश असवाल, महेश आनंद कंडवाल, सुषमा घनशाला, सुशीला तिवारी, रजनी अग्रवाल, सरिता रावत, रश्मि पंत, अंजू सिंह आदि मौजूद रहे।

भारत स्वाभिमान न्यास की ओर से आयोजित बैठक में भाग लेते पदाधिकारी व सदस्य

मानसी नेगी बनी शिशु भारती की अध्यक्ष

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार/सतपुली : सतपुली नगर पंचायत स्थित सरस्वती शिशु मंदिर में शिशु भारती के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी मानसी नेगी को दी गई है।

सरस्वती शिशु मंदिर प्रांगण में आयोजित मतदान कार्यक्रम के दौरान छात्र-छात्राओं के मतदान के आधार पर शिशु भारती का गठन किया गया। जिसमें मानसी नेगी को अध्यक्ष पद पर जीत मिली। प्रधानाचार्य बागेश्वर कुकरेती ने बताया कि विद्यालय में नए शिक्षा सत्र के लिए छात्र-छात्राओं के पदाधिकारियों चुनाव किया गया। जिसमें मतदान के आधार पर शिशु भारती का गठन किया गया।

विद्यार्थियों को बेहतर रोजगार के बारे में दी जानकारी

राजकीय स्नताकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार में आयोजित की गई कार्यशाला

जयन्त प्रतिनधि।

कोटद्वार : राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार में कैरियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस दौरान शिक्षकों ने विद्यार्थियों को बेहतर रोजगार के बारे में जानकारी दी।

कैरियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट सेल व एनआईआईटी गुरुग्राम प्लेसमेंट ऐजेंसी की ओर से आईसीआईसीआई बैंक हेतु रिलेशनशिप मैनेजर पद पर नौकरी प्रदान करने हेतु एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें कैंपस प्लेसमेंट हेतु अनेक छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। एनआईआईटी गुरुग्राम प्लेसमेंट एजेंसी के असिस्टेंट मैनेजर संजीव सिंह एवं मयंक लखेड़ा और सीनियर काउंसलर वैभव चौहान ने इस कार्यशाला में सभी छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित करके उन्हें रोजगार के संबंध में विशेष रूप से जानकारी दी। कार्यशाला की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर जानकी पंवार ने की। इस मौके पर प्रोफेसर अमित कुमार जायसवाल, कैरियर काउंसलिंग एंड प्लेसमेंट सेल की सदस्य डॉ. ऋचा जैन, डॉ. रोशनी असवाल, डॉ. सोमेश थौंडियाल, हीरा सिंह आदि मौजूद रहे।

कोटद्वार महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में विद्यार्थियों को जानकारी देते शिक्षक

भारत मुक्ति मोर्चा संगठन ने दिया पहलवानों को समर्थन

कोटद्वार : कुश्ती संघ के अध्यक्ष पर योग शोषण का आरोप लगाने वाले पहलवानों को भारत मुक्ति मोर्चा ने अपना समर्थन दिया है। कहा कि पहलवानों का शोषण करने वाले कुश्ती संघ के अध्यक्ष की जल्द गिरफ्तारी की जानी चाहिए।

मोर्चा ने उपजिलाधिकरी प्रमोद कुमार के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। मोर्चा के जिला प्रभारी सतीश ओडवाल ने कहा कि भाजपा सांसद व भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण के खिलाफ महिला पहलवान पिछले कई दिनों से दिल्ली में धरना दे रहे थे। बावजूद इसके सरकार ने उनकी समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया। दिल्ली के थाने में बृजभूषण के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज है। लेकिन, अब तक आरोपी सांसद की गिरफ्तारी नहीं हुई है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी सरकार पर सांसद को बचाने का आरोप लगाया। कहा कि महिला पहलवानों को भारत के कई राजनीतिक व सामाजिक संगठनों ने भी अपना समर्थन दे दिया है। लेकिन राष्ट्रवाद का ढोल पीटने वाली सरकार महिला पहलवानों के विरोध में खड़ी दिखाई दे रही है। उन्होंने राष्ट्रपति से महिला पहलवानों को न्याय दिए जाने की मांग की है। इस मौके पर चंद्रमोहन, कैलाश चंद्र, पुष्कर सिंह, महेश नेगी, रवि कुमार, वीरेंद्र कुमार, नरेश सिंह मौजूद रहे।

विद्यार्थियों को बताया हेनरी ड्यूनेंट का योगदान

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : रेडक्रास दिवस पर पब्लिक इंटर कॉलेज सुरखेत में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान शिक्षकों ने विद्यार्थियों को हेनरी ड्यूनेंट के योगदान के बारे में बताया

सोमवार को विद्यालय परिसर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य पुष्कर सिंह नेगी ने विद्यार्थियों को हेनरी ड्यूनेंट की जीवनी के बारे में बताया। आमजन की मदद के लिए वर्ष 1828 में हेनरी ड्यूनेंट ने रेडक्रास नाम की एक अंरराष्ट्रीय संस्था बना थी। संस्था का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक आपदा सहित अन्य आपदाओं में घायल व्यक्तियों की मदद करना है। बेहतर कार्यों के लिए संस्था को तीन बार शांति नोवेल पुरस्कार भी मिल चुका है। कहा कि कोविड आपदा काल में विद्यालय की जूनियर रेडक्रास समिति के छात्र-छात्राओं ने अपने-अपने गांव में लोगों को मास्क, सेनिटाइजर व कोरोनारोधी दवाएं वितरित की। कहा कि विद्यार्थियों को रेडक्रास समिति से जुड़कर समाज सेवा में अपना योगदान देना चाहिए।

विद्यालय में बच्चों को जानकारी देते शिक्षक

पौड़ी परिसर में बॉटनिकल गार्डन की स्थापना की, छात्रों को मिलेगी मदद

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : राजकीय स्नातकोत्तर डिग्री कॉलेज में छात्र-छात्राओं के शोधादि कार्यों के लिए एक बॉटनिकल गार्डन की स्थापना की गई है। जिसमें विभिन्न प्रजातियों के पौधों को लगाया गया है।

डिग्री कालेज के वनस्पति विज्ञान विभाग और प्रांगण विकास समिति के संयुक्त तत्वावधान में वाटिका की स्थापना की गई। डिग्री कॉलेज में वाटिका स्थापना से पहले स्थल चयन कर इसकी साफ सफाई की गई। यहां वनस्पति विज्ञान के छात्र-छात्राओं ने एचओडी डॉ. छाया सिंह की अगुवाई में झाड़ियों को पूरी तरह से साफ किया। इसके बाद औषधीय और पर्यावरणीय अनुकूल वाले पौधें बर्गनिया, तुलसी, स्पाइडर प्लांट, लेमन ग्रास, एलोवेरा आदि का रोपण किया गया। डॉ. छाया सिंह ने कहा कि कि वाटिका के बनने से वनस्पति विज्ञान के छात्रों को काफी मदद मिलेगी। इन पौधों की पहचान से लेकर औषधीय और पर्यावरणीय महत्व के बारे में आसानी से पता लगाया जा सकेगा। कहा कि यह एक तरह का प्रयोगात्मक कार्य ही है। इसका लाभ इस संकाय के छात्रों को आगे भी मिलेगा। इस मौके पर प्रांगण विकास समिति के सदस्य डॉ. विवेक रावत, डॉ. विकास प्रताप सिंह, भारत सिंह बिष्ट, अनिल पोखरियाल, सुशांत धस्माना, नरेश चन्द्र ने आदि ने भी सहयोग किया।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष को धमकी देने पर जताया रोष, कांग्रेसियों ने दी तहरीर

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को कर्नाटक के चिंतापुर विधान सभा में भाजपा प्रत्याशी मनीकांत राठौर द्वारा परिवार सहित जान से मारने की धमकी देने पर महानगर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में रोष है।

इस बात से आक्रोशित कार्यकर्ताओं ने महानगर कांग्रेस अध्यक्ष संजय मित्तल व यूथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष के नेतृत्व में कोतवाली पहुंचकर प्रभारी निरीक्षक को मनीकांत राठौर के खिलाफ तहरीर दी है।

तहरीर में कहा गया है कि मल्लिकार्जुन खड़गे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। भाजपा नेता द्वारा उनके साथ किए गए दुर्व्यवहार से कांग्रेस कार्यकर्ता आहत हैं। कहा कि देश में इस तरह का व्यवहार करने वाले नेताओं को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

ऐसे में व्यक्तियों को सजा मिलें इसके लिए सख्ती से कार्रवाई होनी चाहिए। कहा कि भाजपा नेता सत्ता के मद में अमर्यादित आचरण पर उतर आए हैं, जिसका विरोध जारी रहेगा। तहरीर देने वालों में सुनील सेमवाल, राकेश शर्मा, विजय माहेश्वरी, रजनीश उप्पल, सूरज कांति, धीरेंद्र बिष्ट, बृजपाल सिंह नेगी, अंकुश घिल्डियाल और नीरज बहुगुणा सहित अन्य कार्यकर्ता शामिल रहे।

कोटद्वार कोतवाली में तहरीर देते कांग्रेसी

महानगर अध्यक्ष शकुंतला चौहान के निधन पर जताया शोक

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : महानगर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने महिला कांग्रेस महानगर अध्यक्ष शकुंतला चौहान के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।एक बारातघर के सभागार में आयोजित शोक सभा में पूर्व मंत्री सुरेंद्र सिंह नेगी और नगर निगम मेयर हेमलता नेगी ने स्व. शकुंतला चौहान के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए कहा कि पार्टी के लिए उनके योगदान को हमेशा याद किया जाता रहेगा। उन्होंने कोरोना काल में गरीब लोगों की निःस्वार्थ भाव से की। सेवा को याद करते हुए कहा कि समाज सेवा के क्षेत्र में भी वे अग्रणी भूमिका निभाती थी। उनका निधन पार्टी के लिए अपूर्णीय क्षति है। शोक व्यक्त करने वालों में जिला कांग्रेस कमेटी, यूथ कांग्रेस, कांग्रेस सैनिक प्रकोष्ठ, महिला कांग्रेस कमेटी, एनएसयूआई और अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के कार्यकर्ता शामिल रहे।

आपसी समन्वय से गंगा पथ यात्रा को सफल बनाएं : डीएम

डीएम ने ली गंगा पथ यात्रा की तैयारियों को लेकर समीक्षा बैठक

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान द्वारा आगामी 13 मई को ऋषिकेश से देवप्रयाग तक चारधाम के पौराणिक मूल मार्ग में प्रस्तावित गंगा पथ यात्रा की तैयारियों के संबंध में संबंधित अधिकारियों के साथ वर्चुअल माध्यम से समीक्षा बैठक की। इस दौरान डीएम ने अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने दायित्वों को बेहतर तरीके से संपादित करने एवं आपसी समन्वय से गंगा पथ यात्रा को सफल बनाने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि ऋषिकेश से लेकर नांद गांव, महादेव चट्टी, सिमालू गांव, व्यासघाट और देवप्रयाग में विभिन्न प्वाइंट पर कार्यक्रम के अनुरूप प्रस्तावित इवेन्ट को बेहतर तरीके से संपादित करायें। कहा कि गंगा पथ यात्रा को बहुत ही व्यवस्थित और भव्य तरीके से संपादन में अपना सहयोग प्रदान करें। उन्होंने जिला पंचायत व संबंधित नगर पालिका परिषद को यात्रा के विभिन्न प्वाइंट पर व्यापक साफ-सफाई रखने, चिकित्सा विभाग को मय एम्बुलेंस-चिकित्सा टीम की व्यवस्था रखने, पुलिस विभाग को सुरक्षा तथा निर्बाध यातायात व्यवस्था संपादित करने के निर्देश दिये। विदित है कि जिला प्रशासन पौड़ी द्वारा जिलाधिकारी डॉ. आशीष चौहान के मार्गदर्शन में ऋषिकेश से देवप्रयाग तक के पौराणिक चारधाम पैदल यात्रा मार्ग को पुनर्जिवित करने का बिड़ा उठाया है। जिसके तहत आगामी 13 मई को गंगा पथ यात्रा का संचालन किया जायेगा। इस दौरान वर्चुअल माध्यम से अपर जिलाधिकारी ईला गिरी, अपर पुलिस अधीक्षक पौड़ी अनूप काला, उपजिलाधिकारी मुक्ता मिश्रा, जिला पर्यटन अधिकारी प्रकाश खत्री, जिला पूर्ति अधिकारी केएस कोहली, स्वास्थ्य विभाग से डॉ. गौरव, अधिशासी अभियंता लोनिवि लैंसडौन पीएस बिष्ट, जिला पंचायत अभियंता सुदर्शन रावत सहित संबंधित विभागीय अधिकारी व कार्मिक वर्चुअल माध्यम से उपस्थित रहे।

53 जूनियर शिक्षकों को मिला प्रमोशन, संगठन ने जताई खुशी

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संगठन पौड़ी ने जूनियर सहायक को पदोन्नति मिलने पर खुशी जाहिर की है। जूनियर हेड में पौड़ी जिले से 53 शिक्षकों को प्रमोशन मिला है। संगठन काफी लंबे समय से पदोन्नति की मांग कर रहा था।

संगठन के जिलाध्यक्ष भगत भंडारी और जिला मंत्री मुकेश काला ने कहा कि पदोन्नति के बाद जिले के समग्र शिक्षा वाले स्कूलों को भी शिक्षक मिल गए हैं। ऐसे में स्कूलों के पठन–पाठन को लेकर आ रही दिक्कतें दूर हुई है। कहा कि संगठन पदोन्नति को लेकर पिछले लंबे समय से लड़ाई लड़ रहा था।

जिलाध्यक्ष ने कहा कि लंबे समय से पदोन्नतियां नहीं हो पाई थी अब जूनियर शिक्षकों को भी पदोन्नतियों का भविष्य में अवसर मिलेगा। कहा कि शिक्षक 20 से लेकर 25 साल तक एक ही पद पर काम कर रहे थे। लेकिन पहली बार बंपर पदोन्नतियां हुई है।

पुलिस ने धोखाधड़ी करने वाले आरोपित को किया गिरफ्तार

बागेश्वर : धोखाधड़ी करने वाले एक आरोपित को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। वह एक माह पूर्व डिजिटल कैमरा, बैटरी, चार्जर आदि किराये पर ले गया था और वापस करने नहीं लौटा। दुकानदार की प्राथमिकी पर पुलिस ने कार्रवाई को अंजाम दिया।

पुलिस उपाधीक्षक अंकित कंडारी ने पत्रकार वार्ता में बताया कि बीते छह मई को नुमाइशखेत निवासी उरूज आलम पुत्र कमलरूल हसन ने कोतवाली में प्राथमिकी दी। उन्होंने कहा कि सरयू पुल पर उसकी दुकान है। वह कैमरा आदि किराये पर भी देता है। बीते चार मई को उसकी दुकान पर शाम को लगभग छह बजे सुरेश कोरंगा नाम बता कर एक युवक पहुंचा। उसने अपना मोबाइल नंबर भी दिया। वह एक दिन के लिए डीएसएलआर कैमरा किराये पर ले गया। उसके साथ चार्जर और बैग भी था। किराये के 400 रुपये देकर गया और बाकी अगले दिन देने की बात की। लेकिन वह वापस नहीं लौटा। उसकी काफी खोजबीन की गई। मोबाइल नंबर भी नहीं लगा। वह लड़के को पहचान सकता है। कैमरे में काले मार्कर से दुकान का नाम भी लिखा है। पुलिस ने अज्ञात के विरुद्ध कोतवाली में मुकदमा दर्ज किया। उपनिरीक्षक मीना रावत ने विवेचना की। टीम गठित की और विवेचना के दौरान 420 धारा में बढ़ोतरी की। सोमवार को सुबह लगभग साढ़े 10 बजे त्यूनेरा गधेरे के पास संदिग्ध व्यक्ति से पूछताछ की। उसके कंधे पर पिट्ठू बैग था। उसने बताया कि उसका नाम नीरज सिंह साह उर्फ निक्कू पुत्र दीवान साह है। वह हाड़ियात, थर्प, बेरीनाग, जिला पिथौरागढ़ का रहने वाला है। उसकी उम्र 21 वर्ष है। पुलिस ने आरोपित से सामान बरामद किया और उसे गिरफ्तार कर लिया है। सीओ ने बताया कि आरोपित ने बताया कि वह पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, देहरादून आदि स्थानों से किराए पर कैमरे आदि लेता है।

उपनल कर्मियों ने दी उग्र आंदोलन की चेतावनी

बागेश्वर : स्वास्थ्य विभाग में तैनात उपनल कर्मचारियों ने सोमवार को कलक्ट्रेट में धरना दिया। उन्होंने सेवा अवधि बढ़ाने की मांग की। ऐसा नहीं होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी दी। इस मौके पर अमरजीत, अंकित कुमार, सुनील कुमार, पंकज कुमार, महेश, दीपा देवी, रोहित, रीतू कन्नोजिया, पूजा कन्नोजिया, सीता देवी, विक्रम सिंह, दिनेश कुमार आदि मौजूद रहे। (एजेंसी)

शिक्षा विभाग विद्यालय के जर्जर भवनों को चिन्हित करें

बागेश्वर : क्षेत्रीय विधायक सुरेश गड़िया ने जिला स्तरीय अधिकारियों के साथ विकास कार्यों की समीक्षा की। अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह आपदा से निपटने की तैयारी अभी से शुरू कर लें। शिक्षा विभाग जर्जर विद्यालय के भवनों को चिह्नित करें, ताकि बारिश में उन्हें वहां से शिफ्ट किया जाए। दूर-दराज के अस्पतालों में समय पर दवा आदि का भंडारण कर लें। तहसील सभागार में सोमवार को विधायक ने कृषि, उद्यान, पंयातजी राज, लघु सिंचाई, सिंचाई, लघु डाल, पर्यटन, अर्थ एवं संख्या, माध्यमिक व प्राथमिक शिक्षा, क्रीड़ा, चिकित्सा, पेजयल, जल संस्थान, लोनिवि, बाल विकास के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उनके साथ बैठकर क्षेत्र के विकास के लिए छह महीने की कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की। विधायक ने कहा कि आपदा व भूस्खलन की दृष्टि से कपकोट सबसे अधिक संवेदनशील है। यहां सबसे अधिक सरकारी संपत्ति को नुकसान होता है। नुकसान स्थल तक पहुंचने के लिए सड़क का दूरस्थ्य होना पहली जरूरत होती है। लोनिवि विभाग बारिश से बंद किसी भी सड़क को एक सप्ताह के भीतर खोलें। ताकि समय पर राहत सामग्री पहुंचाई जा सके। जल संस्थान व जल निगम गर्मियों को लोगों को प्यासा न रखें। जहां पानी का अधिक संकट है वहां टैंकरों से पानी पहुंचाएं। सरकार की मंशा है कि हर घर नल, हर घर जल से लोगों को आच्छादित करें। सरकार की मंशा का पलीता लगाने वाले अधिकारियों को नहीं बख्शा जाएगा।

बारिश से पहले दवा, खाद्यान्न का भंडारण हर हाल हो हो। इसमें लापरवाही किसी भी स्तर की सहन नहीं होगी। धन की कमी कहीं भी आड़े नहीं जाएगी। जरूरत दृण इच्छा शक्ति की होनी चाहिए। इस मौके पर एसडीएम हरगिरी बागेश्वर, मोनिका कपकोट समेत विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। (एजेंसी)

जिपं सदस्य को जान से मारने की धमकी दी, मुकदमा दर्ज

काशीपुर : जिला पंचायत सदस्य को एक युवक द्वारा रास्ते में घेरकर गाली-गलौच करते हुए जान से मारने की धमकी देने का मामला सामने आया है। पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सोमवार को जिला पंचायत सदस्य अजीत पाल सिंह ने पुलिस को तहरीर दी। उन्होंने कहा रविवार शाम वह बाजपुर से गदरपुर जा रहे थे। गांव चकरपुर में शोकानगला निवासी रवि चौधरी ने उसे रोक लिया और गाली गलौच करते हुए जान से मारने की धमकी दी। कोतवाल प्रवीण सिंह कोश्यारी ने बताया कि जिला पंचायत सदस्य से अभद्रता करने और जान से मारने की धमकी देने की शिकायत मिली है।

डीएम ने ग्रामीणों की समस्याएं सुनी

बागेश्वर : भाटनीकोट में सोप स्टोन खनन पट्टा स्वीकृत से पहले सोमवार को जन सुनवाई हुई। डीएम अनुराधा पाल ग्रामीणों की समस्याएं, आपत्तियां सुनी और सुझाव लिए। पट्टाधारक को ग्रामीणों की सहमति पर नियम और शती के तहत कार्य करने के निर्देश दिए।

जन सुनवाई में हरीश सिंह खेतवाल ने कहा कि ग्राम सभा में खनन पट्टा स्वीकृत होने से काफी उम्मीदें है। गांव का आर्थिक विकास होगा।

विद्यालयों के साथ ही चिकित्सा, स्वास्थ पर विशेष ध्यान देने की मांग की। माधो सिंह ने कहा कि हम सभी साथ है और मिलकर गांव का विकास करेंगे। सावित्री खेतवाल ने कहा कि खान स्वामी खनन के बाद खेतों को वैसे ही पूर्ववत बना कर दें। स्थानीय लोंगो को रोजगार मिले। समूह की महिलाओं ने पेड-पौधा लगाने का भी सुझाव दिया। दीवान सिंह खेतवाल ने पहले खनन क्षेत्र तक सड़क बनाने के साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार देने का सुझाव दिया। इस दौरान वैज्ञानिक पर्यावरण, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड हरीश चंद्र जोशी सहित ग्रामीण उपस्थित थे। (एजेंसी)

एक नजर

मिशन 2024 की तैयारियों में जुटने को कहा

काशीपुर : भाजपा कार्यालय में नगर मंडल महिला मोर्चा की नवगठित कार्यकारिणी का स्वागत किया गया। सोमवार को अध्यक्ष उमा विश्नोई, उपाध्यक्ष मोहनी शर्मा, ममता शर्मा, बबीता, महामंत्री शीला, अनुराधा, मंत्री लक्ष्मी देवी, कुसुम, सुनीता, मीडिया प्रभारी सुषमा रानी, कोषाध्यक्ष मंजू देवी समेत कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत किया। नगर अध्यक्ष ने सभी से मिशन 2024 की तैयारियों में जुटने का आह्वान किया। साथ ही केंद्र एवं राज्य सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को महिलाओं तक पहुंचाने के अभियान का शुभारंभ किया। कहा सरकार की योजनाओं की जानकारी न होने के कारण महिलाएं योजनाओं के लाभ से वंचित हैं। यहां तारा देवी, संतोष देवी, संगीता, मनोज रानी, रामवती, रीता, सुमन, अनीता, बीना नागर, अनीता पवार, रेखा गुप्ता, सुधा देवी रहीं। (एजेंसी)

शादी में हर्ष फायरिंग करने वाला गिरफ्तार

काशीपुर : कुंडा थाना पुलिस ने शादी में हर्ष फायरिंग करने के आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही उसके कब्जे से तमंचा और एक कारतूस भी बरामद किया। रविवार शाम मुखबिर ने कुंडा थाना पुलिस को सूचना दी कि गढ़ीनेगी क्षेत्र में एक युवक शादी में हर्ष फायरिंग कर रहा है। सूचना पर गढ़ीनेगी चौकी प्रभारी होशियार सिंह टीम के साथ मौके पर पहुंचे। टीम ने बारात घर के पास से फायरिंग के आरोपी मोहित सैनी पुत्र दीना सैनी निवासी नागफनी, मुरादाबाद को गिरफ्तार कर लिया। तलाशी लेने पर उसके पास से 315 बोर का तमंचा, एक खोखा और एक कारतूस बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपी का चालान कर कोर्ट में पेश किया। जहां से उसे जेल भेज दिया है। (एजेंसी)

विधायक प्रत्याशी के खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई

काशीपुर : कर्नाटक में चिंतापुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा के विधानसभा प्रत्याशी द्वारा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उनके परिवार को धमकी देने से कार्यकर्ता भड़क गए हैं। आक्रोशित कार्यकर्ताओं ने पुलिस से भाजपा प्रत्याशी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। सोमवार को कांग्रेस महानगर अध्यक्ष मुशर्रफ हुसैन के नेतृत्व में कार्यकर्ता कोतवाली पहुंचे। उन्होंने एसआई दीपक जोशी को तहरीर दी। इस दौरान उन्होंने आरोप लगाया कि कनार्टक के चिंतापुर विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, उनकी पत्नी और पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दी है। यहां संदीप सहगल, इंदूमान, सरीम सैफी, सुभाष पाल, विमल गुड़िया, सरित चतुर्वेदी, राजू छीना, हनीफ गुड्डू, माजिद अली, जफर मुन्ना, आबिद रहे। (एजेंसी)

अस्पताल में मरीजों को फल बांटे

काशीपुर : रेडकॉस सोसायटी ने स्थापना दिवस पर एलडी भट्ट सरकारी अस्पताल में करीब 90 मरीजों को फल बांटे। इस दौरान उन्होंने उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना की। सोमवार को चेयरमैन गुरनाम सिंह गामा ने सोसायटी के कार्यों पर प्रकाश डाला। संरक्षक जेपी अग्रवाल ने बताया सोसायटी पिछले 43 वर्षों से काशीपुर में अपनी सेवाएं दे रही है। कहा कि आगे भी सामाजिक कार्यों में सहयोग देती रहेगी। यहां वाइस चेयरमैन डॉ. राजीव गुप्ता, सचिव अरूण पंत, संजय शर्मा, गंगा प्रसाद पंत, गौरव रस्तोगी, महेश कुमार, डॉ. जगदीश राणा, डॉ. अकील, एमए राहुल, वीरेंद्र, अरविंद सक्सेना रहे। (एजेंसी)

320 लीटर कच्ची शराब पकड़ी

काशीपुर : आबकारी आयुक्त के आदेश पर आबकारी विभाग की टीम ने कच्ची शराब के खिलाफ विशेष अभियान चलाया। इस दौरान टीम ने हजारों लीटर लाहन नष्ट कर 12 भट्ठियों को ध्वस्त कर दिया। सोमवार को आबकारी निरीक्षक सोनू सिंह के नेतृत्व में टीम ने अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी की। टीम ने बरखेड़ी, खाईखेड़ी, कनकपुर, रंपुरा नाला के किनारे अवैध शराब की 12 भट्ठियां तोड़ करीब 24 हजार लीटर लाहन नष्ट किया। साथ ही 320 लीटर कच्ची शराब पकड़ी। टीम में बाजपुर के निरीक्षक मोहन सिंह कोरंगा, प्रवर्तन दल निरीक्षक देवेंद्र कुमार, विकास रावत, नितिन कुमार, भुवन चंद्र चौसाली, संजीव कुमार रहे। (एजेंसी)

राइंका सिलोर महादेव में चोरों का धावा, कंप्यूटर, प्रिंटर सहित कई सामान चोरी

अल्मोड़ा। ताड़ीखेत के राजकीय इंटर कॉलेज सिलोर महादेव में चोरों ने धावा बोल दिया। कार्यालय के ताले तोड़ चार कंप्यूटर, प्रिंटर सहित कई सामग्री चोर उड़ा ले गए। सोमवार की सुबह विद्यालय खुलने पर चोरी का पता चला। प्रधानाचार्य ने राजस्व पुलिस में चोरी की घटना की प्राथमिकी दर्ज कराई है। विद्यालय में इससे पहले भी चोरी की घटना हो चुकी है। रविवार को अवकाश के बाद सोमवार को सुबह करीब साढ़े सात बजे जब स्टाफ के लोग विद्यालय पहुंचे,

महिलाओं को उनके अधिकार बताएं

चम्पावत : सोमवार को शाखा प्रबंधक पुष्पा यादव की अध्यक्षता में जिला पिथौरागढ़ सहकारी बैंक परिसर मैं एक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें शाखा प्रबंधक द्वारा क्षेत्र की महिलाओं को महिला सशक्तिकरण और उनकी सुरक्षा के संबंध में जागरूक किया। उन्होंने महिलाओं को उनके अधिकारों उनकी सुरक्षा के संबंधित जानकारी दी। शाखा प्रबंधक पुष्पा यादव ने महिलाओं को बैंक की बचत व ऋण संबंधी जानकारी देते हुए उनसे बैंक की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाकर अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के बारे में जागरूक किया। उन्होंने महिलाओं से बैंक की विभिन्न योजनाओं से ऋण लेकर अपने आप को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जागरूक किया। शिविर में सुशीला चौहान, भावना चन्द, कमला देवी, पार्वती बिष्ट, इंद्रा बम, शान्ति देवी, लक्ष्मी देवी, रमेश चंद्र उप्रेती, अरुण कुमार, रीना, भूपेंद्र बिष्ट, धनेश्वर अधिकारी आदि तमाम लोग मौजूद रहे। (एजेंसी)

शिक्षा केवल पढ़ना मात्र नहीं : सीओ

बागेश्वर : भारतीय जनता युवा मोर्चा एवं युवा कल्याण मंत्रालय के तत्वावधान में विवेकानंद विद्या मंदिर मंडलसेरा में वाई-20 चौपाल कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिला संयोजन दीपक गस्याल की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथ पुलिस उपाधीक्षक अंकित कंडारी व मुख्य वक्ता नीरज पंत ने दीया जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

जिला संयोजक ने कार्यक्रम के बारे में विस्तार से बताया। सीओ कंडारी ने संवैधानिक और लोकतांत्रिक विषयों पर चर्चा की। कार्यक्रम के प्रदेश संयोजक पंत ने कहा कि युवा देश का भविष्य हैं और युवा जितना मजबूत और शिक्षित होगा देश आने वाले समय में उतनी ही उन्नति करेगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल पढ़ना मात्र नहीं है आत्म ज्ञान होना हमें शिक्षित बनाता है। प्रधानाचार्य अव्वल सिंह तोपाल ने मुख्य अतिथियों को सम्मानित किया उन्होंने छात्र छात्राओं को वाई-20 चौपाल कार्यक्रम की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम में संदीप जोशी, राजेंद्र दानू, कमल कांडपाल, प्रशांत तिवारी, दयाशंकर नगरकोटी, चंदन कोरंगा, मनोज मेहता, अमित द्विवेदी, विनोद कांडपाल आदि मौजूद मौजूद रहे। (एजेंसी)

सुमित्रानंदन पंत की जयंती धूमधाम से मनाई जाएगी

बागेश्वर : 20 मई को गरुड़ में कविवर सुमित्रानंदन पंत की जयंती धूमधाम से मनाई जाएगी। काव्य गोष्ठी समेत विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।समाजसेवी भैरव नाथ टम्टा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में बतौर मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार गोपाल दत्त भट्ट ने कहा कि कवि पंत प्रकृति के सुकुमार कवि थे।

उन्होंने कौसानी का नाम अंतरराष्ट्रीय फलक पर उजागर किया। यह हम सबके लिए गौरव की बात है। इस मौके पर तय किया गया कि 20 मई को सुमित्रानंदन पंत राजकीय महाविद्यालय गरुड़ में पंत जयंती धूमधाम से मनाई जाएगी। कवि पंत पर आधार व्याख्यान होगा, छात्र-छात्राओं के बीच निबंध, चित्रकला व भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। समापन पर काव्य गोष्ठी भी होगी। संचालन कवि रतन सिंह किरमोलिया ने किया। इस दौरान कवि मोहन जोशी, संतोष तिवारी, नंदन सिंह अल्मिया, गिरीश अधिकारी, रमेश पांडे बृजवासी, रमेश कांडपाल, सीएस बड़सीला, अर्जुन राणा, राम लाल, जीवन दोसाद, गणेश उपाध्याय, मेघ सिंह कोश्यारी, सुंदर बरोलिया, प्रेमा भट्ट आदि मौजूद थे। (एजेंसी)

राजकीय शिक्षक संघ का चुनाव 12 को

काशीपुर : राजकीय शिक्षक संघ का चुनाव की सोशल मीडिया पर धूम मची हुई है। प्रत्याशी वोट के लिए लोगों से अपने पक्ष में मतदान करने की अपील कर रहे हैं। राजकीय शिक्षक संघ का चुनाव 12 मई को जीजीआईसी में आयोजित अधिवेशन के दौरान होगा। संघ की स्थानीय शाखा के लिए अध्यक्ष समेत सात पदों पर चुनाव होना है। अध्यक्ष पद पर कौशल चौधरी, हरीश चौहान, उपाध्यक्ष पद पर हरमेंद्र चौहान, मंत्री पद पर तजम्मुल हसन, पंकज अग्रवाल, रामप्रसाद अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। वहीं, महिला उपाध्यक्ष, संयुक्त मंत्री, आय व्यय निरीक्षक पद पर कोई भी दावेदार सामने नहीं आया है।

15 स्वयं सेवियों ने किया रक्तदान

बागेश्वर : जिले में विश्व रेडक्रॉस दिवस मनाया गया। इस दौरान जिला रेडक्रॉस सोसायटी ने पौधरोपण, रक्तदान कार्यक्रम किया। इसके बाद जिलाधिकारी ने बेहतर कार्य करने वाले स्वयं सेवियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

सोसायटी से जुड़े लोग सोमवार को राज्य आंदोलनकारियों की याद में वने वन में पौधरोपण किया। वृक्ष पुरुष किशन सिंह मलड़ा में एक घंटे तक पौधरोपण कार्यक्रम चला। इस दौरान चौड़ी पत्तीदार व फलदार पौधे रोपे। दस बजे बाद जिला अस्पताल में रक्तदान शिविर लगाया गया। यह शिविर एक बजे तक चला। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष भगवत डसीला, जगदीश उपाध्याय, कन्हैया वर्मा, दीपक पाठक, निरीक्षक जगदीश ढकरियाल समेत 15 लोगों ने एक-एक यूनिट रक्तदान किया। इससे पहले स्वास्थ्य विभाग की टीम ने उनका स्वास्थ्य परीक्षण किया। चार बजे बाद कलक्ट्रेट में आयोजित कार्यक्रम में बेहतर कार्य करने वाले स्वयं सेवियों को पुरस्कृत किया गया। पूरे कार्यक्रम में सोसायटी के चेयरमैन संजय साह जगताी, जिला सचिव आलोक पांडे, उमेश जोशी, प्रमोद जोशी, इंद्र सिंह फर्स्वाण, मोइउ्द्दीन अहमद तिवाड़ी आदि मौजूद रहे। (एजेंसी)

एसडीएम के आश्वासन पर सस्ता गल्ला विक्रेत्ताओं की हड़ताल समाप्त समाप्त

पिथौरागढ़। सस्ता गल्ला विक्रेत्ताओं ने 8 दिनों से चल रही हडताल एसडीएम के आश्वासन के बाद समाप्त कर दी है। विक्रेत्ताओं ने तीन योजनाओं के बिलों का भुगतान न होने पर 20 दिनों बाद दुबारा हडताल में जाने की चेतावनी दी है। सोमवार को जिला खाद्य पूर्ति कार्यालय में सस्ता गल्ला विक्रेत्ताओं ने प्रदर्शन किया। ऑल इंडिया फेयर प्राइस डीलर्स फेडरेशन के जिलाध्यक्ष मनोज पाण्डेय ने कहा कि मध्यान भोजन योजना,राष्ट्रीय खाद्य योजना,प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के लंबित बिलों को लेकर कई बार वह शिकायत कर चुके हैं। बिलों को भुगतान के लिए केंद्र व राज्य सरकार कोई कार्रवाई नहीं कर कर रही है। 780 सस्ता गल्ला विक्रेत्ताओं का लाखों का भुगतान नहीं हो पाया है। इस दौरान एसडीएम अनुराग आर्या व सस्ता गल्ला विक्रेत्ताओं की बिलों के भुगतान को लेकर वार्ता हुई। एसडीएम ने कहा कि 20 दिनों के भीतर लंबित बिलों के भुगतान के लिए कार्रवाई की जाएगी। महासचिव कैलाश जोशी ने कहा कि 20 दिनों के भीतर बिलों का भुगतान न होने पर उग्र आंदोलन किया जाएगा। इस दौरान मनोज कापडी, ललित महर, केशर सिंह धामी, गणेश कन्याल, होशियार सिंह, दीवान सिंह, लक्ष्मण सिंह,बच्ची सिंह डोबाल,लक्ष्मण भंडारी मौजूद रहे।

स्वच्छता के लिए ग्राम प्रहरी की तर्ज पर गांवों में स्वच्छता प्रहरी बनाएं

अल्मोड़ा। ताड़ीखेत ब्लॉक सभागार में कूड़ा निस्तारण को लेकर क्षमता विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पंचायत प्रतिनिधियों को सिंगल यूज प्लास्टिक और जैविक, अजैविक कूड़े के निस्तारण के तरीकों की जानकारी दी गई। संयुक्त मजिस्ट्रेट जय किशन ने कहा कि स्वच्छता और कूड़े के सही निस्तारण में पंचायतों की प्रमुख भूमिका है।

जागरूकता के साथ काम करने की जरूरत है। जिला स्तर से प्राप्त निर्देशों के क्रम में सोमवार को ब्लॉक सभागार में ग्रामीण क्षेत्रों में समुचित कूड़ा निस्तारण और सिंगल यूज प्लास्टिक निस्तारण के लिए ब्लॉक प्रमुख हीरा सिंह रावत की अध्यक्षता में कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यक्रम में मौजूद संयुक्त मजिस्ट्रेट जय किशन ने प्रत्येक गांव में जैविक कंपोस्ट पिट और प्लास्टिक यूनिट बनाए जाने पर जोर दिया। कहा कि इससे स्वच्छ भारत अभियान की परिकल्पना साकार होगी। ब्लाक प्रमुख हीरा रावत ने कहा की कूड़े सही तरीके से निस्तारण प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। कूड़े को यत्र -तत्र बिखेरने से बचना होगा। अपर मुख्य अधिकारी जगदीश प्रसाद और जिला पंचायत राज अधिकारी गोपाल सिंह अधिकारी ने कूड़ा निस्तारण के तरीकों पर प्रकाश डाला।

पुलिस परिवार की महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने की पहल

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : उपवा के तहत पुलिस परिवार की महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। पुलिस परिवार की महिलाएं अचार, जूस, चटनी आदि बनाने के गुर सीख रही है। पुलिस लाईन पौड़ी में शनिवार से तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू हो गया है।

पुलिस परिवार की महिलाएं अचार, चटनी, जूस बनाने का प्रशिक्षण लेते हुए।

उत्तराखण्ड पुलिस परिवार के कल्याण हेतु गठित उत्तराखण्ड पुलिस वाइफ वेलफेयर एसोसिएशन की अध्यक्षा डॉ. अलकनंदा अशोक के मार्गदर्शन एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक पौड़ी श्वेता चौबे के निर्देशन में उपवा पौड़ी के सहयोग से पुलिस परिवार की महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने हेतु विभिन्न क्रियाकलापों एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी के तहत पुलिस लाईन पौड़ी में महिला उपनिरीक्षक टीना रावत के सहयोग से पुलिस परिवार की महिलाओं को अचार, जूस, चटनी आदि बनाने का तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है। रमेश चंद्र सती प्रभारी फल संरक्षण केंद्र पौड़ी द्वारा अचार, फलों का जैम, जूस व चटनी आदि बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण को लेकर महिलाओं में काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। उपवा, पौड़ी गढ़वाल द्वारा पुलिस परिवार की महिलाओं को आत्मनिर्भर व स्वरोजगार से जोड़ने हेतु लगातार प्रयास किये जा रहे हैं।

ग्रामीणों ने लोकसभा चुनाव बहिष्कार की दी चेतावनी

श्रीनगर गढ़वाल : देवप्रयाग विधानसभा के अंतर्गत भल्लेगांव से सिरणी गांव, सुनार गांव और दंदेली गांव को जोड़ने वाले लिंक मोटरमार्ग के निर्माण कार्य में हो रही देरी को लेकर ग्रामीणों ने आक्रोश जताया। इस मौके पर ग्रामीणों ने बैठक आहुत कर जल्द निर्माण कार्य शुरू न होने पर आंदोलन के साथ ही लोकसभा चुनाव का बहिष्कार करने की चेतावनी दी।

बैठक में सामाजिक कार्यकर्ता गणेश भट्ट ने कहा कि भल्लेगांव-जामणीखाल मोटरमार्ग से सुनारगांव सिरणी गांव और दंदेली गांव के ग्रामीणों की सुविधा के लिए 15 वर्ष पूर्व उक्त लिंक मोटर मार्ग का निर्माण किया गया था, लेकिन आज तक उक्त लिंक मोटर मार्ग का लोक निर्माण विभाग कीर्तिनगर द्वारा न तो अधिग्रहण किया गया न ही इसका एलाइनमेंट ठीक कर डामरीकरण की प्रक्रिया को पूरा किया गया।

प्रतियोगिताओं के आयोजन को लेकर नहीं थम रहा विवाद

प्रशासन की छात्रों के साथ तीन घंटे तक चली बैठक में नहीं निकला हल

श्रीनगर गढ़वाल : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विवि के बिड़ला परिसर में सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिताओं के आयोजन को लेकर चल रहा विवाद नहीं सुलझ पा रहा है। सोमवार को इस संदर्भ में एसडीएम व पुलिस क्षेत्राधिकारी की मौजूदगी में विवि के अधिकारियों की आंदोलित छात्रों के साथ तीन घंटे से अधिक समय तक चली बैठक बेनतीजा साबित हुई। बैठक में लिए गए निर्णय के बाद लिखित में दिए गए पत्र पर छात्र नेताओं ने गहरी आपत्ति दर्ज की। जिसके बाद उन्होंने फिर से डीएसडब्लू भवन में ग्रिल के अंदर अपने को बंद कर दिया।

गढ़वाल केंद्रीय विवि में तीन दिनों से सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिताओं के आयोजन को लेकर विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है। दरअसल विवि की ओर से अंतर संकाय सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतियोगिताओं का आयोजन चौरास परिसर व अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताएं बादशाहीथौल परिसर टिहरी में कराए जाने का निर्णय लिया गया था। लेकिन छात्र संघ पदाधिकारी विवि के इस निर्णय से सहमत नहीं हुए।

बिड़ला परिसर में ही दोनों प्रतियोगिताओं का आयोजन कराए जाने की मांग को लेकर शनिवार से छात्र नेताओं ने धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया था। मांग पर कार्यवाही न होने पर छात्र नेताओं ने स्वयं को डीएसडब्लू भवन में ग्रिल के अंदर बंद कर दिया था। सोमवार को छात्रों के आक्रोश को देखते हुए एसडीएम अजयवीर सिंह, सीओ एसडी नौटियाल, कोतवाली निरीक्षक रवि सैनी की मध्यस्थता में विवि के प्रति कुलपति प्रो. आरसी भट्ट, टिहरी कैंपस निदेशक प्रो. एए बौड़ाई, डीएसडब्लू प्रो. एमएस नेगी, मुख्य नियंता प्रो. बीपी नैथानी, मुख्य छात्रावास अधीक्षक प्रो. दीपक कुमार ने छात्र नेताओं से वार्ता की। वार्ता में अंतर संकाय प्रतियोगिताओं के साथ ही अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन बिड़ला परिसर में कराए जाने को लेकर सहमति बनी। साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि अगले सत्र से विवि के तीनों परिसरों में चक्रक्रमानुसार प्रतियोगिताएं आयोजित होंगी। जिस पर छात्र नेताओं ने गहरी आपत्ति दर्ज की। (एजेंसी)

वैज्ञानिक पद्धति के पालन करने का तरीका हमारी सभ्यता और विरासत में : डा. जोशी

श्रीनगर गढ़वाल : हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विवि के भौतिकी विज्ञान विभाग में व्याख्यानमाला आयोजित की गई। जिसमें छात्र-छात्राओं को विज्ञान के साथ ही टेक्नोलॉजी को और बढ़ावा देने के लिए प्रेरित किया गया।

इस मौके पर मुख्य वक्ता के रूप में पहुंचे आईआईएससी बैंगलोर के असिस्टेंट प्रोफेसर और गढ़वाल विवि पुरातन छात्र डा. भगवती प्रसाद जोशी ने कहा कि विज्ञान हमारे दैनिक जीवन में जागने से सोने तक जीवन भर चलता रहता है। कहा कि वैज्ञानिक पद्धति के पालन करने का तरीका हमारी सभ्यता और विरासत में है। कहा सभी वैज्ञानिक विधियां हमारी खुद की है जो कि हमारे ऋषियों और मुनियों से हमें पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त हुई है। इसलिए विद्यार्थियों को वैज्ञानिक रूप से अपने आसपास की दैनिक गतिविधियों से जुड़ना चाहिए। विज्ञान में प्रयोग करते समय परंपरागत साधनों की उपलब्धता नहीं होने पर भी प्रयोग नहीं रुकना चाहिए बल्कि उनके विकल्प खोजने चाहिए। कार्यक्रम में रिसर्च इंस्टीट्यूट चेन्नई के फिजिसिस्ट एवं डाटा साइंटिस्ट डॉ. जयंती प्रसाद भट्ट ने साइंस एक्सपो के महत्व पर प्रकाश डाला और बच्चों को अपने अंदर नवाचार की प्रवृत्ति उत्पन्न करने की सलाह दी।

उन्होंने नवाचार के क्रमवार तरीकों को भी समझाया। इस मौके पर डीन स्कूल ऑफ साइंस प्रो. एससी भट्ट, विभागाध्यक्ष भौतिकी प्रो. टीसी उपाध्याय, प्रो. हेमवती नंदन, डा. आलोक सागर गौतम, डा. संजीव आदि मौजूद थे। संचालन डा. आलोक सागर गौतम ने किया। (एजेंसी)

विद्या भारती के स्कूल में अच्छी शिक्षा के साथ मिलते है संस्कार

श्रीनगर गढ़वाल : सरस्वती शिशु मंदिर श्रीनगर में अभिभावक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य गोविन्द सिंह ने अभिभावकों के समक्ष पठन-पाठन, वेश-भूषा, भोजन, छात्रों की सुरक्षा व्यवस्था आदि विषयों पर चर्चा की। इसके साथ ही अभिभावकों ने विद्यालय के पठन-पाठन आदि क्रियाकलापों पर संतुष्टि जाहिर की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए किशोर सजवाण ने कहा की विद्या भारती के स्कूल बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के साथ ही अच्छे संस्कार भी प्रदान करता है। कार्यक्रम का संचालन करते हुये योगेंद्र सिंह रमोला ने विद्या भारती के लक्ष्य व उद्देश्य से अवगत कराया। इस मौके पर ओमप्रकाश, पुष्कर, गजपाल, किरन, कपिल पाल, चंद्रेश्वरी, मोनिका, आशुतोष आदि शिक्षक मौजूद थे। (एजेंसी)

घुड़दौड़ी इंजीनियरिंग कॉलेज में 200 यूनिट रक्तदान किया

रक्तदाताओं को किया सम्मानित

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : जीबी पंत अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संस्थान घुड़दौड़ी के स्टूडेंट एक्टिविटी सेल व आईईईई सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में रक्तदान शिविर का आयोजन कॉलेज परिसर के हेल्थ सेंटर में किया गया। शिविर में 2 सौ यूनिट रक्तदान हुआ। इस अभियान में रक्तदान करने वालों को एक स्वस्थ और संतुलित जीवनशैली अपनाने की सलाह दी गई। रक्तदान के फायदों के बारे में जागरूक किया गया एवं रक्तदाताओं को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।शिविर में इंजीनियरिंग कॉलेज के सभी छात्रों, शिक्षकों व कर्मचारियों ने भाग लिया। जिसमें स्टूडेंट एक्टिविटी सेल प्रभारी डॉ. किरीट सेमवाल, डॉ. एचएस भदौरिया, डॉ. एसके वर्मा व छात्र वॉलिंटर्स में कॉलेज स्टूडेंट एक्टिविटी सेल के चन्द्र प्रकाश पांडे, अभिषेक नेगी, यश भारद्वाज और अन्य संकाय के छात्र-छात्राएं शामिल रहीं। फोटोग्राफी में नीरज कांडपाल और उनकी टीम ने सहयोग दिया गया। इस अभियान के अंतर्गत समुचित सामग्री उपलब्ध करवाने वाले इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, ब्लड बैंक देहरादून के सहयोग से 200 यूनिट रक्तदान किया गया। इस मौके पर डॉ. केएस भाटिया, डॉ. अजित सिंह, डॉ. पपेन्द्र कुमार, डॉ. प्रवीण पुष्कर, डॉ. रजनी आदि भी मौजूद रही।

राज्य आंदोलनकारी हरीश नहीं रहे

चमोली : राज्य आंदोलनकारी हरीश लाल का सोमवार सुबह

सम्बन्ध विच्छेद

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा पुत्र विनोद सिंह मेरे व मेरे परिवार के कहने सुनने में नहीं है तथा प्रतिकूल आचरण करता आ रहा है तथा असहनीय व्यवहार कर रहा है। जिस कारण मेरे पुत्र की पुत्रवधु भी घर छोड़कर चली गई है। मैं अपने पुत्र विनोद सिंह के असहनीय व्यवहार के कारण उससे सम्बन्ध विच्छेद कर अपनी समस्त चल एवं अचल सम्पत्ति से बेदखल करता हूं। भविष्य में यदि मेरे पुत्र विनोद सिंह से कोई भी व्यक्ति लेन-देन करता है तो उसकी जिम्मेदारी उसी व्यक्ति की होगी।

प्रेम सिंह रावत पुत्र स्व. बीरेन्द्र सिंह निवासी ग्राम विशनपुर, पट्टी सनेह, तहसील कोटद्वार, जिला पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

उत्तर रेलवे

शुद्धि पत्र

विषय: निविदा संख्या 38-DRM-MB-23-24 दिनांक 28.04.2023 निविदा संख्या 38-DRM-MB-23-24 दिनांक 29.04.2023 कार्य का नाम: "Dismantling of existing & fabrication, erection & launching of new girders of kapuce company and to end FOB in MB under ADEN/MB". में शुद्धि पत्र जारी कर दिया गया है। जिसका विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in. पर देखा जा सकता है। अब इस निविदा की विज्ञापित लागत 7,10,76,050.16 रुपए निर्धारित की गयी है। निविदा संख्या 38-DRM-MB-23-24 दिनांक 04.05.2023 1380/2023

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

चोरी करने वाले गिरोह के आठ लोग गिरफ्तार

नई टिहरी : चारधाम यात्रा के दौरान उठाईगिरी कर यात्रियों को चूना लगाने वाले आठ लोगों को मुनिकीरेती पुलिस ने पकड़ा है। इनके पास से चाकू, ब्लेड सहित चुराई गई 14500 की नकदी भी बरामद की गई है। इनमें से कुछ लोग पहले भी चोरी की घटनाओं को अंजाम दे चुके हैं। चारधाम यात्रा के दौरान यात्रियों की नकदी व सामान कई स्थानों से चोरी होने की सूचनाओं को मद्देनजर टप्पेबाजों को पकड़ने के लिए एसएसपी नवनीत सिंह भुल्लर के निर्देशन में मुनिकीरेती पुलिस ने पुलिस टीम का गठन कर मुनिकीरेती क्षेत्र के घाटों गहन खोज-बीन, सादी वर्दी में संदिग्ध लोगों से पूछताछ, 150 सीसीटीवी कैमरों के फूटेज की जांच और 500 मोबाईल फोनों की सर्विलांस के बाद घाट मुनिकीरेती पर चोरी की योजना बनाते हुए आठ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। जिनके कब्जे नाजायज चाकू व घटनाओं में प्रयोग वाले उपकरण बरामद किये गये। गहन पूछताछ पर बताया गया इन्होंने बताया कि यह लोग गोण्डा के निवासी है। हम लोग यात्रा सीजन व त्यौहारों के अवसर पर तीर्थ स्थलों पर आते हैं। घाटों पर घूमकर मौका देखकर स्नान कर रहे यात्रियों के कपड़े, बैग व नकदी चोरी कर ले जाते है। यूपी के गोंडा निवासी मनोज कुमार, बाबूराम, राधेश्याम, अमृत लाल, रविंद्र कुमार, अमरजीत, अशोक कुमार व सरोज कुमार को पुलिस ने पकड़ा है।

माधवाश्रम अस्पताल में मरीजों को हाईजीनिक किट और जूस बांटा

रूद्रप्रयाग : अंतराष्ट्रीय रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर जिला रेडक्रॉस समिति रुद्रप्रयाग के सदस्यों द्वारा कोटेश्वर स्थित माधवाश्रम चिकित्सालय में भर्ती मरीजों का हालचाल जाना तथा उन्हें हाईजीनिक किट वितरित किए गए।इस अवसर पर रेडक्रॉस सोसायटी के चेयरमेन दीपराज बंगारी ने कहा कि जनपद रेडक्रॉस सोसायटी जिलाधिकारी/अध्यक्ष रेडक्रॉस सोसायटी मयूर दीक्षित के निर्देशन में जनपद में विभिन्न तरह से गतिविधियां संचालित की जा रही हैं, जिसमें गरीब व्यक्तियों एवं निराश्रित को कंबल एवं खाद्य सामग्री वितरित की गई। इसके साथ ही जनपद में किसी तरह की दैवीय आपदा से प्रभावितों की मदद की जा रही है। इसके साथ ही किसी भी प्रकार की आपदा में राहत एवं बचाव कार्य हेतु रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा अपना संपूर्ण योगदान दिया जाता है।

उन्होंने कहा कि माधवाश्रम चिकित्सालय में 20 भर्ती मरीजों को हाईजीनिक किट एवं जूस वितरित किया गया। इस अवसर पर राज्य प्रतिनिधि मुंशी चैमवाल, देवेंद्र खत्री, जसपाल भारती, मनोज रावत, डॉ. ए. हटवाल, डॉ. मनोज बडोनी, कामिनी, ज्योति खन्ना सहित भर्ती मरीज एवं उनके तीमारदार मौजूद रहे।

उत्तराखण्ड पॉवर कॉरपोरेशन लि.

(उत्तराखण्ड सरकार का उपक्रम)

कारपोरेट आईडेन्टीटी संख्या : U40109UP2001SGC025887/2358

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड, कोटद्वार

ई-निविदा सूचना

विद्युत वितरण खण्ड, कोटद्वार के अन्तर्गत निम्न वर्णित कार्यों के निष्पादन हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। जिसमें उत्तराखण्ड सरकार द्वारा प्रदत्त विद्युत ठेकेदारी 'ए' श्रेणी लाईसेन्स प्राप्त (जी.एस.टी., ई.पी.एफ. व ई.एस.आई. में पंजीकृत) हो तथा पंजीकृत ठेकेदारों से मुहरबन्द निविदाएं दो भागों में जिसमें प्रथम भाग में वांछित जी.एस.टी., ई.पी.एफ., ई.एस.आई., धरोहर धनराशि किसी भी बैंक / डाकघर की एफडीआर / सीडीआर / राष्ट्रीय बचत पत्र के रूप में अधोहस्ताक्षरकर्ता के पक्ष में बंधक होनी चाहिए एवं अन्य शर्तें जो निविदा से सम्बन्धित हो तथा द्वितीय भाग में दरें जो कि निविदा खुलने की तिथि से कम से कम 06 माह के लिए वैध हो आमन्त्रित की जाती है बिना प्रथम भाग के निविदा भाग दो नहीं खोली जायेगी। यदि निविदा खुलने के दिन किसी कारणवश कार्यालय बन्द रहता है तो अगले कार्य दिवस को निविदा खोली जायेगी। अधोहस्ताक्षरकर्ता को यह अधिकार है कि वह बिना कारण बताए समस्त अथवा किसी भी ई - निविदा को निरस्त कर सकते हैं। कार्य अन्य विवरण के लिये वेबसाइट www.uktenders.gov.in को देखें।

ई-निविदा संख्या	ई-निविदा प्रपत्र शुल्क राशि (जीएसटी सहित)	कार्य का विवरण	धरोहर धनराशि (रू.लाख में)	ई-निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु अन्तिम तिथि एवं समय	ई-निविदा प्रपत्र कार्यालय में जमा करने की अन्तिम तिथि एवं समय	ई-निविदा प्रपत्र ऑनलाइन एवं ऑफलाइन निविदा प्रथम भाग खुलने की तिथि एवं समय
01/EDDK/23-24	₹590/-	33केवी सबस्टेशन [illegible] से निकले फीडरों का अनुरक्षण एवं उपभोक्ता शिकायतों का निस्तारण आदि कार्य।	0.28	दिनांक 30.05.2023 16.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 11.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 15.00 बजे तक
02/EDDK/23-24	₹1180/-	33केवी सबस्टेशन कोटद्वार से निकले फीडरों का अनुरक्षण एवं उपभोक्ता शिकायतों का निस्तारण आदि कार्य।	0.34	दिनांक 30.05.2023 16.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 11.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 15.00 बजे तक
03/EDDK/23-24	₹1180/-	33केवी सबस्टेशन [illegible] से निकले फीडरों का अनुरक्षण एवं उपभोक्ता शिकायतों का निस्तारण आदि कार्य।	0.34	दिनांक 30.05.2023 16.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 11.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 15.00 बजे तक
04/EDDK/23-24	₹1180/-	33केवी सबस्टेशन [illegible] से निकले फीडरों का अनुरक्षण एवं उपभोक्ता शिकायतों का निस्तारण आदि कार्य।	0.34	दिनांक 30.05.2023 16.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 11.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 15.00 बजे तक
05/EDDK/23-24	₹1180/-	33केवी सबस्टेशन [illegible] से निकले फीडरों का अनुरक्षण एवं उपभोक्ता शिकायतों का निस्तारण आदि कार्य।	0.34	दिनांक 30.05.2023 16.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 11.00 बजे तक	दिनांक 31.05.2023 15.00 बजे तक

पत्रांक: 1318/विवितखको/टी-6 दिनांक: 08.05.2023 अधिशासी अभियन्ता

राष्ट्र हित में बिजली बचायें, बिजली बचाने हेतु एल.ई.डी. बल्ब का प्रयोग करें। (टोल फ्री नं. 1912) विद्युत बिलों के 24x7 ऑनलाइन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जाएं। (विद्युत चोरी की सूचना टोल फ्री नं. 1800 180 4185/ फैक्स संख्या-0135-2760911 पर दें।)

टिहरी बांध प्रभावित ग्रामीणों ने विस्थापन की मांग को दिया सांकेतिक धरना

नई टिहरी : टिहरी बांध प्रभावित ग्रामीणों ने विस्थापन की मांग को लेकर डीएम दफ्तर के बाहर सांकेतिक धरना दिया। ग्रामीणों ने डीएम को ज्ञापन सौंपकर उनकी समस्या का निराकरण करने की मांग की है। सोमवार को टिहरी बांध प्रभावित भटकंडा उठड़ और सिल्ला उप्पू के ग्रामीणों ने विस्थापन साथ परिसम्पतियों के भुगतान की मांग को लेकर बांध प्रभावित संघर्ष समिति के अध्यक्ष सोहन सिंह राणा के नेतृत्व में डीएम दफ्तर के बाहर सांकेतिक धरना दिया। बांध प्रभावित संघर्ष समिति अध्यक्ष ने कहा ग्रामीण लंबे समय विस्थापन की मांग करते आ रहे हैं, लेकिन टीएचडीसी और पुनर्वास विभाग ग्रामीणों को गुमराह करने में लगे हैं। उन्होंने कहा कि एक सप्ताह के भीतर ग्रामीणों की समस्या का समाधान नहीं होता है, ग्रामीणों को आंदोलन के लिये बाध्य होना पड़ेगा। भटकंडा के पूर्व ग्राम प्रधान प्रदीप भट्ट ने कहा कि बीते जनवरी माह में प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने टीएचडीसी और पुनर्वास अधिकारियों के साथ बैठक जल्द प्रभावित ग्रामीणों के विस्थापन की प्रक्रिया पूरी करने के अधिकारियों को निर्देश दिये थे, लेकिन तीन माह बीते जाने के बाद भी ग्रामीणों को भुगतान नहीं हो पाया है। कहा ग्रामीणों की ओर लगातार टीएचडीसी और पुनर्वास विभाग को इस संबंध में लिखित और मौखिक रुप से अवगत करवाया जा रहा है, लेकिन प्रभावित की मांगों पर सुनवाई नहीं हो पा रही है।

उद्यमियों की हर संभव सहायता की जाएगी : सीडीओ

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : मुख्य विकास अधिकारी डा. ललित नारायण मिश्र की अध्यक्षता में सोमवार को विकास भवन सभागार में जिला स्तरीय उद्योग मित्र समिति की बैठक हुई। सीडीओ ने उद्योगों के अवस्थापना विकास और उद्योग संचालकों की विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए संबधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि जनपद में उद्यमियों को हर संभव सहायता दी जाएगी। उन्होंने जिला उद्योग केन्द्र के महाप्रबंधक को निर्देशित किया कि उद्यमियों को बडे औद्योगिक आस्थानों का एक्सपोसर विजिट कराया जाए। साथ ही उद्यमियों को उत्पादों की अच्छी ब्रान्डिंग, पैकेजिंग एवं ई-मार्केटिंग का प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए। बैठक में प्रस्तावित एमएसएमई नीति 2023 के ड्रॉफ्ट पर हितधारकों से सुझाव लिए गए। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि ऐसे उद्यमी जिन्होंने अभी तक उद्यम स्थापित नहीं किए है उनको नोटिस जारी किया जाए। साथ ही उनको आवंटित भूखंड निरस्तीकरण की कार्रवाई करते हुए इच्छुक उद्यमियों को भूखंड आवंटित किए जाए। औद्योगिक आस्थान कालेश्वर में बरसाती पानी की समस्या पर उन्होंने एनएच, लोनिवि और उद्योग विभाग के अधिकारियों को संयुक्त निरीक्षण करते हुए समस्या का शीघ्र समाधान करने के निर्देश दिए। यूपीसीएल को आद्यौगिक आस्थान कालेश्वर एवं सिमली में अलग से फीडर की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा। बैठक में यूपीसीएल कर्णप्रयाग के अधिशासी अभियंता के उपस्थित न रहने पर उनका वेतन रोकने के निर्देश भी दिए गए। जिला उद्योग केन्द्र के महाप्रबन्धक ने बताया कि बैठक में बताया कि एमएसएमई नीति 2015 के अंतर्गत 51 लाख के ब्याज व विद्युत प्रतिपूर्ति दावों को स्वीकृत किया गया है।

कार्यालय :- नगर निगम कण्वनगरी, कोटद्वार (पौड़ी गढ़वाल)

पत्रांक :- 520/ नि0अनु0/सौन्द0डी0पी0आर0/2023-24 दिनांक - 08-05-2023

अल्पकालीन कोटेशन सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम कोटद्वार क्षेत्रान्तर्गत निम्नलिखित सौन्दर्यीकरण कार्यों की डी0पी0आर0 तैयार करवाने हेतु इच्छुक फर्म/कम्पनी से दिनांक 15.05.2023 को अपरान्ह 02.00 बजे तक दरें आमंत्रित किये जाते है। जो उसी दिन अपरान्ह 04.00 बजे कोटेशन समिति द्वारा खोली जायेगी। सशर्त कोटेशन स्वीकार नहीं की जायेगी।

कार्यो का विवरण निम्न प्रकार से है

क्र0सं0	कार्य का नाम
1	कौडिया चैक पोस्ट से सिद्धबली मन्दिर तक फुटपाथ निर्माण कार्य की डी0पी0आर0।
2	गोखले मार्ग, पटेल मार्ग सौन्दर्यीकरण की डी0पी0आर0।
3	ग्रास्टनगंज में स्थित पार्क सौन्दर्यीकरण की डी0पी0आर0।

सहायक नगर आयुक्त
नगर निगम कण्वनगरी कोटद्वार।

सम्पादकीय

धार्मिक स्थलों से शोरगुल बंद

सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के बाद देशभर में धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर निकालने का अभियान शुरू कर दिया गया है। उत्तराखंड में भी तमाम धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर उतारे जा रहे हैं, हालांकि इसे लेकर विरोध भी किया जा रहा है लेकिन लगता है इस बार लाउडस्पीकर के शोर से आम लोगों को राहत मिलने वाली है। लाउड स्पीकर को लेकर धर्मगुरुओं द्वारा अलग–अलग दलील भी दी जा रही है लेकिन नियम लागू किया गया है तो यह सब के लिए समान रूप से प्रभावी होना ही चाहिए। लाउडस्पीकर से धर्म का प्रचार करना एक सीमा तक तो ठीक है लेकिन जब यह शोर बनने लगे तो इस पर प्रतिबंध लगाना भी जरूरी है। सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के बाद राज्य सरकारों ने इस पर गंभीरता से कार्यवाही शुरू कर दी है जिसका असर भी दिखने लगा है। ध्वनि प्रदूषण को लेकर अलग–अलग नियम लागू किए गए हैं जिसके तहत दिन और रात के समय इसकी आवृत्ति में अंतर हो सकता है। औद्योगिक क्षेत्रों में दिन के समय 75 डेसिबल जबकि रात के लिए 70 डेसिबल की सीमा तय की गई है । व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए दिन के समय 65 डेसिबल और रात के लिए 55 डेसीबल की अनुमेय सीमा निर्धारित की गई है। इस बीच, अनुमेय सीमा आवासीय क्षेत्रों में 55 डेसिबल और रात में 45 डेसिबल है।शांत क्षेत्रों मेंदिन के समय 50 डेसिबल और रात के लिए 40 डेसिबल की अनुमेय सीमा निर्धारित की गई है। साइलेंस जोन एक ऐसा क्षेत्र है जो अस्पतालों, शैक्षणिक संस्थानों, अदालतों, धार्मिक स्थलों या प्राधिकरण द्वारा घोषित किसी भी अन्य क्षेत्र के आसपास 100 मीटर से कम नहीं होता है। ऐसा नहीं है कि लाउड स्पीकर की यह मुहिम अभी शुरू की गई है बल्कि इससे पहले भी इस दिशा में प्रयास किए गए थे लेकिन राजनैतिक तुष्टीकरण एवं धार्मिक उन्माद को देखते हुए राज्य सरकारें अधिक गंभीरता से कार्रवाई नहीं कर पाई। लाउडस्पीकर से होने वाली अजान को लेकर एक फिल्मी हस्ती भी विवादों में रह चुकी है जबकि जबरन लाउडस्पीकर उतारे जाने की कुछ घटनाओं के कारण सामाजिक व्यवस्थाएं भी प्रभावित हुई थी। धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकर को सूचनाएं प्रसारित करने के लिए तो प्रयोग किया जा सकता है लेकिन सुबह शाम धार्मिक कार्यक्रम चलाने की अनुमति कतई नहीं दी जा सकती। भविष्य में भी यह तय करना होगा कि धार्मिक स्थलों से लाउड स्पीकर आसपास के लोगों को परेशान ना करें और यह केवल एक निश्चित अवधि का अभियान बन कर ना रह जाए।

न्यायिक सक्रियता का नया दौर!

पिछले कुछ बरसों में सवीच्च अदालत की ओर से दिए गए बेहतरीन आदेशों की चर्चा करें तो उसमें एक अहम आदेश पिछले दिनों जस्टिस केएम जोसेफ की बेंच ने दिया। उन्होंने हेट स्पीच से जुड़े मामले में सुनवाई करते हुए देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को आदेश दिया कि हेट स्पीच के मामले में तत्काल एफआईआर दर्ज होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिकायत नहीं भी आती है तब भी राज्य स्वतः संज्ञान लेकर हेट स्पीच के खिलाफ एफआ–ईआर दर्ज कराएंगे और अगर ऐसा करने में देरी होती है तो इसे अदालत की अवमानना माना जाएगा। यह बेहद जरूरी और समय से दिया गया आदेश है।

अजीत द्विवेदी

आमतौर पर माना जाता है कि कार्यपालिका के कमजोर होने से सरकार और विधायिका दोनों के कामकाज में न्यायपालिका का दखल बढ़ता है। यह धारणा इसलिए बनी क्योंकि न्यायिक सक्रियता के बारे में पहली बार भारत में जब सुनने को मिला तो वह कमजोर और गठबंधन की सरकारों का दौर था। उसी दौर में जजों की नियुक्ति का कॉलेजियम सिस्टम भी बना था और सरकार के कामकाज में न्यायिक हस्तक्षेप भी बढ़ा था। यह दौर लंबा चला था। नब्बे के दशक से शुरू करके नई सदी के दूसरे दशक के लगभग मध्य था। उस समय तक जब सवीच्च अदालत की स्थिति सीबीआई को पिंजरे में बंद तोता कहने की थी। उसके बाद पिछले करीब नौ साल में, जबसे केंद्र में पूर्ण बहुमत की मजबूत सरकार सत्ता में है, सीबीआई और दूसरी केंद्रीय एजेंसियों ने सत्तारूढ़ दल के विरोधियों के खिलाफ बेहिसाब कार्रवाई की है लेकिन ऐसी कोई टिप्पणी सुनने को नहीं मिली। उलटे सीबीआई, ईडी आदि एजेंसियों की शिकायत लेकर विपक्षी पार्टियां सुप्रीम कोर्ट पहुंचीं तो उनकी याचिका खारिज कर दी गई। उससे पहले ईडी के अधिकारों को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी तो सुप्रीम कोर्ट ने उसके अधिकारों पर भी मुहर लगाई।

इसके बावजूद जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ के सुप्रीम कोर्ट का चीफ जस्टिस बनने के बाद न्यायिक सक्रियता के एक नए दौर की आहट सुनाई देती है। यह उम्मीद दिख रही है कि संविधान से उच्च न्यायपालिका के लिए जो भूमिका तय की गई वह उसका निर्वहन करने का प्रयास कर रही है। यह भी लग रहा है कि उसका काम सिर्फ सरकार के फैसलों पर मुहर लगाने का नहीं रह गया है। अदालत सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना स्टैंड तय कर रही है, जो लगभग हर बार सरकार के स्टैंड से अलग दिख रहा है। राजनीति से जुड़े मसलों पर भी सवीच्च न्यायपालिका का रुख सरकार के रुख के अनुकूल नहीं है। न्यायपालिका से जुड़े मसलों पर तो सवीच्च अदालत का रुख सरकार के साथ लगभग टकराव वाला रहा है। सरकार के तमाम दबाव के बावजूद सुप्रीम कोर्ट न्यायिक मामलों में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ाने की इजाजत नहीं दे रहा है। इसे संविधान के बुनियादी ढांचे से लेकर जजों की नियुक्ति के कॉलेजियम सिस्टम की बहस तक में देखा जा सकता है।

चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने बहुत साफ शब्दों में संविधान के बुनियादी ढांचे के सिद्धांत का बचाव किया। यह संयोग है कि पिछले ही दिनों केशवानंद भारती बनाम केरल सरकार के मामले में सुप्रीम कोर्ट के सात–छह के बहुमत से आए फैसले के 50 साल पूरे हुए हैं। यह फैसला न्यायिक इतिहास के उन बिरले फैसलों में है, जो पिछले 50 साल से इस देश की शक्तिशाली से शक्तिशाली सरकार को निरंकुश होने से रोकते हैं। इसका बचाव करते हुए चीफ जस्टिस चंद्रचूड़ ने कुछ दिन पहले कहा था कि बुनियादी ढांचे का सिद्धांत नॉर्थ स्टार यानी ध्रुवतारे की तरह है, जो हर मुश्किल घड़ी में रास्ता दिखाता है। इसी तरह पिछले दिनों केंद्रीय कानून मंत्री के स्तर से कई बार जजों की नियुक्ति की कॉलेजियम व्यवस्था को लेकर सवाल उठाया गया। उन्होंने इसे भारतीय संविधान के लिए एलियन यानी बिल्कुल अनजान कांसेप्ट करार दिया। वे चाहते थे कि कॉलेजियम में सरकार के प्रतिनिधि को भी जगह मिले। लेकिन चीफ जस्टिस ने बहुत स्पष्ट रूप से अपनी राय रखते हुए कहा कि वे मानते हैं कि कॉलेजियम सिस्टम परफेक्ट नहीं है लेकिन उपलब्ध विकल्पों में से सबसे बेहतर है।

पिछले कुछ महीनों के सुप्रीम कोर्ट के फैसलों और सुनवाइयों के दौरान जजों द्वारा की गई टिप्पणियों को बारीकी से देखें तो एक बदलाव बहुत साफ दिखाई देगा। मिसाल के तौर पर समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने के मुद्दे को ले सकते हैं। यह बड़ा सामाजिक मसला है और मानवाधिकार व इंसानी गरिमा से जुड़ा हुआ है। इस पर अभी सुनवाई पूरी नहीं हुई है लेकिन सॉलिसीटर जनरल की दलीलों से साफ है कि सरकार इसके पक्ष में नहीं है। वे बार बार कह रहे हैं कि इस मामले को संसद के ऊपर छोड़ा जाए क्योंकि कानून बनाने का अधिकार संसद को है। यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन ने खुल कर कहा है कि अदालत को इस पर विचार नहीं करना चाहिए और इसे संसद के ऊपर छोड़ना चाहिए। दूसरी ओर चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ की टिप्पणियों से ऐसा लग रहा है कि अदालत इस विषय पर लोकप्रिय धारणा या मान्यता से अप्रभावित रहते हुए समलैंगिक लोगों के अधिकार सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है। पता नहीं इस मामले में फैसला क्या आएगा लेकिन चीफ जस्टिस ने अपनी टिप्पणियों से यह दिखाया है कि वे एक संवेदनशील और इंसानी गरिमा को समझने वाले व्यक्ति हैं, जो इस सिद्धांत में विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा भी उसी तरह की जानी चाहिए, जैसे लाखों–करोड़ों लोगों के साझा अधिकार की रक्षा की जाती है। सोशल मीडिया में ट्रोल होने का जोखिम उठा कर चीफ जस्टिस ने इस मामले में टिप्पणियां की हैं।

पिछले कुछ बरसों में सवीच्च अदालत की ओर से दिए गए बेहतरीन आदेशों की चर्चा करें तो उसमें एक अहम आदेश पिछले दिनों जस्टिस केएम जोसेफ की बेंच ने दिया।

उन्होंने हेट स्पीच से जुड़े मामले में सुनवाई करते हुए देश के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को आदेश दिया कि हेट स्पीच के मामले में तत्काल एफआईआर दर्ज होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिकायत नहीं भी आती है तब भी राज्य स्वतः संज्ञान लेकर हेट स्पीच के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराएंगे और अगर ऐसा करने में देरी होती है तो इसे अदालत की अवमानना माना जाएगा। यह बेहद जरूरी और समय से दिया गया आदेश है। ध्यान रहे पिछले कुछ समय से मीडिया, सोशल मीडिया, सार्वजनिक कार्यक्रमों, राजनीतिक सभाओं आदि में नफरत फैलाने वाली बातें बहुत होने लगी हैं। राजनीतिक व सामाजिक ध्रुवीकरण के लिए हेट स्पीच का एक बेहद असरदार टूल के तौर पर इस्तेमाल होने लगा है। इससे सामाजिक ताना–बाना बिखर रहा है। जिनको राजनीतिक लाभ होना है वह तो हो रहा है लेकिन इससे सामाजिक सौहार्द बिगड़ रहा है और देश की एकता व अखंडता के लिए खतरा पैदा हो रहा है।

भारतीय कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष और भाजपा के सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ महिला पहलवानों की शिकायत पर एफआईआर दर्ज करने और पहलवानों को सुरक्षा देने का फैसला हो या उत्तर प्रदेश में अतीक और अशरफ अहमद के पुलिस हिरासत में मारे जाने के मामले में पुलिस के रवैए पर सवाल उठाने का मामला हो, मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य आयुक्तों की नियुक्ति के सिस्टम को बदल कर तीन सदस्यों के पैनल के जरिए नियुक्ति की व्यवस्था बनाने का फैसला हो या पश्चिम बंगाल में शिक्षक भर्ती घोटाले की सुनवाई कर रहे कोलकाता हाई कोर्ट के जज जस्टिस अभिजीत गंगोपाध्याय को इंटरव्यू देने की वजह से केस से हटाने का फैसला हो, लगातार सुप्रीम कोर्ट का रूख जनोन्मुखी रहा है और व्यवस्था का शिकार हो रहे लोगों के प्रति सहानुभूति वाला दिखा है। यह बहुत अच्छी बात है कि न्यायपालिका अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाती दिख रही है। सर्वशक्तिमान सरकार के सामने वह उम्मीद की एक किरण की तरह है।

चेहरे की खूबसूरती को प्रभावित करती हैं आइब्रो, इन घरेलू नुस्खों से बनाएं इन्हें काला और घना

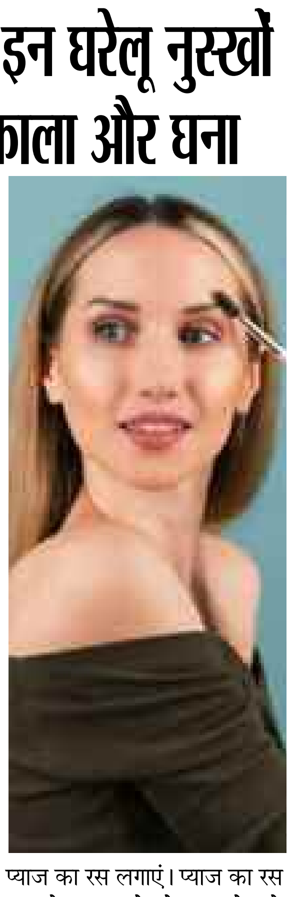

आपका चेहरा डल लगेगा या ब्राइट यह आपकी आंखों पर निर्भर करता है। खूबसूरत आंखे सुंदरता में चार चांद लगा देती हैं और आंखों की सुंदरता घनी काली आइब्रोज से कई गुणा बढ़ जाती है। सभी महिलाओं की आइब्रो की रंगत और डेंसिटी अलग–अलग होती है। आइब्रो अगर पतली हो तो इसका असर चेहरे की खूबसूरती पर पड़ता है। जिस तरह सिर पर काले घने बाल हमारी पर्सनैलिटी में निखार लाते हैं, उसी तरह घनी आइब्रो भी चेहरे और पर्सनैलिटी में निखार लाती हैं। इसलिए सभी महिलाएं अपने आइब्रो को लेकर काफी सचेत रहती हैं। आज इस कड़ी में हम आपको कुछ ऐसे घरेलू नुस्खों की जानकारी देने जा रहे हैं जिनके इस्तेमाल से आइब्रो को काला और घना बनाने में मदद मिलेगी। आइये जानते हैं इन उपायों के बारे में:

कैस्टर ऑयल कैस्टर ऑयल में पाया जाने वाला फैटी एसिड और विटामिन हेयर ग्रो को प्रमोट करने वाले होते हैं। इसे आइब्रो को घना करने के लिए यूज किया जा सकता है। रात में सोने से पहले कुछ बूंद कैस्टर ऑयल को रूई की मदद से आइब्रोज पर लगाएं। इसे रात भर लगा रहने दें।

नारियल का तेल ब्यूटी केयर में हमारा पसंदीदा होता है नारियल तेल। स्किन से लेकर हेयर तक और फेस से लेकर पैरों तक इसका उपयोग किया जा सकता है। इससे रोज दो बार आईब्रो की मसाज करने से ये जल्द ही मोटी और काली हो जाती हैं।

एलोवेरा एलोवेरा में मौजूद एंजाइम आइब्रो के बालों को मॉइश्चराइज करते हैं और इसकी रंगत को गहरा और इसे घना बनाते हैं। ऐसे में एलोवेरा जेल में ऑलिव ऑयल को मिलाकर नियमित रूप से सोने से पहले इसे अपनी आइब्रो पर अप्लाई करें और सुबह सामान्य पानी से त्वचा को साफ कर लें।

प्याज का रस आइब्रो को काला और मोटा बनाने के लिए प्याज का रस लगाएं। प्याज का रस आइब्रो प लगाने से आइब्रो को काला और घना किया जा सकता है। इसके लिए 1 प्याज से रस निकाल लें। अब इसे आइब्रो पर लगाकर कुछ समय के लिए छोड़ दें। बाद में चेहरे को धो लें। इससे आइब्रो को मोटा किया जा सकता है।

कच्चा दूध काली और चमकदार आईब्रो पाने के लिए आप कच्चे दूध का इस्तेमाल कर सकती हैं। ऐसे में कच्चे दूध को कॉटन की मदद से आई ब्रो पर अप्लाई करें। दिन में एक बार इसे लगाने से आपकी आई ब्रो ब्लैक और शाइनी बन जाएंगी।

अंडे की जर्दी एग योक प्रोटीन और बायोटिन का रिच सोर्स है। ये दोनों बालों की ग्रोथ में अहम भूमिका निभाते हैं। अगर आप ऐसा उपाय चाहती हैं जो रोज नहीं करना पड़े तो जर्दी वाला उपाय अपना सकती हैं। वीक में एक या दो बार अंडे की जर्दी को आइब्रोज पर लगाए और बीस मिनट लगा रहने दें।

गुड़हल का फूल

गुड़हल के फूल का इस्तेमाल आपके आइब्रो को डार्क और डेन्स बनाए रखने में मदद करेगा। अपने आइब्रो पर इस फूल से बने पेस्ट को अप्लाई करें।

गैस आधारित अर्थव्यवस्था के लिए युक्तिकरण और सुधार

हरदीप एस पुरी

अधिकांश भारतीय दीर्घकालिक एलएनजी अनुबंध, ब्रेंट से लगभग 13 प्रतिशत अधिक पर केन्द्रित रहे थे। एलएनजी अनुबंधों में द्रवीकरण, परिवहन और पुनर्गैसीकरण की लागतों को ध्यान में रखते हुए, घरेलू गैस, एपीएम कीमतों से 10 प्रतिशत अधिक रही। इन सुधारों के बाद, घरों के लिए खाना पकाने के ईंधन (पीएनजी) की औसत लागत लगभग 10 प्रतिशत कम हो गई है और सीएनजी कीमतों में 6–7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी है। एक और महत्वपूर्ण लाभ, उर्वरक सब्सिडी में कमी से संबंधित है, जिसके हर साल 2000 करोड़ रुपये से अधिक होने की उम्मीद है।
ये सुधार, नामांकन के परिपक्वक्षेत्रों के लिए न्यूनतम मूल्य प्रदान करके ई व पी क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करने में मदद करेंगे, साथ ही नामित क्षेत्रों के नए कूओं को भी प्रोत्साहित करेंगे, जो 20 प्रतिशत अधिक मूल्य प्राप्त करेंगे। ओएनजीसी और ओआईएल से उत्पादन पर निर्धारित अधिकतम सीमा पहले दो वर्षों के लिए समान रहेगी और फिर किसी भी लागत मुद्रास्फीति को समायोजित करने के लिए, इसमें हर साल 0 .25 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू की वृद्धि होगी। ये सुधार नई अन्वेषण लाइसेंसिंग नीति (एनईएलपी) क्षेत्रों या उच्च दबाव, उच्च तापमान (एचपी–एचटी) क्षेत्रों की निजी कंपनियों को प्रभावित नहीं करेंगे, जिनके पास अधिकतम कीमत या फरवरी 2019 के बाद प्रस्तुत क्षेत्र विकास योजनाओं से नया गैस उत्पादन मौजूद है। उनके लिए विपणन और मूल्य निर्धारण की स्वतंत्रता जारी रहेगी।

मोदी सरकार भारतीय उपभोक्ताओं को अंतरराष्ट्रीय तेल और गैस की कीमतों में उतार–चढ़ाव से बचाने के लिए कई उपाय कर रही है। जनवरी, 2021 से फरवरी, 2023 के बीच अंतरराष्ट्रीय गैस की कीमतों में 228 प्रतिशत की आश्चर्यजनक वृद्धि के बावजूद, भारत में सीएनजी की कीमतों में वृद्धि को 83 प्रतिशत तक सीमित रखा गया है, जो वैश्विक वृद्धि का केवल एक तिहाई है। राजनीतिक तौर पर विरोध कहने वाले, बढ़ती कीमतों की आलोचना करने की हड़बड़ी में, यह देखने में विफल रहते हैं कि अन्य प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में भारत ने अपने नागरिकों को अत्यधिक मूल्य अस्थिरता से बचाने के लिए कितने अच्छे कदम उठाये हैं।

घरेलू प्रशासित मूल्य व्यवस्था (एपीएम), गैस आवंटन को बढ़ाने और गैर–प्राथमिकता वाले क्षेत्रों से परिवहन और घरेलू क्षेत्रों में गैस की आपूर्ति करने जैसे सक्रिय उपायों के माध्यम से दूरदर्शी शासन–व्यवस्था ने इसे संभव बनाया है। हाल ही में, महत्वपूर्ण एपीएम गैस मूल्य निर्धारण सुधारों की एक श्रृंखला को मंजूरी देने से संबंधित कैबिनेट निर्णय इस उद्देश्य को और आगे बढ़ाएगा। इन सुधारों के द्वारा दो प्रमुख लक्ष्यों को हासिल किया गया है – पहला, अत्यधिक मूल्य अस्थिरता से भारतीयों की रक्षा करना और गैस आधारित क्षेत्रों में योजनाबद्ध पूंजीगत व्यय से जुड़े निवेश के लिए स्पष्ट रूपरेखा प्रदान करना और दूसरा, अन्वेषण और उत्पादन (ईएंडपी) में नवाचार और निवेश को और बढ़ावा देना।

नए घरेलू गैस मूल्य निर्धारण दिशानिर्देश, 2014 की सीमाओं के कारण युक्तिकरण और सुधार (आर एंड आर) की आवश्यकता सामने आयी, जो हाल तक, चार अंतरराष्ट्रीय केंद्रों पर गैस की मात्रा–भारित औसत कीमत के आधार पर एपीएम की कीमतों को निर्धारित करती थी। इन कीमतों का प्रभाव एक महत्वपूर्ण समय अंतराल (6–9 महीने) के बाद पड़ता था और इससे कीमतों में उच्च अस्थिरता मौजूद रहती थी, यहां तक कि पिछले कुछ वर्षों में दो उत्पादक देशों की गैस हब कीमतों ने अपनी प्रासंगिकता खो दी है।

उदाहरण के लिए, अक्टूबर 2020 और सितंबर 2021 के बीच एपीएम मूल्य 1.79 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू रहा, जो नामित क्षेत्रों के लिए 3.5 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू की उत्पादन लागत से बहुत कम है। इस अवधि के दौरान, पश्चिम भारत में एलएनजी की कीमतों का औसत लगभग 11 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू रहा था। संक्षेप में, घरेलू उत्पादन को एलएनजी की कीमतों के 20 प्रतिशत से भी कम मूल्य प्राप्त हुआ। हालांकि, रूस–यूक्रेन संकट के बाद अंतरराष्ट्रीय हब की कीमतों में 400 प्रतिशत की वृद्धि के कारण सितंबर 2021 में उक्त एपीएम की कीमतें सितंबर 2021 के 1.79 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू से बढ़कर अक्टूबर 2022 में 8.57 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू हो गईं, जिसका उर्वरक, बिजली और सिटी गैस वितरण (सीजीडी) क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

सरकार ने घरेलू गैस उपभोक्ताओं के साथ–साथ राष्ट्रीय तेल कंपनियों को इस तरह की अस्थिरता से बचाने का फैसला किया, एपीएम की कीमतों को मासिक आधार पर निर्धारित किए जाने वाले भारतीय क्रूड बास्केट मूल्य के 10 प्रतिशत पर रखने के साथ–साथ नामांकन क्षेत्रों के लिए 6.5 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू के अधिकतम सीमा और 4.5 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू की न्यूनतम सीमा तय की गयी। अधिकतम सीमा पिछले 20 वर्षों के भारतीय कच्चे तेल की कीमत (लगभग 65 डॉलर प्रति बीबीएल) के 10 प्रतिशत पर निर्धारित की गई है, जबकि न्यूनतम मूल्य का निर्धारण, नामांकन क्षेत्रों से गैस उत्पादन के लिए लगभग 3.5 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू के उत्पादन की सीमांत लागत पर विचार करता है।

अधिकांश भारतीय दीर्घकालिक एलएनजी अनुबंध, ब्रेंट से लगभग 13 प्रतिशत अधिक पर केन्द्रित रहे थे। एलएनजी अनुबंधों में द्रवीकरण, परिवहन और पुनर्गैसीकरण की लागतों को ध्यान में रखते हुए, घरेलू गैस, एपीएम कीमतों से 10 प्रतिशत अधिक रही।

इन सुधारों के बाद, घरों के लिए खाना पकाने के ईंधन (पीएनजी) की औसत लागत लगभग 10 प्रतिशत कम हो गई है और सीएनजी कीमतों में 6–7 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी है। एक और महत्वपूर्ण लाभ, उर्वरक सब्सिडी में कमी से संबंधित है, जिसके हर साल 2000 करोड़ रुपये से अधिक होने की उम्मीद है।

ये सुधार, नामांकन के परिपक्व क्षेत्रों के लिए न्यूनतम मूल्य प्रदान करके ई व पी क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करने में मदद करेंगे, साथ ही नामित क्षेत्रों के नए कूओं को भी प्रोत्साहित करेंगे, जो 20 प्रतिशत अधिक मूल्य प्राप्त करेंगे। ओएनजीसी और ओआईएल से उत्पादन पर निर्धारित अधिकतम सीमा पहले दो वर्षों के लिए समान रहेगी और फिर किसी भी लागत मुद्रास्फीति को समायोजित करने के लिए, इसमें हर साल 0.25 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू की वृद्धि होगी। ये सुधार नई अन्वेषण लाइसेंसिंग नीति (एनईएलपी) क्षेत्रों या उच्च दबाव, उच्च तापमान (एचपी–एचटी) क्षेत्रों की निजी कंपनियों को प्रभावित नहीं करेंगे, जिनके पास अधिकतम कीमत या फरवरी 2019 के बाद प्रस्तुत क्षेत्र विकास योजनाओं से नया गैस उत्पादन मौजूद है। उनके लिए विपणन और मूल्य निर्धारण की स्वतंत्रता जारी रहेगी।

कैबिनेट के फैसलों को बाजारों और विशेषज्ञों, दोनों तरफ से शानदार प्रतिक्रिया मिली है। हालाँकि, कुछ टिप्पणीकारों ने इस अखबार के एक ऑप–एड में इन सुधारों के बारे में चिंता जताई है। उनके लेख में कहा गया है कि घरेलू उपभोक्ताओं को यूएस–आधारित हेनरी हब की कीमतों में हाल में आयी कमी से लाभ होता, यदि रूसी गैस की कीमतों में सुधारों को लागू नहीं किया गया होता। लेख इस बात का उल्लेख करना भूल जाता है कि 2014 के नियम के तहत चार हब थे और एक हब की कीमतें, यानी ब्रिटिश–आधारित वर्चुअल ट्रेडिंग ज़ोन नेशनल बैलेंसिंग पॉइंट (एनबीपी) अभी भी 12 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू के आसपास है। इसके अलावा, वर्तमान कीमतों ने केवल अक्टूबर 2023–मार्च 2024 के अगले मूल्य चक्रमें एपीएम की कीमतों को प्रभावित किया होता। नियम में हाल में हुआ बदलाव यह सुनिश्चित करता है कि उपभोक्ताओं को लाभ, बिना किसी समय अंतराल के मिले, क्योंकि कीमत अब अर्धवार्षिक आधार के बजाय मासिक आधार पर निर्धारित की जाएगी।

उपरोक्त लेख में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि घरेलू गैस के लिए मौजूदा उच्च कूप की शीर्ष कीमतें, कतर एलएनजी के अलावा, भारत में एलएनजी निर्यात के लिए निरंतर उच्च कीमत सुनिश्चित करती हैं। घरेलू गैस की कीमतों का लंबी अवधि के एलएनजी अनुबंधों या यहां तक कि एलएनजी की तत्काल खरीद से कोई लेना–देना नहीं है। रुके हुए गैस आधारित बिजली संयंत्रों को लेकर भी चिंता जताई गई है। पिछले अर्धवार्षिक मूल्य 8.57 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू के दौरान, कुछ बिजली संयंत्रों ने अनुबंधित गैस लेना बंद कर दिया था, जिसके कारण गैस बिक्री और खरीद समझौते (जीएसपीए) के तहत लेने या भुगतान करने की बाध्यता से जुड़ी समस्याएं पैदा हो गई थीं। 6.5 डॉलर प्रति एमएमबीटीयू की नई सीमा के साथ, गैस बिजली संयंत्रों को अब राहत मिलेगी, जो आवश्यक भी है।

कठिन क्षेत्रों (डीपवाटर, अल्ट्रा डीपवाटर और एचपी–एचटी फील्ड) से गैस उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने मार्च 2016 में अधिसूचित किया था कि एचटीएचपी की अधिकतम कीमतों को आयातित वैकल्पिक ईंधन जैसे एलएनजी और आयातित ईंधन तेल के यहाँ तक पहुँचने के मूल्य के आधार पर निर्धारित किया जाना चाहिए। इस सरकार से पहले, इन क्षेत्रों से उत्पादन को व्यावहारिक नहीं माना जाता था। आज, कठिन क्षेत्रों से उत्पादन, कुल घरेलू गैस उत्पादन के लगभग 20 प्रतिशत तक पहुंच गया है और अगले कुछ वर्षों में इसके 30 प्रतिशत तक पहुंचने की उम्मीद है। इन क्षेत्रों से उत्पादन की प्रकृति, जटिलता और व्यावहारिकता को ध्यान में रखते हुए, उनके नियम में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

भारत तेल और गैस परिचालन के लिए तेजी से अवसंरचना का विस्तार कर रहा है तथा उपभोक्ताओं और उत्पादकों दोनों के हितों को संतुलित करने के लिए नीतिगत सुधारों को क्रियान्वित कर रहा है। भारत ने अपने गैस पाइपलाइन नेटवर्क की लंबाई 2014 के 14,700 किलोमीटर से बढ़ाकर 2023 में 22,000 किलोमीटर कर दी है। घरेलू कनेक्शन की संख्या 2014 के 22.28 लाख से बढ़कर 2023 में 1.03 करोड़ हो गई है। भारत में सीजीडी से कवर किये गए जिलों की संख्या 2014 के 66 से बढ़कर 2023 में 630 हो गयी है, जबकि सीएनजी स्टेशन 2014 के 938 से बढ़कर 2023 में 5,283 हो गए हैं। भारत की एलएनजी टर्मिनल पुनर्गैसीकरण क्षमता 2014 के 21.7 एमएमटीपीए से बढ़कर 2023 में 42.7 एमएमटीपीए हो गई है, जबकि 20 एमएमटीपीए क्षमता निर्माणाधीन है।

प्राकृतिक गैस की बढ़ती मांग के साथ, भारत अपने ऊर्जा–स्रोतों में व्यापक बदलाव के लक्ष्यों के हिस्से के रूप में गैस आधारित अर्थव्यवस्था को साकार करने के मार्ग पर है। भारत के लिए एक स्वच्छ, हरित और सतत ऊर्जा भविष्य का विजन तेजी से वास्तविकता बन रहा है।

लेखक भारत सरकार के केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस तथा आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री हैं।

पांच सौ साल से उपेक्षित थी अयोध्या : योगी

लखनऊ (एजेंसी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का नगर निकाय चुनाव में बाराबंकी, मिर्जापुर एवं अयोध्या में सभाएं कर भाजपा प्रत्याशी को जीतने की अपील की। साथ ही विरोधी दलों पर जोरदार हमला बोला। अयोध्या में मुख्यमंत्री द्वारा श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास के अध्यक्ष एवं छोटी छावनी के प्रमुख पूज्य नृत्यगोपाल दास की अध्यक्षता में प्रबुद्व सम्मेलन का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री ने संतों का स्वागत करते हुये कहा कि अयोध्या 500 वर्षो से उपेक्षित थी। हमारी सरकार बनने के बाद हमने दीपोत्सव 2017 में शुरू किया तथा छठवे दीपोत्सव में स्वयं प्रधानमंत्री ने स्वयं इसको गरिमा प्रदान की। अयोध्या की पहचान साधु महात्माओं, दीपोत्सव आदि से बनी है। भगवान राम का भव्य मंदिर बन रहा है जो सभी के आस्था का केन्द्र है। इस अवसर पर पूज्य संत नृत्यगोपाल दास उत्तराधिकारी कमल नयन रामजन्मभूमि न्यास के महासचिव चम्पत राय आदि ने भी अपने विचार रखे। सीएम ने अयोध्या के विकास में अपना सहयोग मांगा। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही भी मौजूद रहे।

बंगाल मवेशी घोटाला : ईडी के आरोपपत्र में फंड डायवर्जन में लॉटरी एंगल की बात

कोलकाता (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पिछले सप्ताह नई दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट में दायर अपने पूरक आरोप पत्र में पश्चिम बंगाल में करोड़ों रुपये के कथित पशु–तस्करी घोटाले में लॉटरी के पहलू का विस्तार से जिक्र किया है। सूत्रों के अनुसार, आरोपपत्र में बताया गया है कि कैसे तृणमूल कांग्रेस के कद्दावर नेता अनुब्रत मंडल बीरभूम जिले से बाहर स्थित एक विशेष लॉटरी एजेंसी के साथ मिलकर आम लोगों द्वारा जीते गए लॉटरी टिकटों को औने–पौने दामों में हड़प लेते थे और उनका इस्तेमाल घोटाले की आय से आने वाले बेहिसाब धन को बदलने में करते थे।

केंद्रीय एजेंसी ने पूरी प्रक्रिया में समन्वयक के रूप में बीरभूम जिले में बोलपुर नगर पालिका के एक पार्षद को नामित किया है। पिछले साल नवंबर में, पूरे घोटाले में लॉटरी एंगल पहली बार केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) द्वारा जांच के दौरान सामने आया, जो घोटाले में समानांतर जांच कर रहा है। अनुब्रत मंडल और सुकन्या मंडल के बैंक खातों की जांच करते समय सीबीआई ने पाया कि कई क्रेडिट लेनदेन को लॉटरी पुरस्कार राशि के रूप में दिखाया गया है।

मणिपुर में फंसे आंध्र के 157 छात्रों को किया जाएगा एयरलिफ्ट

अमरावती (एजेंसी)। हिंसा प्रभावित मणिपुर में फंसे आंध्र प्रदेश के कुल 157 छात्रों को सोमवार को एयरलिफ्ट किया जाएगा। आंध्र प्रदेश सरकार ने फंसे छात्रों के लिए दो अतिरिक्त उड़ानों की व्यवस्था करने के लिए केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्रालय के अधिकारियों के साथ समन्वय किया, जिनमें से एक हैदराबाद के लिए और दूसरी कोलकाता जाएगी। फ्लाइट नंबर 6 ई 3165 (ए320) 106 छात्रों को लेकर हैदराबाद में दोपहर 12:45 बजे उतरेगी। जबकि 55 छात्रों को दूसरी फ्लाइट 6ई 3152 (ए320) से कोलकाता लाया जाएगा।

अधिकारियों ने कहा कि कोलकाता पहुंचने वाले छात्रों को तीन अलग–अलग फ्लाइट से हैदराबाद लाया जाएगा। शाम 6 बजे 775 बजे तक कुल 27 छात्र दोपहर 01:10 बजे हैदराबाद पहुंचेंगे। 15 छात्रों का दूसरा बैच 6ई 874 (ए321) से दोपहर 03:55 बजे हैदराबाद पहुंचेगा।

जी 20 बैठक से पहले 'पुलवामा' जैसा हमला करने की फिराक में आतंकी

नई दिल्ली, एजेंसी। जम्मू–कश्मीर में 'जी20' की बैठक से पहले आतंकी संगठन, खतरनाक साजिश रच रहे हैं। पहले पुंछ हमला हुआ, जिसमें सेना के पांच जवान शहीद हो गए। इसके बाद राजौरी के कंडी जंगलों में बनी गुफाओं में छिपे आतंकियों के साथ हुई मुठभेड़ में भी सेना के पांच जवानों ने शहादत दी। पहले आईईडी ब्लास्ट और फिर जवानों पर अंधाधुंध फायरिंग की गई। कश्मीर घाटी में मौजूद सुरक्षा बलों के विश्वस्त सूत्र बताते हैं कि आतंकी संगठन 'जी20' की बैठक से पहले 'पुलवामा' हमले जैसा कुछ बड़ा कर सकते हैं। इस कड़ी में विस्फोटकों से भरी आतंकियों की गाड़ी अभी तक पहेली बनी है। कई बार उस गाड़ी की लोकेशन ट्रेस हुई है, मगर सुरक्षा बलों की वहां तक पहुंच नहीं हो सकी है। दूसरी तरफ पाकिस्तान के आतंकी संगठन 'जैश–ए–मोहम्मद' की जम्मू–कश्मीर में सक्रिय प्रॉक्सी विंग 'पीपुल्स एंटी–फासिस्ट फ्रंट'

(पीएएफएफ) यह दावा कर रही है कि सुरक्षा बल उनकी चाल में फंस कर नुकसान झेल रहे हैं। वे जैसा चाहते हैं, सुरक्षा बलों को उसी तरफ आने पर मजबूर कर देते हैं।

पीपुल्स एंटी फासिस्ट फ्रंट के प्रवक्ता तनवीर अहमद राथर के हवाले से हाल ही में कई प्रेस रिलीज जारी की गई हैं। इनमें कहा गया है कि आतंकियों ने सोची–समझी साजिश के तहत सैन्य जवानों पर हमला किया है। पुंछ हमला हो या राजौरी अटैक, दोनों ही हमलों में सुरक्षा बलों को चकमा दिया गया है। आतंकियों द्वारा राजौरी के जंगल में ट्रैप लगाया गया। पीएएफएफ का दावा है कि पुंछ और राजौरी हमले की तैयारी बहुत पहले से चल रही थी। इतना ही नहीं, आतंकी संगठन पीएएफएफ ने पुंछ हमले के दौरान सरकार की तरफ से कही गई कुछ बातों को गलत बताया है। प्रेस रिलीज में कहा गया कि पुंछ हमले के दौरान आसमानी बिजली नहीं गिरी थी। मौसम साफ था। हमले से जुड़े वीडियो जल्द ही जारी किए जाएंगे, आतंकी संगठन ने यह भी कहा है। दूसरी ओर, कई दिनों से सुरक्षा बलों ने आतंकियों की तलाश में सर्च ऑपरेशन शुरू किया है। दोनों ही हमलों को अंजाम देने वाले आतंकियों का अभी तक कोई सुराग नहीं लग सका है।

सुरक्षा एजेंसियों के सूत्रों का कहना है कि मई के चौथे सप्ताह में कश्मीर में प्रस्तावित जी20 की बैठकों से पहले आतंकी संगठन 'पुलवामा' जैसे बड़े हमले को अंजाम देने की फिराक में हैं। ऐसे कई इनपुट मिल रहे हैं कि कश्मीर में विस्फोटकों से भरी एक गाड़ी घूम रही है। उसकी लोकेशन ट्रेस करने के प्रयास हो रहे हैं। कई बार उस गाड़ी की लोकेशन ट्रेस भी हुई है, लेकिन अभी तक सुरक्षा बल वहां तक नहीं पहुंच सके हैं। इस हमले को अंजाम देने के लिए आतंकियों की जो टीम लगी है, उसमें विदेशी यानी पाकिस्तान मूल के आतंकी भी शामिल हैं। पिछले दिनों मिले इनपुट में ब्लास्ट का सामान एकत्रित करने की बात सामने आई थी। हर उस मार्ग पर रोड ओपनिंग पार्टी 'आरओपी' लगाई गई हैं, जहां से सुरक्षा बलों की गाड़ियां गुजरती हैं। सेना एवं दूसरे सुरक्षा बलों के कैंपों के आसपास गाड़ियों की चेकिंग की जा रही है।

एलन मस्क का वीडियो स्ट्रीम करने के लिए दक्षिण कोरियाई सरकार का यूट्यूब चैनल हैक

सोल, एजेंसी। दक्षिण कोरियाई सरकार के यूट्यूब चैनल को जाहिर तौर पर टेस्ला के सीईओ एलन मस्क सहित एक क्रिप्टोकरेंसी–संबंधित वीडियो प्रसारित करने के लिए हैक कर लिया गया था, लेकिन सूत्रों के अनुसार, इसे बहाल कर दिया गया है।

3.30 बजे, वीडियो–शेयरिंग प्लेटफॉर्म पर सरकार के आधिकारिक चैनल को हैक कर लिया गया था और इसका नाम बदलकर 'स्पेसएक्स इन्वेस्टइ कर दिया गया। क्रिप्टोकरेंसी पर एक लाइव प्रसारण दिखाया गया, जिसमें अमेरिकी अरबपति और स्पेसएक्स के संस्थापक मस्क के साथ एक साक्षात्कार शामिल था। यूट्यूब खाते का प्रबंधन करने वाले संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि वे सुबह 6 बजे स्थिति से अवगत हुए। इसके बाद सुरक्षा उपाय किए गए और सुबह 7:20 बजे खाता बहाल किया। अधिकारी ने कहा कि खाते की आईडी और पासवर्ड चोरी होने का संदेह है।

नकली नोट छापने वाले दो गिरफ्तार, यूट्यूब देखकर मिला आईडिया

नोएडा (एजेंसी)। ग्रेटर नोएडा में सूरजपुर पुलिस ने नकली नोट छापने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से लगभग छह हजार रूपये के नकली नोट और नकली नोट छापने का सामान बरामद किया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी गांजे की तस्करी से भी जुड़े थे। उनके कब्जे से 300 ग्राम गांजा, गांजा बेचकर प्राप्त किए गए 10,490 रुपये और चोरी की बाइक भी बरामद की है। आरोपियों को जेल भेज दिया गया है।

सूरजपुर कोतवाली पुलिस को बीट पुलिसिंग तथा लोकल इंटेलीजेंस से गोपनीय जानकारी मिली थी कि क्षेत्र में नकली नोट छापने तथा आपूर्ति करने का गोरखधंधा चल रहा है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए साहिल कुमार उर्फ सुन्दर उर्फ संजू (27) निवासी जौनपुर और शालू (19) निवासी कानपुर को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी वर्तमान में सूरजपुर कस्बे में ही रह रहे थे।

डीसीपी रामबदन सिंह ने बताया कि आरोपी साहिल कुमार उर्फ सुन्दर उर्फ संजू व शालू शातिर किस्म के अपराधी हैं। वे पहले भी जेल जा चुके है। दूसरे आरोपी शालू का भाई विजय तथा साहिल एक साथ जेल में बंद थे। जेल में ही विजय और साहिल की दोस्ती हो गयी और एक–दूसरे के घर आना–जाना हो गया। इस दौरान शालू की साहिल से मुलाकात हुई थी। शालू ने साहिल के साथ नकली नोट छापने और बाजार में चलाने की योजना बनाई। शालू भी शराब बनाने के आरोप में जेल जा चुका था।

शालू कानपुर से आकर अपनी माता और भाई के पास ग्राम देवला में तथा साहिल किराये का कमरा लेकर कस्बा सूरजपुर में रहने लगा। शालू और साहिल ने मिलकर अमेजॉन से 13,500 का कलर प्रिंटर, प्रिंटर में प्रयुक्त स्याही तथा नकली नोट छापने के लिए पेपर खरींदे। दोनों आरोपी मिलकर नकली नोट छापने लगे। पुलिस ने बताया कि आरोपी अधिकांशतः सौ–सौ रूपये के नोट छापते थे। इन नोटों को बाजार में सामान खरीदने में चलाते थे।

भारतीय–अमेरिकी पर आईएस की महिलाओं को पैसे भेजने का आरोप : रिपोर्ट

न्यूयॉर्क , एजेंसी। अमेरिका के वर्जीनिया प्रांत के एक 33 वर्षीय भारतीय–अमेरिकी पर इस्लामिक स्टेट (आईएस) की महिलाओं को विदेशों में वित्तीय सहायता प्रदान करने का आरोप लगाया गया है। एक मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है। वाशिंगटन पोस्ट ने पिछले सप्ताह एफबीआई फाइलिंग का हवाला देते हुए बताया कि मोहम्मद अजहरुद्दीन छीपा ने 2019 की शुरुआत में सीरिया में अल–होल शिविर में रह रही बहनों के लिए धन उगाहने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग शुरू किया था। उसने दावा किया कि पैसा शरणार्थी शिविरों के लिए था।

एफबीआई ने कहा कि अल–होल शरणार्थी शिविर को आईएस–ाआईएस विचारधारा का गढ़ माना जाता है। फाइलिंग में कहा गया है कि इस शिविर में कई महिलाओं की शादी इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों से हुई थी जो युद्ध के मैदान में मारे गए या पकड़े गए थे। अलेक्जेंड्रिया संघीय अदालत में 5 मई को प्रारंभिक उपस्थिति के बाद वर्तमान में जेल में बंद छीपा को दोषी ठहराए जाने पर 20 साल तक की जेल हो सकती है।

खबर में कहा गया है कि छीपा के घर 2019 में एफबीआई की तलाशी में चरमपंथी विचारधारा, जिहाद, आईएसआईएस और कई उपकरणों पर हिंसक प्रचार के बारे में हजारों वीडियो, चित्र, निबंध, किताबें, नोट्स और सर्च हिस्ट्री मिले। एफबीआई को विस्फोटक उपकरणों के निर्माण के निर्देश और आईएसआईएस कैदी का सिर काटते हुए दिखाई देने वाली छवियां भी मिली हैं।अपनी फाइलिंग में, खुफिया संगठन ने आरोप लगाया कि 2019 के अंत से 2022 तक, छीपा ने आभासी मुद्रा में 1,72,000 डॉलर खरीदे और दूसरों से डिजिटल फंड में 15,000 डॉलर भी एकत्र किए।

आनंद मोहन की रिहाई पर सुप्रीम कोर्ट ने नीतीश सरकार को जारी किया नोटिस, 2 हफ्तों में मांगा जवाब

पटना (एजेंसी)। आनंद मोहन की रिहाई के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने बिहार की नीतीश कुमार सरकार को नोटिस जारी किया है। साथ ही पूर्व सांसद आनंद मोहन को भी नोटिस दिया गया है। दिवंगत आईएएस जी. कृष्णैया की पत्नी उमा देवी की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने ये आदेश दिया। सुप्रीम कोर्ट के इस नोटिस के बाद अब आनंद मोहन और बिहार सरकार को 2 हफ्तों के अंदर जवाब देना होगा। दरअसल, आईएएस अफसर जी. कृष्णैया की हत्या के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे आनंद मोहन की रिहाई के फैसले का उमा देवी ने विरोध किया था। उन्होंने नीतीश कुमार सरकार के जेल मैनुअल में बदलाव किए जाने पर भी सवाल खड़े किए थे।

खान खोल रहा अतीक का काला चिट्ठा

दशकों की माफिया की पैरवी, शातिर इतना की नहीं होने दी कभी सजा, अब सरकारी गवाह

प्रयागराज, एजेंसी। बहुचर्चित उमेश पाल हत्याकांड में माफिया अतीक अहमद के वकील और करीबी खान सौलत हनीफ को कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। पुलिस पूछताछ में वह अतीक के अतीत के बारे में भी सारी जानकारी दे रहा है। उसने उमेश पाल की हत्या की वजह भी अब पुलिस को बता दी है। ऐसे में यह जानना रोचक होगा कि दशकों तक अतीक की वकालत कर उसे बचाने वाला खान सौलत हनीफ कौन है...

माफिया के करीबी खान सौलत हनीफ ने एक सनसनीखेज खुलासा करते हुए बताया कि अतीक ने उमेश की ओर से गालियां देने और उसकी पत्नी शाइस्ता पर कमेंट किए जाने से काफी गुस्सा था और इसी

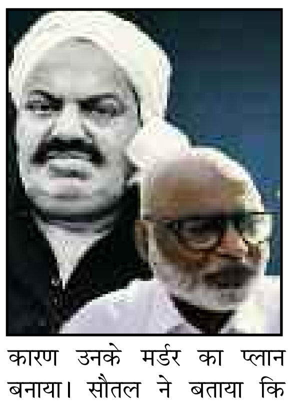

कारण उनके मर्डर का प्लान बनाया। सौतल ने बताया कि अतीक ने उमेश तक कई बार संदेश पहुंचवाया था कि वह गालियां व कमेंट करना बंद कर दे लेकिन वह नहीं माना और फिर उसने इस वारदात को अंजाम दिलवाया।

खान सौलत हनीफ इलाहाबाद हाईकोर्ट का वरिष्ठ अधिवक्ता रहा है। उसने दशकों तक अतीक अहमद के मामलों में वकालत की और उसे सजा से बचाए रखा। सत्र न्यायलय से लेकर हाईकोर्ट तक अतीक के सारे केस हनीफ और उसकी टीम ही लड़ती थी। हनीफ एक तेज तरार अधिवक्ता रहे इसी कारण अतीक पर दर्ज सैंकड़ों मामलों के बावजूद उस पर कोई भी आरोप तय नहीं हो पाए। हालांकि अतीक को प्रयागराज की एमपी–एमएलए कोर्ट ने उमेश पाल अपहरण केस में दोषी पाया था और उसे उम्रकैद की सजा सुनाई थी।

उमेश पाल अपहरण केस में अतीक के वकील खान सौलत हनीफ के खिलाफ पुख्ता सबूत थे कि उसे इस अपहरण की सारी जानकारी थी। इसी आधार पर प्रयागराज की विशेष एमपी–एमएलए कोर्ट के जज डॉ. दिनेश चंद्र शुक्ला ने खान सौलत हनीफ को भी अतीक अहमद और दिनेश पासी के साथ उम्र कैद की सजा सुनाई। इसके अलावा एक लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया था।

उत्तर प्रदेश बार काउंसिल ने खान सौलत हनीफ का रजिस्ट्रेशन रद्द करने का फैसला लिया है। बार अधिकारियों ने यह फैसला वकील को दोषी पाए जाने के बाद लिया गया है। वहीं दूसरी तरफ खान सौलत हनीफ सरकारी गवाह बन चुका है।

हालांकि उसने पुलिस के सामने शर्त रखी है कि इसके एवज में फिर आगे उसके खिलाफ कार्रवाई नहीं होना चाहिए।

चार माह के बच्चे के दिल में छेद एयर एंबुलेंस से पहुंचाया दिल्ली

इंदौर, एजेंसी। देश की सेवा के लिए तैनात सेथ्रक के लिए इंदौर के अस्पताल ने मद के हाथ आगे बढ़ाए हैं। सैनिक के पास बच्चे को दिल्ली लेकर जाने के लिए रुपये नहीं थे। ऐसे में प्रशासन ने मद करते हुए उसे लाज के लिए भेजा। चोइथराम अस्पताल में भर्ती बच्चे को रविवार को ग्रीन कॉरिडोर बनाकर एयरपोर्ट तक भेजा गया और उसके बाद वहां से एयर एंबुलेंस के माध्यम से दिल्ली भेजा। बच्चा सेना के रिसर्च एंड रेफरल अस्पताल में पहुंच गया है। महू में पदस्थ दिनेश जोगचंद्रा के चार माह पहले बच्चे गुंरीश के दिल में छेद है। इससे फेंफड़ों में संक्रमण हो रहा है। जन्म के बाद से ही अलग–अलग अस्पतालों में उसका इलाज चल रहा है। पिता की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी तो मदद के लिए कलेक्टर इलैया राजा टी और कई समाजसेवी संस्थाएं सामने आई। चोइथराम अस्पताल में एडीएम अभया बेड़ेकर सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे। वे पूरे समय एयर एंबुलेंस के संपर्क में रहे। यहां एंबुलेंस सहित अन्य सुविधाओं पर भी उनकी निगरानी रही। बच्चे की हालत गंभीर थी, इसलिए समन्वय के बाद ही ग्रीन कारिडोर बनाकर अस्पताल से एयरपोर्ट दस मिनट में ले गए। एंबुलेंस के साथ पुलिस वाहन भी चलता रहा। इलाज के लिए पैसे कम पड़े तो समाजसेवियों ने मदद के लिए हाथ बढ़ाया। गौरीश के इलाज में अभी तक लाखों रुपये खर्च हो चुके हैं। पिता ने बताया कि 25 अप्रैल को मेरे पास इलाज के लिए पैसे नहीं बचे थे। अस्पताल का बिल 2.52 लाख रुपये था, लेकिन मेरे पास 1.38 लाख रुपये ही थे। इसके बाद सीएम फंड से 90 हजार रुपए, अदभुत कम्युटी से 70 हजार, समाधान सोसायटी से 9.5 हजार और डॉ. भरुचि ने पांच हजार रुपये की मदद की। मन्नत के बाद हुआ गौरीश – पिता दिनेश बताते हैं कि गौरीश काफी मान–मन्नत के बाद हुआ है, लेकिन दिल में छेद के कारण सभ चिंतित हैं। साथ ही बताया कि मेरी दो बेटियां हैं, खुशी (आठ साल) और खुशबू (सात साल) दोनों घर में अपने भाई के आने की राह देखती रहती हैं। गौरीश की मदद के लिए डिवाइन फाउंडेशन, नवआरंभ जनसेवा संस्था, गोल्ड क्वाइन सेवा ट्रस्ट आदि ने भी मदद की। समाजवसेवी सिद्धार्थ शर्मा, नयन आनंद, अमित सिंघल, भूपेंद्र सिंह आदि पूरे समय मदद के लिए अस्पताल में मौजूद रहे।

गैंगेस्टर की चार करोड़ दो लाख 39 हजार की संपत्ति होगी कुर्क

लखनऊ (एजेंसी)। डीसीपी मध्य अपर्णा रजत कौशिक ने बताया कि शातिर अभियुक्त राम नरेश यादव पुत्र शिवकुमार निवासी ग्राम अनौरा थाना सरोजनीनगर द्वारा अपराध के माध्यम से अर्जित संपत्ति जिसका मूल्य चार करोड़ दो लाख 39 हजार को उत्तर प्रदेश गिरोह बंद एवं समाज विरोधी क्रिया कलाप निवारण अधिनियम की धारा के तहत कुर्क किये जाने का आदेश पारित किया

घरों में आग, छूटा राज्य... मणिपुर से 3,000 का पलायन

11 जिलों में कर्फ्यू में ढील, सेना ने निकाला फ्लैग मार्च

इम्फाल ,(एजेंसी)। मणिपुर के हिंसा प्रभावित इलाकों पर सेना ड्रोन और हेलिकॉप्टरों के जरिये कड़ी नजर रख रही है। पिछले हफ्ते हिंसा से सबसे ज्यादा प्रभावित चुराचांदपुर जिले में भी कर्फ्यू में ढील दी गई। ये जिला जातीय हिंसा का केंद्र बन गया था, जिसमें अब तक कम से कम 30 लोग मारे गए हैं और 500 से अधिक घर जल गए हैं। हिंसा प्रभावित इलाकों से अब तक 23,000 लोगों को बचाया जा चुका है। हालात को सामान्य बनाने के लिए सेना और असम राइफल्स के जवानों ने फ्लैग मार्च किया और आम जनजीवन कुछ हद तक सामान्य होने लगा है। लेकिन माहौल में तनाव साफ देखा जा रहा है।

सूत्रों के मुताबिक हिंसाग्रस्त राज्य में लगभग 10,000 सुरक्षाकर्मियों को तैनात किया गया है, जो 3 मई से उबाल पर है। राज्य सरकार ने घोषणा की है कि हालात में सुधार और सेना की ज्यादा तैनाती के साथ सोमवार को 11 जिलों में कुछ घंटों के लिए कर्फ्यू में ढील दी जाएगी। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने ट्विटर पर कहा कि 'चुराचंदपुर जिले में कानून–व्यवस्था की हालत में सुधार होने के साथ और राज्य सरकार और विभिन्न हितधारकों के बीच बातचीत के बाद, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि कर्फ्यू में धीरे–धीरे आंशिक रूप से छूट दी जाएगी।इ

वहीं मुख्यमंत्री कार्यालय से जारी एक बयान के मुताबिक इंफाल पूर्वी और इंफाल पश्चिमी जिलों में सुबह 5 बजे से सुबह 8 बजे तक, थौबल, कांगपोकपी और काकचिंग में दोपहर 1 बजे से दोपहर 3 बजे तक, जिरीबाम में सुबह 5 से 10 बजे तक, बिष्णुपुर में सुबह 8 बजे से सुबह 10 बजे तक कर्फ्यू में ढील दी जाएगी। फिरजावल में सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक, चंदेल में सुबह 6 बजे से 10 बजे तक और फिर दोपहर 1 बजे से दोपहर 3 बजे तक और चुराचांदपुर और टेंग्नौपाल में सुबह 7 से 10 बजे तक कर्फ्यू में ढील मिलेगी।

बयान में आगे कहा गया कि सरकार पूरे राज्य में अपने घरों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हिंसा से प्रभावित व्यक्तियों को सुरक्षित मार्ग की सुविधा भी दे रही है। हिंसा से प्रभावित लोगों और परिवारों को भोजन और रहने की जगह देने के लिए प्रभावित जिलों में राहत शिविर भी खोले गए हैं। रक्षा पीआरओ लेफ्टिनेंट कर्नल एम रावत ने कहा कि चुराचांदपुर में सुबह सात बजे से 10 बजे तक कर्फ्यू में ढील दी गई क्योंकि किसी बड़ी हिंसा की सूचना नहीं है। इसके तुरंत बाद सुरक्षा बलों ने फ्लैग मार्च किया। उन्होंने कहा कि 'सेना हवाई निगरानी, यूएवी और इंफाल घाटी के भीतर सेना के हेलिकॉप्टरों की फिर से तैनाती के जरिये निगरानी के प्रयासों को बढ़ा रही है। सेना और असम राइफल्स ने अब तक 23,000 से अधिक नागरिकों को बचाया है।इ

इस बीच मणिपुर से 2250 लोगों ने बीते तीन दिनों में असम में शरण ली है। अधिकारियों के मुताबिक 300 लोग तो ऐसे हैं, जिन्होंने मिजोरम में शरण ली है। असम के काछार जिले में 8 शेल्टर कैंप बनाए गए हैं। जिले के एक अधिकारी ने बताया, 'शुक्रवार रात से ही मणिपुर के लोगों ने असम की तरफ आना शुरू कर दिया था। रविवार शाम तक कुल 2252 लोग आए गए थे। इनमें ज्यादातर बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं हैं।इ बड़े पैमाने पर पीड़ितों के घर जला दिए गए और उनकी संपत्तियों को नुकसान पहुंचाया गया।इसके अलावा 300 लोगों ने मिजोरम में शरण ली है क्योंकि वहां उनके रिश्तेदार थे। यही नहीं सीमावर्ती कस्बे मोरेह में रहने वाले मैतेई समुदाय के 300 लोग म्यांमार की सीमा में चले गए और वहां शरण मांगी है। यह ऐसे समय में हुआ है, जब खुद मणिपुर के सीएम एन बीरेन सिंह ने म्यामांर से आए 500 शरणार्थियों को प्रदेश में रहने की मंजूरी दी है। मोरेह के एक शख्स ने बताया, 'मोरेह के करीब 300 मैतेई समुदाय के लोगों ने सीमा पार करके म्यांमार में एंट्री ली है। हम में से ज्यादातर लोगों ने असम में ही शरण ली है।इ उन्होंने कहा कि म्यांमार में 300 लोग सुरक्षित ठिकाने की तलाश में गए हैं, लेकिन वहां उनकी सिक्योरिटी को लेकर हमें चिंता हो रही है।

काछार जिले के डिप्टी कमिश्नर रोहन कुमार झा ने कहा कि यहां शरणार्थियों को पर्याप्त राशन और खाना दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में नागरिक भी मदद कर रहे हैं ।

साइक्लोन मोचा लाएगा तेज आंधी–पानी, हाई अलर्ट पर कई राज्य

कोलकाता (एजेंसी)। बंगाल की खाड़ी में चक्रवाती तूफान 'मोचाइ बन रहा है। इसको लेकर पश्चिम बंगाल में अलर्ट जारी कर दिया गया है। कोलकाता के सभी पुलिस स्टेशनों को जनरेटर की व्यवस्था करने का आदेश दे दिया गया है। यह निर्देश चक्रवात मोचा के लिए लालबाजार में शहर पुलिस मुख्यालय में स्थापित कमांड सेंटर द्वारा तैयार मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) का हिस्सा है। एसओपी ने आपदा प्रबंधन समूह (डीएमजी) को हाई अलर्ट पर रखा है। बंगाल में चक्रवाती तूफान के असर से 10 मई को कुछ जगहों पर 70–80 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चल सकती हैं। ओडिशा सरकार ने 18 तटीय और आसपास के जिलों को सतर्क कर दिया है।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, न्यू टाउन के अधिकारी चक्रवात की तैयारी में सड़कों से पेड़ों की शाखाओं को हटाने के लिए 100 से अधिक पंप, सैंडबैग (नहर के किनारों की ऊंचाई बढ़ाने के लिए) और उपकरणों से लैस टीमों को तैयार कर रहे हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि कलकत्ता पुलिस के सभी नौ डिवीजनों के उपायुक्तों को जर्जर इमारतों की पहचान करने और अतिरिक्त कर्मियों की व्यवस्था करने के लिए कहा गया है।

मीडिया की एक रिपोर्ट में मौसम विभाग के सूत्रों के हवाले से बताया गया है कि गुरुवार तक कोलकाता में बारिश की संभावना कम है। इसके अलावा कोलकाता में कंट्रोल रूम खोले गए हैं और चक्रवाती तूफान से जुड़े पहलुओं पर गहरी नजर रखी जा रही है।

दरअसल, आशंका जताई जा रही है बंगाल में चक्रवाती तूफान का लैंडफॉल हो सकता है। ऐसे में पहले से ही सतर्कता बरती जा रही है।बंगाल के दक्षिण हिस्सी में बुधवार तक बारिश की संभावना नहीं के बराबर है। हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि मोचा चक्रवात कहां टकराएगा। \

फील्डर है या सुपरमैन! हवा में छलांग लगाते हुए गुरबाज ने पकड़ा हैरतअंगेज कैच

नई दिल्ली, आईपीएल 2023 के 53वें मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स की भिड़ंत पंजाब किंग्स के साथ हो रही है। पंजाब ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का फैसला किया है।

हालांकि, टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही है और टीम ने 50 रन के स्कोर तक पहुंचते–पहुंचते तीन बड़े विकेट गंवा दिए हैं।

प्रभसिमरन सिंह ईडन गार्डन्स के मैदान पर बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके और महज 12 रन बनाकर चलते बने। प्रभसिमरन की पारी का अंत केकेआर के विकेटकीपर रहमानुल्लाह गुरबाज ने लाजवाब कैच लपकते हुआ किया, जिसका वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

गुरबाज बने सुपरमैन

प्रभसिमरन सिंह बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं दिखा सके और 8 गेंद का सामना करने के बाद महज 12 रन बनाकर चलते बने। हर्षित राणा के ओवर की आखिरी गेंद पर प्रभसिमरन ने बड़ा शॉट लगाने का प्रयास किया, लेकिन बॉल बल्ले का अंदरूनी किनारा लेकर विकेट के पीछे गई। केकेआर के कीपर गुरबाज ने पहले प्रयास में गेंद को पकड़ने की कोशिश की, पर बॉल उनके हाथ से छिटक गई। हालांकि, दूसरे प्रयास में गुरबाज ने हवा में छलांग लगाते हुए लाजवाब कैच लपका।

भानुका राजपक्षे का नहीं खुला खाता

कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ इस सीजन में खेले गए पहले मैच में बल्ले से जमकर तबाही मचाने वाले भानुका राजपक्षे इस मुकाबले में बल्ले से कुछ खास कमाल नहीं कर सके। राजपक्षे को हर्षित राणा ने बिना खाता खोले पवेलियन की राह दिखाई। वहीं, लियाम लिविंगस्टन भी 9 गेंद में 15 रन बनाकर वरुण चक्रवर्ती का शिकार बने।

रोहित ने शून्य पर आउट होने का रिकॉर्ड बनाया

चेन्नई ,। मुंबई इंडियन्स के कप्तान और सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में सबसे ज्यादा बार शून्य रन पर आउट होने का अनचाहा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया।

रोहित चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ मुकाबले के दौरान तीन गेंद पर शून्य रन बनाकर दीपक चाहर का शिकार हो गये। यह आईपीएल में रोहित का 16वां शून्य रन का स्कोर है, जिसके बाद उन्होंने सुनील नरेन, मनदीप सिंह और दिनेश कार्तिक (15) को पीछे छोड़ दिया।

चेपौक स्टेडियम पर खेले गये मुकाबले में रोहित ने ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर कैमरन ग्रीन को अपनी जगह ओपनिंग के लिये भेजा, हालांकि उनकी यह योजना असफल रही और ग्रीन दूसरे ही ओवर में चार गेंद पर छह रन बनाकर पवेलियन रवाना हुए।

गौरतलब है कि रोहित टी20 प्रारूप में सबसे ज्यादा शून्य रन बनाने वाले भारतीय भी हैं। इस सूची में उनके सबसे करीबी कार्तिक हैं।

पैसा वसूल मैच में राजस्थान से हैदराबाद चार विकेट से जीता

जयपुर। राजस्थान रायल्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच मैच में सवाई मानसिंह स्टेडियम पर वो सब कुछ हुआ जिसका लुत्फ उठाने के लिये खेल प्रेमी मैदान का रूख करते हैं। राजस्थान के जोस बटलर (95) और संजू सैमसन (66 नाबाद) की आतिशी पारी पर मैच के आखिरी दो ओवर भारी पड़े। राजस्थान ने पहले बल्लेबाजी करते हुये दो विकेट पर 214 का मजबूत स्कोर खड़ा किया था जिसके जवाब में हैदराबाद ने छह विकेट पर 217 रन बनाकर मैच को जीत लिया। उतार चढ़ाव भरे मैच में दर्शकों की सांसे अटकी रहीं।

यजुवेन्द्र चहल ने 18वें ओवर पर राहुल त्रिपाठी (47) और एडम मार्कम (6) का विकेट लेकर मैच को तकरीबन राजस्थान के पक्ष में मोड़ दिया था मगर कप्तान संजू सैमसन ने 19वां ओवर कुलदीप यादव को दिया जिस पर ग्लेन फिलिप्स (25) ने तीन छक्के और एक चौका जड़ कर हैदराबाद को मैच में वापस ला दिया हालांकि फिलिप्स इसी ओवर की पांचवीं गेद पर आउट भी हो गये। आखिरी ओवर में हैदराबाद को जीत के लिये 17 रन की दरकार थी। संदीप शर्मा की पहली दो गेंद पर मेहमान बल्लेबाजों को दो जीवनदान मिले जबकि आखिरी गेंद पर हैदराबाद को जीत के लिये पांच रन चाहिये थे मगर अब्दुल समद कैच आउट हो गये मगर यह नो बाल निकली। इसके बाद समद ने छक्का जड़ कर अपनी टीम को रोमांचक जीत

दिला दी।हैदराबाद के अनमोलप्रीति (33) के आउट होने के बाद अभिषेक शर्मा (55) और राहुल त्रिपाठी (47) की पारियों से मुकाबला बराबरी पर चल रहा था मगर यजुवेन्द्र चहल (29 रन पर चार विकेट) ने हेनरी क्लासेन (26) को आउट कर राजस्थान की संभावनाओ को बढा दिया था मगर उतार चढाव से भरे आखिरी दो ओवरों ने मैच को रोमांच के शिखर पर पहुंचा दिया।

इससे पहले राजस्थान के जोस बटलर और संजू सैमसन के बीच दूसरे विकेट के लिये 138 रनों की भागीदारी की मदद से राजस्थान रायल्स ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ दो विकेट पर 214 रन बनाये। यशस्वी जायसवाल (35) और बटलर ने शानदार शुरूआत की और पहले पांच ओवर में 54 रन जोड़ लिये मगर इस बीच यशस्वी तेज गेंदबाज मैक्रो जानसन की धीमी आफकटर गेंद पर गच्चा खा गये और शार्ट थर्ड मैन पर खड़े नटराजन को आसान सा कैच थमा कर पवेलियन लौट गये।

क्रीज पर आये नये बल्लेबाज संजू सैमसन ने बटलर के साथ पारी को आगे बढाया और रनो की रफ्तार कम नहीं होने दी। दोनो बल्लेबाजों ने हैदराबादी गेंदबाजों की जमकर धुनायी करते हुये मैदान के चारों ओर कई आकर्षक शाट लगाये।

आकाश, निशांत विश्व चैंपियनशिप के प्री—क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

ताशकंद ,। भारतीय मुक्केबाज आकाश सांगवान (67 किग्रा) और निशांत देव (71 किग्रा) ने आसान जीत के साथ आईबीए पुरुष विश्व मुक्केबाज़ी चैंपियनशिप 2023 के प्री–चर्टर फाइनल में जगह बना ली है।आकाश ने अंतिम–32 दौर के मैच में चीन के फू मिंगके को 5–0 से हराया। भारतीय मुक्केबाज शुरू से ही फू पर हावी रहे और उन्होंने इस दौरान अपने प्रतिद्वंद्वी पर जोरदार मुक्के बरसाए। आकाश ने सुरक्षित दूरी बनाए रखते हुए खेल जारी रखा और फू के मुक्कों से बचते हुए बढ़त बनाने में सफल रहे।

आखिरी राउंड में चीनी मुक्केबाज ने वापसी करने भरपूर प्रयास किया लेकिन आकाश ने पूरे संयम के साथ उनका सामना किया और एकतरफा अंदाज में जीत हासिल की। आकाश अब अंतिम–16 दौर के मुकाबले में मंगलवार को कजाकिस्तान के दुलत बेकबाउव से भिड़ेंगे।

दूसरी ओर, हलके मध्यमभार वर्ग के अंतिम–32 दौर के मुकाबले में निशांत देव ने दक्षिण कोरिया के ली संगमिन को 5–0 से पस्त किया। पिछले मैच में अजरबैजान के विश्व चैंपियनशिप मेडलिस्ट सरखान अलीयेव को हराने वाले निशांत ने आज अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। उन्होंने पहले राउंड में धैर्य के साथ अपने प्रतिद्वंद्वी की रणनीति का अंदाजा लगाया।

अंतिम दो राउंड में दोनों मुक्केबाजों ने एक दूसरे पर जोरदार मुक्के बरसाये लेकिन निशांत दोनों मुक्केबाजों में अधिक सटीक थे और उन्होंने 5–0 के अंतर से जीत हासिल की। प्री–चर्टर फाइनल मैच में निशांत का सामना फिलिस्तीन के फोकाहा निडाल से होगा।दीपक (51 किग्रा), मोहम्मद हुसामुद्दीन (57 किग्रा), सुमित (75 किग्रा) और नरेंद्र (92+ किग्रा) सहित चार भारतीय मुक्केबाज रविवार को रिंग में अपने–अपने मुकाबले देखने उतरेंगे।

दीपक का सामना अंतिम–32 चरण में टोक्यो ओलंपिक में कांस्य पदक जीत चुके साकेन बिबोसिनोव से होगा। हुसामुद्दीन प्री–चर्टर फाइनल मैच में रूस के सविन एडुआर्ड के खिलाफ लड़ेंगे। सुमित अपने अभियान की शुरुआत अंतिम–32 दौर के मुकाबले में रूस के पावेल सोसुलिन के खिलाफ खेलते हुए करेंगे जबकि नरेंद्र अंतिम–16 दौर के मैच में क्यूबा के अरजोला लोपेज के खिलाफ रिंग में उतरेंगे।

इस वैश्विक आयोजन में 107 देशों के 538 मुक्केबाजों की भागीदारी देखी जा रही है। इनमें कई ओलंपिक और विश्व चैंपियनशिप पदक विजेता शामिल हैं।

मुकेश कुमार आर्मी टेस्ट में तीन बार फेल, फर्स्ट क्लास डेब्यू में झटका सहवाग का विकेट

नई दिल्ली, बड़ी पुरानी कहावत है, 'मंजिल उन्हें ही मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।' यह लाइनें वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए बतौर स्टैंड बाय खिलाड़ी चुने गए मुकेश कुमार पर एकदम फिट बैठती हैं। बिहार की गलियों से निकलकर बंगाल के रास्ते होते हुए मुकेश ने टीम इंडिया तक का जो सफर तय किया है, वो यकीनन तारीफ के काबिल है।

मुकेश कुमार को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए रुतुराज गायकवाड़ और सूर्यकुमार यादव के साथ बतौर स्टैंड बाय खिलाड़ी के तौर पर टीम में रखा गया है। मुकेश को इससे पहले साल 2022 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेली गई वनडे सीरीज में भी भारतीय टीम में शामिल किया गया था। हालांकि, मुकेश को नीली जर्सी में मैदान पर उतरने का मौका नहीं मिल सका था।

आर्मी के टेस्ट में तीन बार फेल हुए मुकेश

बिहार के गोपालगंज से ताल्लुख रखने वाले मुकेश का बचपन गरीबी में बिता। मुकेश के पिता घर का खर्चा चलाने के लिए कोलकाता आकर ऑटो चलाने लगे। घर का खर्च पूरे नहीं होने के चलते पिता ने मुकेश को भी कोलकाता बुला लिया। हालांकि, मुकेश ने क्रिकेट खेलना जारी रखा और इस दौरान उन्होंने तीन बार आर्मी में भर्ती होने के लिए टेस्ट दिया। तीनों ही बार मुकेश सेना का टेस्ट पास नहीं कर सके और उनका सारा फोकस एकबार फिर क्रिकेट पर लौट आया।

'फर्स्ट क्लास क्रिकेट में सहवाग को किया आउट

मुकेश कुमार ने साल 2015 में बंगाल की ओर से फर्स्ट क्लास क्रिकेट में अपना डेब्यू किया। मुकेश डेब्यू गेम में ही छाप छोड़ने में सफल रहे और उन्होंने सहवाग के विकेट समेत कुल चार बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाई। हालांकि, मुकेश का नाम 2019–20 के रणजी सीजन में चमका, जहां उन्होंने 10 मैचों में 32 विकेट अपने नाम किए, जिसमें कर्नाटक के खिलाफ सेमीफाफाइनल में मुकेश ने छह विकेट झटके।

फिल्मी सफर

वरुण धवन के साथ मानाडु के रीमेक से बॉलीवुड में डेब्यू करेंगे रवि तेजा ?

बॉलीवुड में इन दिनों साउथ की फिल्मों के रीमेक का दौर चल रहा है। भोला, गुमराह, विक्रम वेधा, सेल्फी, शहजादा और दृश्यम 2 जैसी फिल्मों के बाद अब एक और रीमेक बनने वाली है। खबरों के मुताबिक, 2021 में आई तमिल फिल्म मानाडु के हिंदी रीमेक से रवि तेजा बॉलीवुड में डेब्यू करने जा रहे हैं। इस फिल्म को हिंदी और तेलुगू में रीमेक किया जा रहा है, जिसमें रवि के साथ वरुण धवन मुख्य भूमिका में नजर आएंगे।

बॉलीवुड में पिछले कुछ समय से बॉक्स ऑफिस पर रीमेक फिल्मों का हाल बेहाल नजर आ रहा है। अजय देवगन की दृश्यम 2 को छोड़ दिया जाए तो ज्यादातर फिल्में असफल ही साबित हुई हैं। 7 अप्रैल को रिलीज हुई आदित्य रॉय कपूर की गुमराह पहले ही दिन ढेर हो गई और भोला का प्रदर्शन ठीक–ठाक चल रहा है। अब मानाडु के रीमेक का प्रदर्शन इस बात पर निर्भर करेगा कि फिल्म अपनी मूल फिल्म से कितनी अलग होगी।

रवि और वरुण की इस फिल्म के बारे में अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। साथ ही निर्देशक, प्रोडक्शन कंपनियों और बाकी कलाकारों के बारे में भी कोई अपडेट नहीं मिला है। कहा जा रहा है कि फिल्म को बड़े पैमाने पर बनाने की योजना है और जल्द निर्माता इसकी घोषणा करेंगे। बता दें कि यह वरुण की तीसरी रीमेक फिल्म होगी। इससे पहले वह कुली नंबर 1 और जुड़वा 2 के रीमेक में नजर आ चुके हैं।

मानाडु एक तमिल साइंस फिक्शन एक्शन थ्रिलर फिल्म है, जिसका निर्देशन वेंकट प्रभु ने किया है। इसकी कहानी मुख्यमंत्री की जनसभा के दिन एक आदमी और एक पुलिस अधिकारी के टाइम लूप में फंस जाने पर आधारित है, जो कोशिश करने के बाद भी इससे बाहर नहीं निकल पाते और उन्हें बार–बार एक ही दिन को जीना पड़ता है। फिल्म में सिलम्बरासन, एसजे सूर्या और कल्याणी प्रियदर्शन मुख्य भूमिका में नजर आए हैं। यह फिल्म सोनी लिव पर उपलब्ध है।

वरुण हाल ही में भेड़िया में कृति सैनन के साथ नजर आए थे, लेकिन उनकी फिल्म असफल साबित हुई। पिछले साल अभिनेता कियारा आडवाणी के साथ जुग जुग जियो में दिखे थे, जो ठीक–ठाक कमाई करने में सफल रही थी। अब वह जाह्नवी कपूर के साथ बवाल में नजर आने वाले हैं, जो इसी साल अक्टूबर में रिलीज होगी। इसके अलावा रवि की रावणासुर इसी शुक्रवार को रिलीज हुई है, जिसे दर्शकों की ओर से बढ़िया रिस्पॉन्स मिल रहा है।

साउथ सिनेमा के बहुत से सितारों ने पिछले साल बॉलीवुड में डेब्यू किया है, जिनमें रश्मिका मंदाना, विजय देवरकोंडा और नागा चैतन्य शामिल हैं। अब पृथ्वीराज सुकुमारन बड़े मियां छोटे मियां और नयनतारा जवान में नजर आने वाली हैं।

अविका गोर तेलुगु वेब सीरीज के साथ करेंगी ओटीटी डेब्यू

टीवी सीरियल बालिका वधु से अपने करियर की शुरुआत करने वाली एक्ट्रेस अविका गोर क्षेत्रीय भाषा की वेब सीरीज से ओटीटी पर डेब्यू करने वाली हैं। यह तेलुगु वेब सीरीज बंगला वेब सीरीज इंदू का रीमेक होगा। अविका ने इसकी चुनौतियों के बारे में बात की।उन्होंने कहा, रीमेक में काम करना हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि लोग पहले ही अद्भुत काम देख चुके होते हैं और उसे पसंद कर चुके होते हैं।

इसलिए रीमेक में काम करना हमेशा ही मुश्किल और चुनौतीपूर्ण होता है। यह एक थ्रिलर है जिसमें कॉमेडी या रोमांस के मुकाबले ज्यादा परफॉर्मेंस की जरूरत होती है। यह काफी उत्साहजनक है क्योंकि मैंने इसके बंगाली वर्जन के दोनों सीजन देखे हैं। इंदू की भूमिका में तेलुगु और दूसरी भाषाओं में इसका हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हूं।

अविका ससुराल सिमर का, खतरों के खिलाड़ी 9, खतरा खतरा खतरा आदि में भी काम कर चुकी हैं। वह कृष्ण भट्ट की 1920: हॉर्स ऑफ द हार्ट में भी काम कर रही हैं जो जल्द आने वाली है।उन्होंने कहा, यह मेरी पहली वेब सीरीज है, इसलिए मैं उत्साहित हूं। यह रोचक है।

मैंने कोई वेब सीरीज नहीं की है। बड़े पैमाने पर इसे करने के लिए हॉटस्टार अच्छा माध्यम है। मेरे लिए इसके साथ आगे बढने के लिए यह प्लेटफॉर्म काफी बड़ा है। यही कारण है कि मैंने इसे चुना है।

सामंथा रुथ प्रभु की रोमांटिक कॉमेडी खुशी का सिंगल टीजर आउट

दक्षिण की सबसे महत्वाकांक्षी परियोजनाओं में से एक, शाकुंतलम बॉक्स ऑफिस पर असफल रही, लेकिन सामंथा रुथ प्रभु फिर से अपने दर्शकों को अपना बनाने आ रही हैं। वह वरुण धवन के साथ सिटाडेल के हिन्दी वर्जन को शूट कर रही हैं। इसमें वे प्रियंका चोपड़ा की भूमिका को दोहराती नजर आएंगी। वहीं वे दूसरी ओर अपनी तमिल फिल्म खुशी की शूटिंग फिर से शुरू करने जा रही हैं। इस फिल्म में वे विजय देवरकोंडा के साथ रोमांस करती दिखाई देंगी। 7 मई को फिल्म के पहले रोमांटिक सिंगल का एक टीजर जारी किया गया और यह किसी सपने से कम नहीं लग रहा है। यह फिल्म 1 सितंबर को सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने जा रही है। हालांकि इसमें अभी समय है लेकिन फिल्म निर्माताओं और अभिनेताओं ने फिल्म के पहले सिंगल का एक टीजर जारी किया है। छोटी सी झलक में ऐसा लग रहा था कि विजय पहाड़ी की चोटी से चिल्लाकर कह रहा है कि वह कितना प्यार करता है। जबकि सामंथा ने प्रार्थना करने के लिए बैठने के दौरान हिजाब और बुर्का पहन रखा था।

विजय ने इसकी झलक शेयर करते हुए लिखा, खुशी पहला गाना। पूरा गाना 9 मई को रिलीज होगा। 23 मार्च को, विजय देवरकोंडा और सामंथा ने अपने संबंधित सोशल मीडिया पेजों पर खुशी नामक अपनी आगामी रोमांटिक कॉमेडी की रिलीज की तारीख की घोषणा की।

खुशी शिव निर्वाण द्वारा लिखित और निर्देशित एक रोमांटिक कॉमेडी है। मैथ्री मूवी मेकर्स द्वारा निर्मित यह फिल्म एक रोमांटिक कॉमेडी है। कुछ हफ्ते पहले, सामंथा ने खुलासा किया कि वह जल्द ही फिल्म के सेट पर शामिल होंगी।

सुपर हीरो फिल्म हनुमान की प्रदर्शन तिथि में हुआ बदलाव, अब प्रदर्शन तिथि तय नहीं

सिने उद्योग इन दिनों फिल्मों की प्रदर्शन तिथियों में बदलाव से गुजर रहा है। शाहरुख खान की जवान की प्रदर्शन तिथि में बदलाव से शुरू हुआ यह सिलसिला थम नहीं रहा है। हाल ही में समाचार आए थे कि अजय देवगन की आगामी 23 जून को प्रदर्शित होने वाली फिल्म मैदान की प्रदर्शन तिथि में एक बार फिर से बदलाव किया गया है। अब यह फिल्म 7 सितम्बर को जन्माष्टमी के मौके पर प्रदर्शित होगी। और अब दक्षिण भारत की सुपर हीरो फिल्म हनुमान, जिसने अपने टीजर से तहलका मचा दिया था, की प्रदर्शन तिथि में बदलाव किया गया है। पहले यह फिल्म 12 मई को प्रदर्शित होने वाली थी, लेकिन अब यह कब प्रदर्शित होगी इसकी घोषणा निर्माताओं ने अभी नहीं की है। साउथ फिल्म स्टार तेज सज्जा स्टारर निर्देशक प्रशांत वर्मा की अपकमिंग फिल्म हनुमान को लेकर इन दिनों खासा बज है। इस फिल्म का कुछ वक्त पहले ही एक जबरदस्त टीजर जारी हुआ था। इस फिल्म के टीजर ने रिलीज होते ही खलबली मचा दी। इसके बाद फिल्ममेकर्स ने हनुमान चालीसा रिलीज की थी। जिसने दर्शकों से वाहवाही लूट ली थी। हनुमान चालीसा ने रिलीज होने के चंद ही दिनों में 7 मिलियन व्यूज यूट्यूब पर अकेले हिंदी भाषा में ही हासिल कर लिए थे। तभी से इस फिल्म की रिलीज का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। पहले ये फिल्म 12 मई 2023 को रिलीज होने वाली थी। लेकिन अब मेकर्स ने एक बड़ा ऐलान करते हुए जानकारी दी है कि ये फिल्म अपने तय वक्त पर सिनेमाघर नहीं पहुंच पाएगी।

जयन्त

संस्थापक

स्व.नरेन्द्र उनियाल

प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी

नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित

—सम्पादक

नागेन्द्र उनियाल

आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383

मो. 8445596074, 9412081969

e-mail: nagendra.uniyal@gmail.com